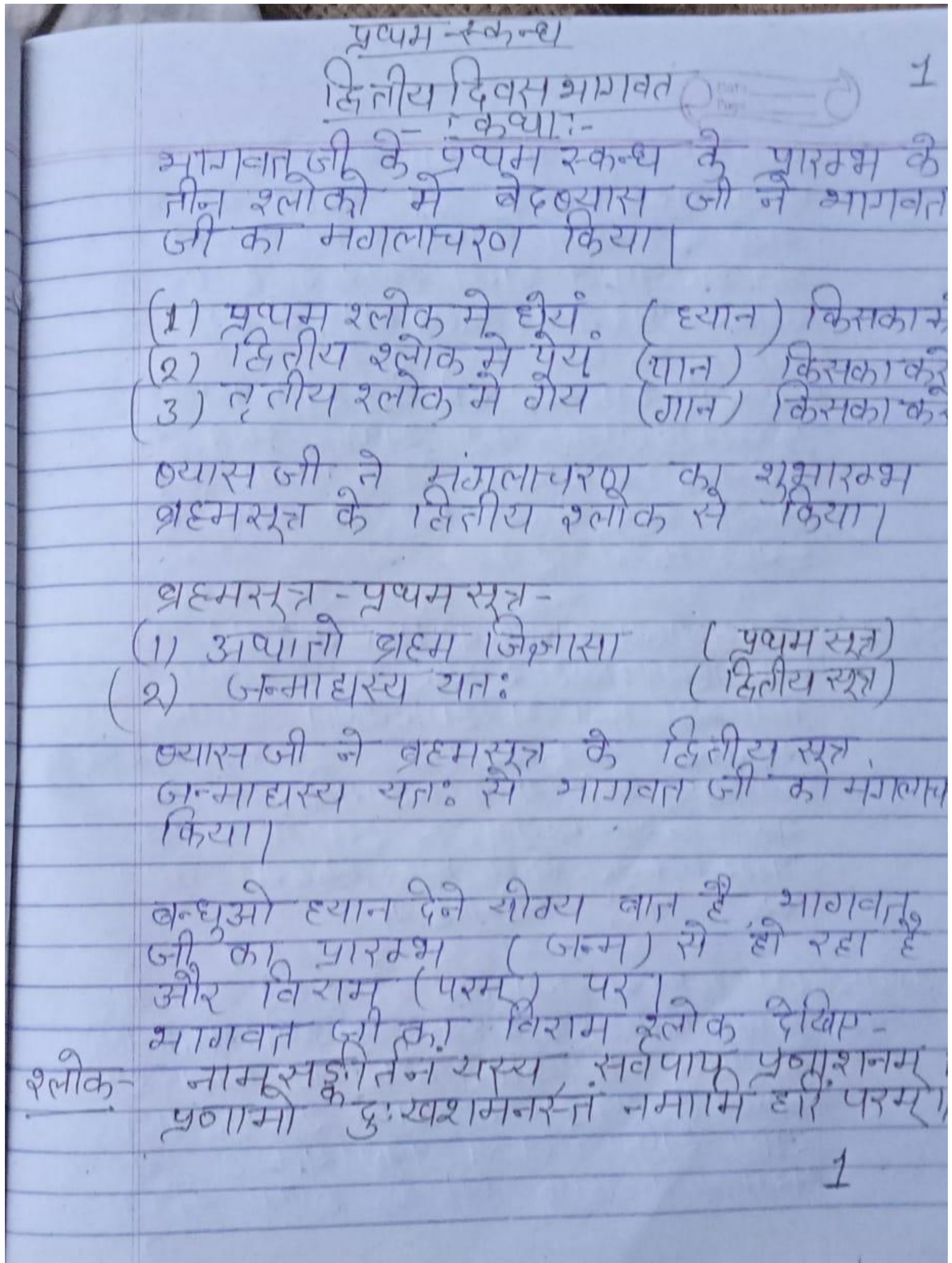
श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



प्रथम स्कन्ध

द्वितीय दिवस भागवत कथा:-

भागवत जी के प्रथम स्कन्ध के प्रारम्भ के तीन श्लोको मे वेदव्यास जी ने भागवत जी का मंगलाचरण किया।

(1) प्रथम श्लोक मे ध्येयं (ध्यान) किसका
(2) द्वितीय श्लोक मे पेयं (पान) किसका क
(3) तृतीय श्लोक मे गेयं (गान) किसका क

व्यास जी ने मंगलाचरण का शुभारम्भ ब्रह्मसूत्र के द्वितीय श्लोक से किया।

ब्रह्मसूत्र - प्रथम सूत्र-
(1) अथातो ब्रह्म जिज्ञासा (प्रथम सूत्र)
(2) जन्माद्यस्य यतः (द्वितीय सूत्र)

व्यास जी ने ब्रह्मसूत्र के द्वितीय सूत्र, जन्माद्यस्य यतः से भागवत जी का मंगलाच किया।

बन्धुओ ध्यान देने योग्य बात है भागवत जी का प्रारम्भ (जन्म) से हो रहा है और विराम (परम) पर।
भागवत जी का विराम श्लोक देखिए-

श्लोक- नामसङ्कीर्तनं यस्य सर्वपाप प्रणाशनम्।
प्रणामो दुःखशमनस्तं नमामि हरिं परम्।

1

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ

2

जन्म से कथा का शुभारम्भ और विराम परम पूर हो रहा है। कहने का भाव यही है बन्धुओ जो जीव भागवत कथा का श्रवणपान जन्म से करते हैं उनका जीवन परम (कल्याण) हो जाता है।

बन्धुओ भागवत जी के मंगलाचरण के प्रथम श्लोक का अर्थ 108 से भी अधिक टीकाकारो ने किया है। आइए कुछ टीकाकारो के अर्थ हम भी श्रवण करते हैं।

श्लोक:- जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्
चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्
तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये
मुह्यन्ति यत्सूरयः।
तेजोवारि मृदां यथा विनिमयो
यत्र त्रिसर्गोऽमृषा
धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं
सत्यं परं धीमहि॥

अर्थ:- जो भगवान जन्म लेते ही अपने असली माता पिता को छोड़कर नकली माता पिता के पास चले गए। भगवान भिज्ञ (जानने वाले) हैं राक्षसो को आते ही पहचान गए। अपने तेज से प्रकाशित हैं। मईया यशोदा ने ठाकुर जी के हाथो मे माखन

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ

3

जड़ित कइले पूहना रखे है, जो कि अंधेरे मे भी प्रकाश करते है क्यो कि मईया को लगता है लाला कही अंधेरे मे बाहर चला जायेगा तो कइले मे लगी माणि के प्रकाश से घर वापस चला आयेगा किन्तु उस परमात्मा को क्या प्रकाश दिखाना जो सम्पूर्ण विश्व को प्रकाश देता है।
एक दिन ब्रह्मा जी ने ग्वाल बालो का हरण कर लिया भगवान ने ब्रह्मा जी को ज्ञान दिया इन्द्र को गिरराज पर्वत उठाकर मोहित किया पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश पाँचो तत्वो को भगवान ने पवित्र किया तीन जगह, वृन्दाबन, द्वारिका, हस्तिनापुर मे भगवान ने लीला की अपने धाम जाने से पहले हम सभी को भागवत का ज्ञान देकर चले गए।

Note - ब्यास जी ने मंगलाचरण के प्रथम श्लोक मे, राम, कृष्ण की बन्दना नही की उन्होने केवल सत्य की बन्दना की बन्धुओ सत्य कौन है परमात्मा और परम सत्य परमात्मा का नाम है वैसे तो नाम, लीला, धाम, रूप, चारो सत्य है किन्तु इन सभी मे परम सत्य भगवान का नाम है, बन्धुओ गोविन्द को भी जगत मे लीला करके वापिस जाना पड़ा, किन्तु उनका नाम आज भी है, ठीक इसी प्रकार मीरा, रसखान, तुलसीदास आज हमारे

3

4

मह्त्य नही है किन्तु उनका नाम आज भी हमारे मह्त्य है। श्री हरिदास प्रभु आजसे 500 वर्ष पूर्व निधिवन मे श्री बांकेबिहारी जी को प्रकट किए था। हरिदास जी का नाम आज भी हमारे मह्त्य है।

नाम की महिमा- एक बार एक भक्त भगवान की कथा श्रवण कर रहा था। कथा श्रवण करते-2 उनके मिलन की याद मे रोने लगा। भगवान प्रकट होकर बोले तू रो रहा था मै तुझसे मिलने आ गया। चल मेरे साथ तुझे बैकुण्ठ लेकर चलता हू। भक्त बोला अभी नही कथा पूर्ण हो जाने दीजिए फिर चलूगा। भगवान बोले ऐसा क्यो, वह भक्त बोला प्रभु आपके मिलन से ज्यादा आपके नाम श्रवण मे आनन्द है। इसलिए भईया भगवान से भी ज्यादा भगवान का नाम परम सत्य है। इसलिए ब्यास जी ने परम सत्य गोविंद की बन्दना की।

:: भजन ::

कृष्ण कहने से तर जायेगा।
पार भव से उतर जायेगा।
(1) कितनी मुश्किल से नरतन मिला-2
क्या पता फिर किधर जायेगा-2
कृष्ण कहने — — — —

5

(2) होगी घर-2 मे चर्चा तेरी-2
जिस गली से गुजर जायेगा-2
कृष्णा कहने से - - —

बन्धुओ हम सभी को एक भय है मृत्यु का जो कि परम सत्य है। एक दिन मृत्यु के तट पर हम सभी को पहुँचना है बन्धुओ. हम सभी जब उत्तर प्रदेश से मध्यप्रदेश की यात्रा करते है तो Google Map का सहारा लेते है ताकि हम कम समय मे उत्तर प्रदेश से मध्यप्रदेश पहुँच जाए। ठीक इसी भाँति भागवत महापुराण भी हमारे जीवन मे गूगलमैप की भाँति है जो कम समय मे हमे मृत्युतट पर पहुँचाकर हमारे अन्दर निहित मृत्यु के भय को नष्ट करके हमारे मृत्यु को भी सुन्दर बना देती है।

प्रथम स्कन्ध

-! प्रथम अध्याय !-

6

आइए अब भागवत जी के द्वितीय श्लोक का गान करते है, और समझते है कि द्वितीय श्लोक मे ब्यास जी ने क्या बतलाया

(2) धर्मः प्रोज्झितकैतवोऽत्र परमो
निर्मत्सराणां सतां
वेद्यं वास्तवमत्र वस्तु शिवदं
तापत्रयोन्मूलनम् ॥ (2)

अर्थः- भागवत जी मन को सोक करती है इसके उपरान्त से आप का हृदय रूपी जो खेत है उसको स्वच्छ करके धर्म रुपी बीज बोती है। भागवत जी आपके हृदय मे धर्म रुपी बीज बोती है, किन्तु उस बीज को वृक्ष आपको बनाना है। सत्संग का जल डाल-2 कर अपने हृदय रुपी खेत मे धर्मरुपी वृक्ष को बड़ा करे। भागवत कथा की श्रवण करने के लिए भागवत को ग्रहण करने के लिए भागवत जी का योग्य पात्र बनना पड़ता है। मद, मत्सर से युक्त व्यक्ति भागवत कथा को श्रवण करने का अधिकारी नही है। गाय का दुग्ध किसी भी पात्र मे भर सकते है किन्तु सिंघनी का दुग्ध हर पात्र मे नही भर सकते सिंघनी के दुग्ध के लिए स्वर्ण का ही पात्र होना चाहिए। इसी प्रकार

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ

भागवत कथा को श्रवण करने का अधिकारी हर कोई नही हो सकता। जो व्याकुल निर्मल है वही भागवत कथा को श्रवण करने का अधिकारी है।
कथा भगवान से आपका कल्याणकारी सम्बन्ध बनाती है और सभी प्रकार के दुखो से उन्मूलन कर देती है।

श्लोक- श्रीमद्भागवते महामुनिकृते
किं वा परैरीश्वरः
सद्यो हृद्यवरुध्यतेऽत्र कृतिभिः (2)
शुश्रूषुभिस्तत्क्षणात् ॥

अर्थ- जब जीव श्रीमद् भागवत कथा को श्रवणपान करने का मन बना लेता है। उसी समय श्री राधारमण लाल उसके हृदय मे आकर प्रकट हो जाते है।

उदाहरण- एक गुप्ता जी अपनी पत्नी के साथ बाजार जा रहे थे। रास्ते मे कथा हो रही थी। गुप्ता जी की पत्नी ने गुप्ता जी से कहा- चलिए कुछ समय बैठकर कथा का श्रवणपान करले गुप्ता जी को भगवान मे ज्यादा आस्था नही थी उन्होने कथा सुनने के लिए मना कर दिया और पत्नी को लेकर घर आगए किन्तु चलते-2 ही गुप्ता जी के कानो मे कथा के 2 शब्द चले गए थे। उन दो शब्दो का घर आते-2 यह प्रभाव हुआ

8

कि राधारमण जी गुदड़ू जी के हृदय
मे प्रकट हो गए और गुदड़ू जी ने
स्वयं अपनी पत्नी से कहा चलो
कथा सुनने चलते हो अर्थात आप
यदि भगवान की कथा के विषय
मे चिन्तन भी करते है, तो राधारमण
जी आपके हृदय मे प्रकट हो जाते है।
बन्धुओ, हम सभी के मन मे एक प्रश्न
उठता है कि भागवत जी तो वेद रूपी
वृक्ष का पका हुआ फल है, तो यह
पका हुआ फल इस प्रथ्वी पर आया कैसे?
व्यास जी कहते -

श्लोक - निगमकल्पतरोर्गलितं फलं
शुकमुखादमृतद्रव संयुतम् ।
पिबत भागवतं रसमालयं
मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः ॥

अर्थ - बन्धुओ निगम रूपी वृक्ष है उसका पका
हुआ फल श्रीमद् भागवत महापुराण है

उदाहरण - बन्धुओ दो ही कल्पवृक्ष है हमारे यहा
कल्पवृक्ष का अर्थ - जिसके नीचे बैठकर
जो विचार किया जाए वही प्राप्त हो जाए
एक कल्पवृक्ष स्वर्ग मे है, दूसरा भागवत
जी किन्तु दोनो कल्पवृक्षो मे अन्तर है
कल्पवृक्ष जो स्वर्ग मे है वहा वह मिलता
है जो आप विचार करते है। किन्तु

8

9

भागवत रूपी कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर वह नही मिलता जो आप विचार करते है, यहां बैठकर वह मिलता है जो आपके लिए उचित होता है।

कैसा है स्वर्ग का कल्पवृक्ष -

उदा० एक व्यक्ति एकबार स्वर्ग के कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर विचार करने लगा कि हे प्रभु बहुत तेज क्षुदा लग रही है कुछ खाने को (अच्छा) पिज्जा, बर्गर, मिल जाता तो कितना आनन्द आता। जहां बैठकर वह विचार कर रहा वह तो कल्पवृक्ष था वहां बैठकर जो विचार करो वही मिलेगा। महाराज देवदूत वहां पिज्जा, बर्गर लेकर के उपस्थित हो गए। खाते-2 उसके मन मे विचार आया कि कहीं ज्यादा तो नहीं खा रहा हु, कहीं देवदूत आकर मेरी पिटाई न करदे। महाराज स्वर्ग का कल्पवृक्ष जो सोचो वही मिलेगा। दो देवदूत मुद्गर लेकर प्रकट हो गए और उस व्यक्ति की पिटाई कर दी तो भईया स्वर्ग के कल्प वृक्ष के नीचे बैठकर जो सोचोगे वही मिलता किन्तु भागवत रूपी कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर वह मिलता जो हमारे लिए उचित होता है।

भागवत हमारी माँ है -

उदाहरण - बन्धुओ एक बच्चे को ठण्ड लग गई उसने माँ से कहा माँ मुझे ~~[illegible]~~ कोल्ड ड्रिंक चाहिए

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ

माँ ने कहा नही बेटा मैं तुझे कोल्ड ड्रिंक नही दुगा। तुझे सर्दी लगी है मैं तुझे केसर वाला दूध दुगी, जिससे तेरी सर्दी भाग जायेगी।

बन्धुओ अब प्रश्न ये उठता है कि भागवत रुपी फल तो निगम (वेद) रुपी वृक्ष पर लटका है। भूमि पर कैसे आया? तो कहते है भईया कि शुकदेव रुपी (तोते) की चोन्च लगने से यह फल वृक्ष से टूटकर शिष्य, गुरु की शाखा से होता हुआ हम सभी के मध्य आया। सर्वप्रथम यह फल नारायण से ब्रह्मा को ब्रह्मा से नारद जी को, नारद जी से यह फल ब्यास जी को, ब्यास जी से यह फल शुकदेव जी को, शुकदेव जी से परीक्षित जी को, इस प्रकार शिष्य, प्रशिष्य की शाखा से होता हुआ हम सभी को प्राप्त हुआ। यह फल डायरेक्ट पृथ्वी पर नही आया। इसलिए, यह चटका नही है। तो भईयो यह फल खट्टा तो होगा। नही यह फल खट्टा भी नही है क्यो कि इस फल मे शुकदेव रुपी (तोते) का मुख लगा है। हमारे ब्रज मे कहावत है तोता बाई फल मे चोन्च मारे जो पहले से मीठा होये या तोता जिस फल मे चोन्च लगाये वो मीठा हो जाय। भईयो बात एकही है चाहे जैसे समझो-

11

तो भईया इस फल मे छिलका और गुठली तो होगी, नही इसफल मे छिलका और गुठली भी नही है। इसमे तो केवल अमृत भरा हुआ है, इसलिए इसके रस का पान करो।
अरे भईया इस रस का कब तक पान करे एकबार नागपुर मे किया, एकबार हरिद्वार एक बार संगम मे कथा तो बही है कितनी बार सुने-
बोले भईया जब तक आपकी कथा सुनकर मुक्ति न हो जाए तब तक कथा को श्रवण करते रहना चाहिए।
जो लोग कथा को सुनकर यह कह दे कि कथा बहुत सुन ली वह लोग कथा के रस को समझ नही सकते।

चौ० रामचरित जे सुनत अघाही।
रस विशेष जाना तिन्ह नाही॥

जिन हरि कथा सुनी नहि काना।
श्रवण रन्ध्र अहि भवन समाना॥

अर्थ- गोस्वामी जी कहते जो लोग कथा को श्रवण करके यह बोल देते कि कथा बहुत सुन ली, वह लोग कथा के रस को जान नही पाते।
जो लोग अपने कानो से भगवान की कथा

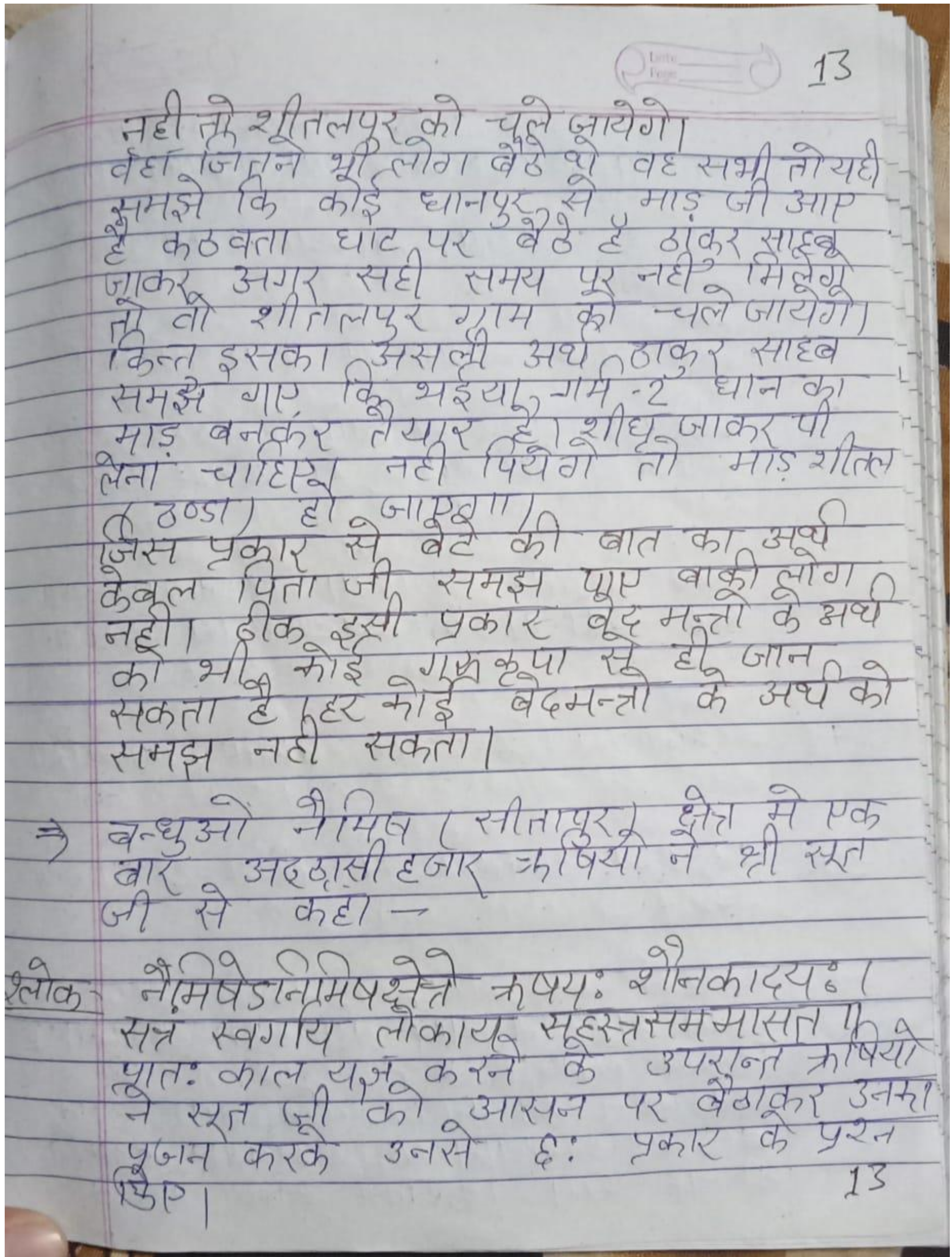
12

का श्रवणपान नही करते, उनके कानो के छिद्र साँप के बिल के समान है। तो भईया शुकदेव जी की कृपा से हम सबको बिना छिलके, का बिना गुठली का रस भरा फल प्राप्त हुआ है। इसलिए हम सबको नित्य इस रस का पान करना चाहिए।

बन्धुओ भागवत जी वेद रूपी कल्पवृक्ष का पका हुआ फल है। मंगलाचरण का आपने दर्शन किया। वेदो के मन्त्रो के अर्थ को हर कोई नही समझ सकता जो गुरु परम्परा से दीक्षित है जिसने आचार्य परम्परा से विधिवत ज्ञान प्राप्त किया है वही वेदमन्त्रो के अर्थ को समझ सकता है। अन्यथा नासमझ लोग प्रायः अर्थ का अनर्थ कर देते है।

उदाहरण:- एक बार एक ठाकुर साहब कुछ लोगो के साथ पंचायत में बैठे थे तभी उनके भोजन का समय हो गया। ठाकुर साहब तो नित्यप्रति माड़ पीते थे। उनका बेटा उनको धान का माड़ पिलाने के लिए बुलाने आया। उसने देखा वहा पर तो बहुत सारे लोग एकत्रित है। सबके सामने तो बोल नही सकता की पिता जी धान का माड़ पीते है। तो उसने कुछ इस प्रकार से अपने पिता जी से कहा -

⇒ पिता जी धानूपुर से माड़ जी आए। कठवत घाट पर बैठे है। जल्दी चलकर मिल लो


13
नही तो शीतलपुर को चले जायेगो।
वहा जितने भी लोग बैठे थे वह सभी तो यही समझे कि कोई धानपुर से माड़ जी आए है कठवता घाट पर बैठे है ठाकुर साहब जाकर अगर सही समय पर नही मिलेगे तो वो शीतलपुर ग्राम को चले जायेगो।
किन्तु इसका असली अर्थ ठाकुर साहब समझे गए कि भईया गर्म-2 धान का माड़ बनकर तैयार है। शीघ्र जाकर पी लेना चाहिए नही पियेगे तो माड़ शीतल (ठण्डा) हो जाएगा।
जिस प्रकार से बेटे की बात का अर्थ केवल पिता जी समझ पाए बाकी लोग नही। ठीक इसी प्रकार वेद मन्त्रो के अर्थ को भी कोई गुरु कृपा से ही जान सकता है। हर कोई बेदमन्त्रो के अर्थ को समझ नही सकता।
⇒ बन्धुओ नैमिष (सीतापुर) क्षेत्र मे एक बार अट्ठासी हजार ऋषियो ने श्री सूत जी से कहा →
श्लोक- नैमिषेऽनिमिषक्षेत्रे ऋषयः शौनकादयः।
सत्रं स्वर्गाय लोकाय सहस्त्रसममासत॥
प्रातः काल यज्ञ करने के उपरान्त ऋषियो ने सूत जी को आसन पर बैठाकर उनका पूजन करके उनसे छः प्रकार के प्रश्न किए।
13

14

श्लोक- त्वया खलु पुराणानि सेतिहासानि चानघ।
आख्यातान्यप्यधीतानि धर्मशास्त्राणि यान्युत॥

६ प्रश्न शौनकादि ऋषियो ने श्री सूत जी से किए।

(1) मानव के जीवन मे परम धर्म क्या है?

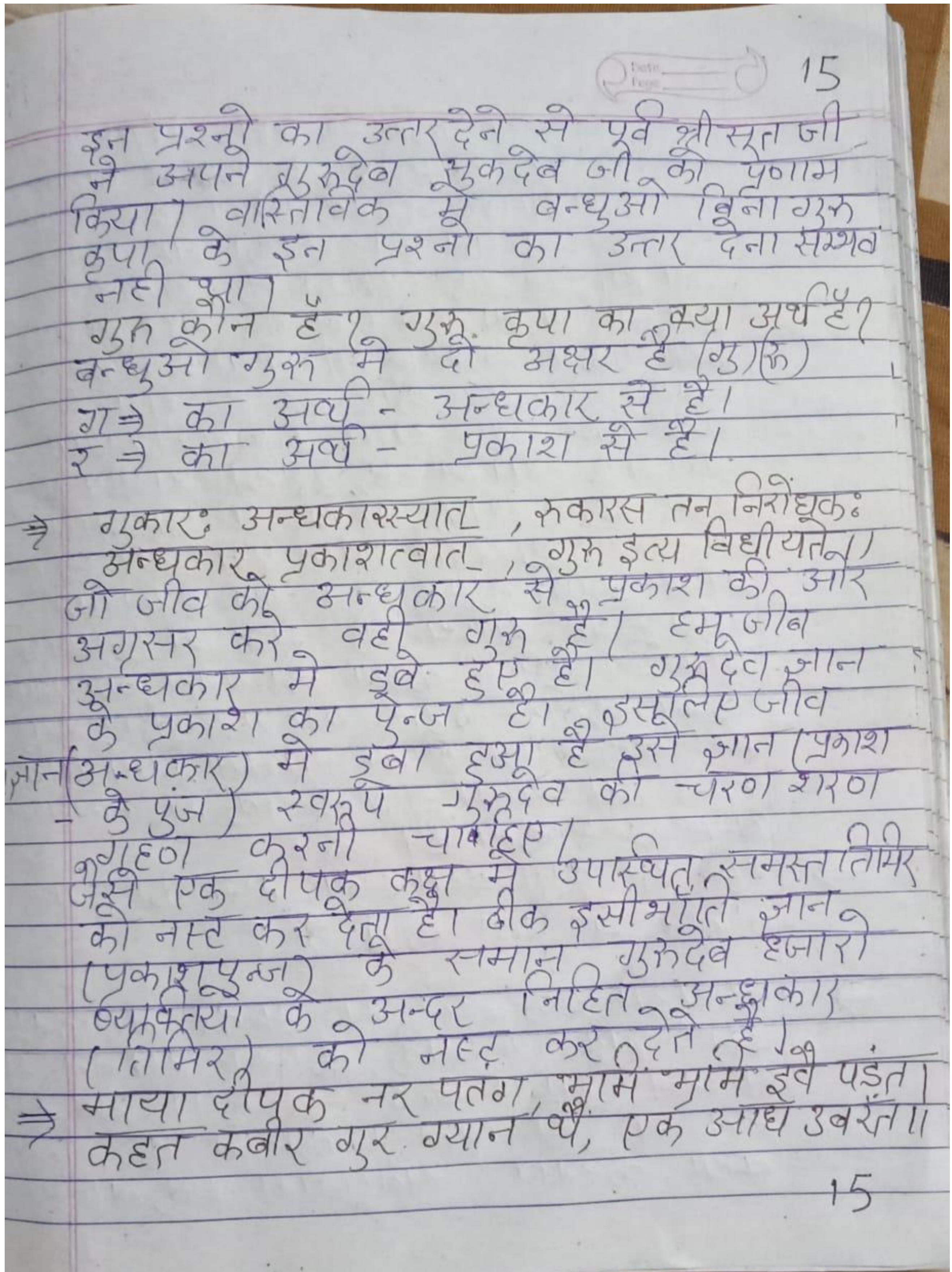
(2) किसी मन्दिर मे जाते है, वहा कई देवता होते है। तो मन्दिर मे देवता कौन श्रेष्ठ है।

(3) वेद मे तो परमात्मा अजन्मा है तो वह दशरथ का बेटा राम कैसे बना।

(4) भगवान के कुल अवतार कितने है।

(5) किस-2 अवतार मे कौन-2 सी लीला की।

(6) जब भगवान धर्म की रक्षा के लिए ही जन्म लेते है। तो जब द्वापर युग मे भगवान श्री कृष्ण चले गए, उसके बाद तो भगवान का अवतार हुआ नही। तो यह धर्म किसकी शरण मे गया।



15

इन प्रश्नो का उत्तर देने से पूर्व श्री सूत जी ने अपने गुरुदेव सुकदेव जी को प्रणाम किया। वास्तविक मे बन्धुओ बिना गुरु कृपा के इन प्रश्नो का उत्तर देना सम्भव नही था।

गुरु कौन है? गुरु कृपा का क्या अर्थ है? बन्धुओ गुरु मे दो अक्षर है (गु)(रु)

ग ⇒ का अर्थ - अन्धकार से है।

र ⇒ का अर्थ - प्रकाश से है।

⇒ गुकारः अन्धकारस्यात , रुकारस तन निरोधकः
अन्धकार प्रकाशत्वात , गुरु इत्य विधीयते।।

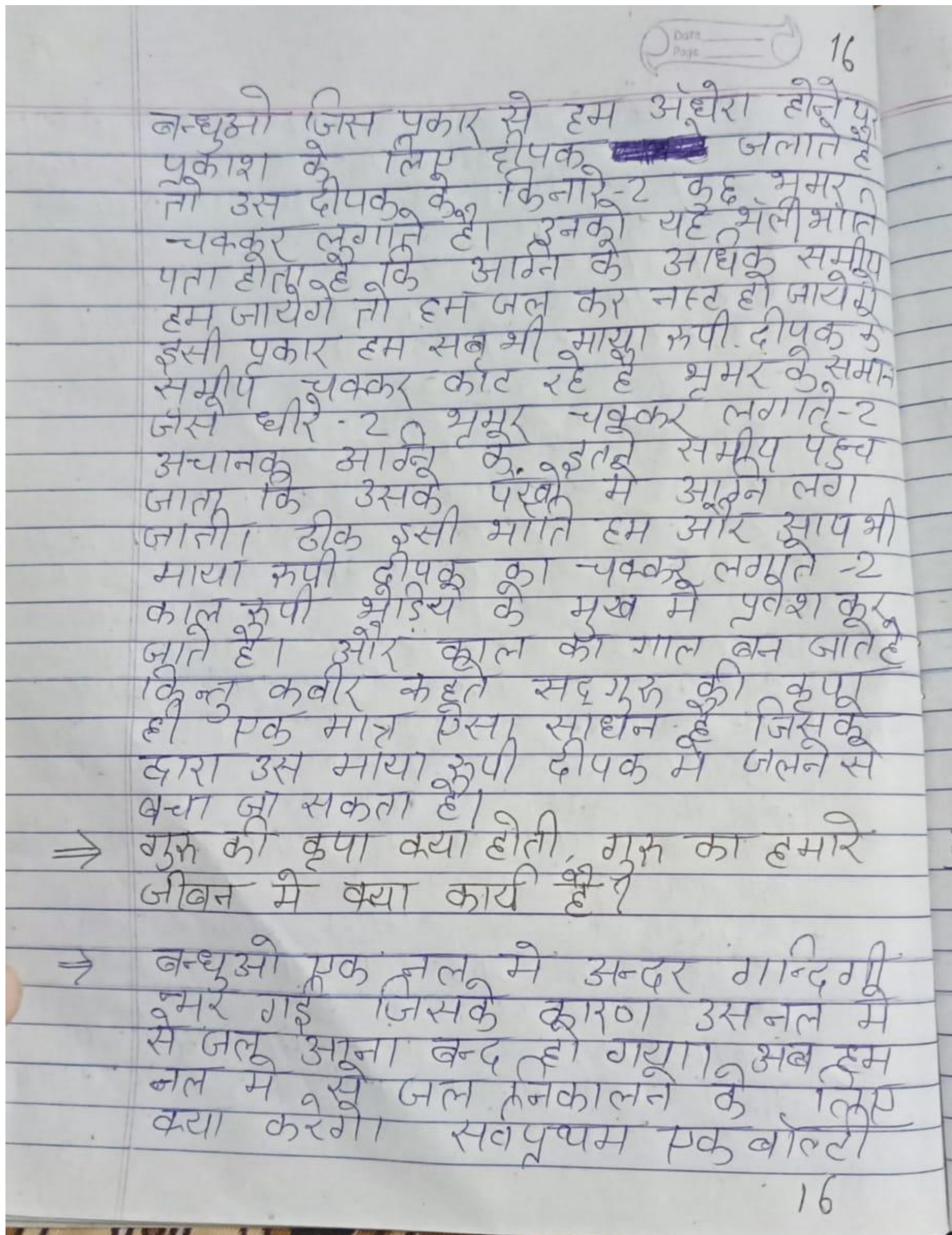
जो जीव को अन्धकार से प्रकाश की ओर अग्रसर करे वही गुरु है। हम जीव अन्धकार मे डूबे हुए है। गुरुदेव ज्ञान के प्रकाश का पुन्ज है। इसलिए जीव अज्ञान(अन्धकार) मे डूबा हुआ है उसे ज्ञान (प्रकाश के पुंज) स्वरुप गुरुदेव की चरण शरण ग्रहण करनी चाहिए।

जैसे एक दीपक कक्ष मे उपस्थित समस्त तिमिर को नस्ट कर देता है ठीक इसी भाँति ज्ञान (प्रकाशपुन्ज) के समान गुरुदेव हजारो व्यक्तियो के अन्दर निहित अन्धकार (तिमिर) को नष्ट कर देते है।

⇒ माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवै पड़ंत।
कहत कबीर गुर ग्यान थैं, एक आध उबरंत।।

15

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



16

बन्धुओ जिस प्रकार से हम अँधेरा होने पर
प्रकाश के लिए दीपक [illegible] जलाते है
तो उस दीपक के किनारे-2 कुछ भ्रमर
चक्कर लगाते है। उनको यह भलीभाँति
पता होता है कि अग्नि के अधिक समीप
हम जायेगे तो हम जल कर नष्ट हो जायेगे
इसी प्रकार हम सब भी माया रूपी दीपक के
समीप चक्कर काट रहे है भ्रमर के समान
जैसे धीरे-2 भ्रमर चक्कर लगाते-2
अचानक अग्नि के इतने समीप पहुंच
जाता कि उसके पंखो मे अग्नि लग
जाती। ठीक इसी भाँति हम और आप भी
माया रूपी दीपक का चक्कर लगाते -2
काल रूपी भेड़िये के मुख मे प्रवेश कर
जाते है। और काल का गाल बन जाते है
किन्तु कबीर कहते सद्गुरु की कृपा
ही एक मात्र ऐसा साधन है जिसके
द्वारा उस माया रूपी दीपक मे जलने से
बचा जा सकता है।

⇒ गुरु की कृपा क्या होती, गुरु का हमारे
जीवन मे क्या कार्य है?

⇒ बन्धुओ एक नल मे अन्दर गन्दगी
भर गई जिसके कारण उस नल मे
से जल आना बन्द हो गया। अब हम
नल मे से जल निकालने के लिए
क्या करेगे। सर्वप्रथम एक बोल्टी

16

17

से जलभरकर के एक मग से उस नल के अन्दर जल डालना प्रारम्भ करेगे। जल डालते-2 सर्वप्रथम नल के भीतर जमा गान्दिगी पहले बाहर निकलेगी फिर जल बाहर निकलेगा। ठीक इसी भाँति हमारे हृदय मे भी काम, क्रोध, राग, द्वेष की गान्दगी भरी हुई है। जब तक हृदय से यह गान्दगी साफ नही होगी तब तक भक्ति की धारा हृदय मे प्रवाहित नही हो सकती है। हृदय को स्वच्छ करने के लिए हमे सद्गुरु की शरण ग्रहण करनी पड़ेगी सद्गुरु द्वारा प्राप्त सत्सगरुपी जल से हमे पहले अपने हृदय मे उपस्थित गंदगी को बाहर निकालना होगा इसके उपरान्त आपके हृदय मे भक्ति की धारा कल-2 करके बहेगी। तो भईया गुरु कृपा से ही आप निर्मल होकर परमात्मा की शरण ग्रहण कर सकते हो।

उदाहरण = आप के पास मोबाइल फोन है। उसमे सिमकार्ड पड़ा है। यदि आपके फोन मे नेटवर्क न आ रहे हो तो क्या आप मोबाइल और सिम से किसी से बात कर सकते है नही। ठीक इसी भाँति आप के पास मन्त्र भी है, मार्ग भी है भगवान को प्राप्त करने का किन्तु उस मन्त्र का प्रयोग कैसे करना है

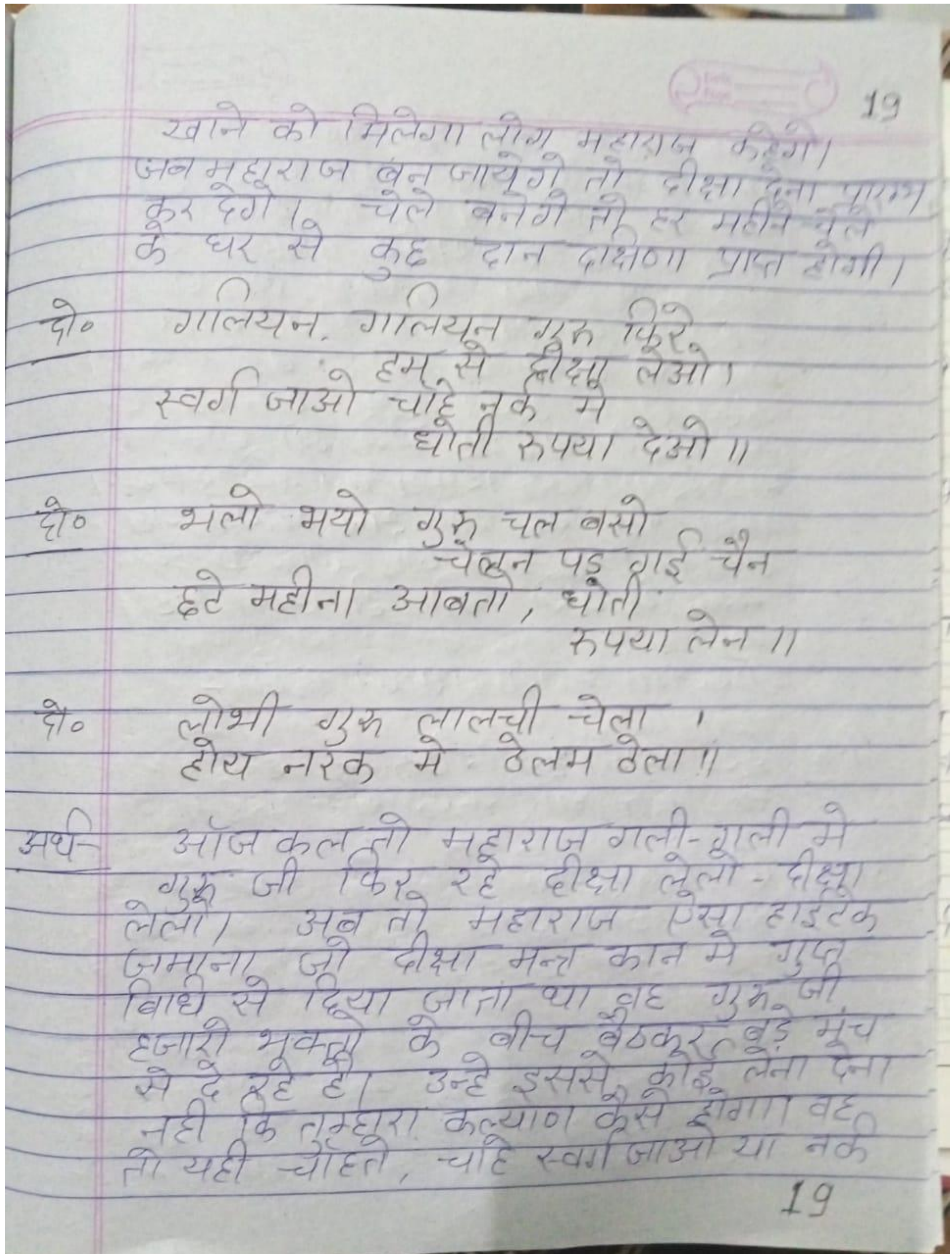
18

उस मार्ग पर कैसे चलना है। यह केवल गुरुदेव ही बताते हैं।
गोस्वामी जी कहते -

दोहा- सचिव बैद गुरु तीनि जौं, प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर, होइ बेगिहीं नास॥

अर्थ- मंत्री, वैद्य, और गुरु- ये तीन यदि (अप्रसन्नता) के भय से - लाभ की आशा से (हित की बात न कहकर) प्रिय बोलते हैं, तो क्रमशः राज्य, शरीर, और धर्म - इन तीनों का शीघ्र ही नाश हो जाता है।
गुरुदेव को भी अपनी गरिमा (पद) का ध्यान रखते हुए अपने शिष्य का कल्याण करना चाहिए। किसी के भय से झूठ नहीं बोलना चाहिए गुरुदेव को।
किन्तु भईया आज कल तो गुरु भी लोग लालच में बन जाते हैं।
गुरु को बिना लालच के शिष्य का कल्याण करना चाहिए।
किन्तु आजकल लोग गुरु किस लिए बनते हैं -

दो० मूड़ मुड़ाय तीन गुण,
सर की मिट जावे खाँच।
खइबे को हलुआ मिले
लोग कहे महाराज॥
भईया, गुरु (महाराज) बन जाना अच्छा -2



19

खाने को मिलेगा लोग महाराज कहेंगे।
जब महाराज बन जायेंगे तो दीक्षा देना प्रारम्भ कर देंगे। चेले बनेंगे तो हर महीने चेले के घर से कुछ दान दक्षिणा प्राप्त होगी।

दो० गलियन गलियन गुरु फिरे,
हम से दीक्षा लेओ।
स्वर्ग जाओ चाहे नर्क मे
धोती रुपया देओ॥

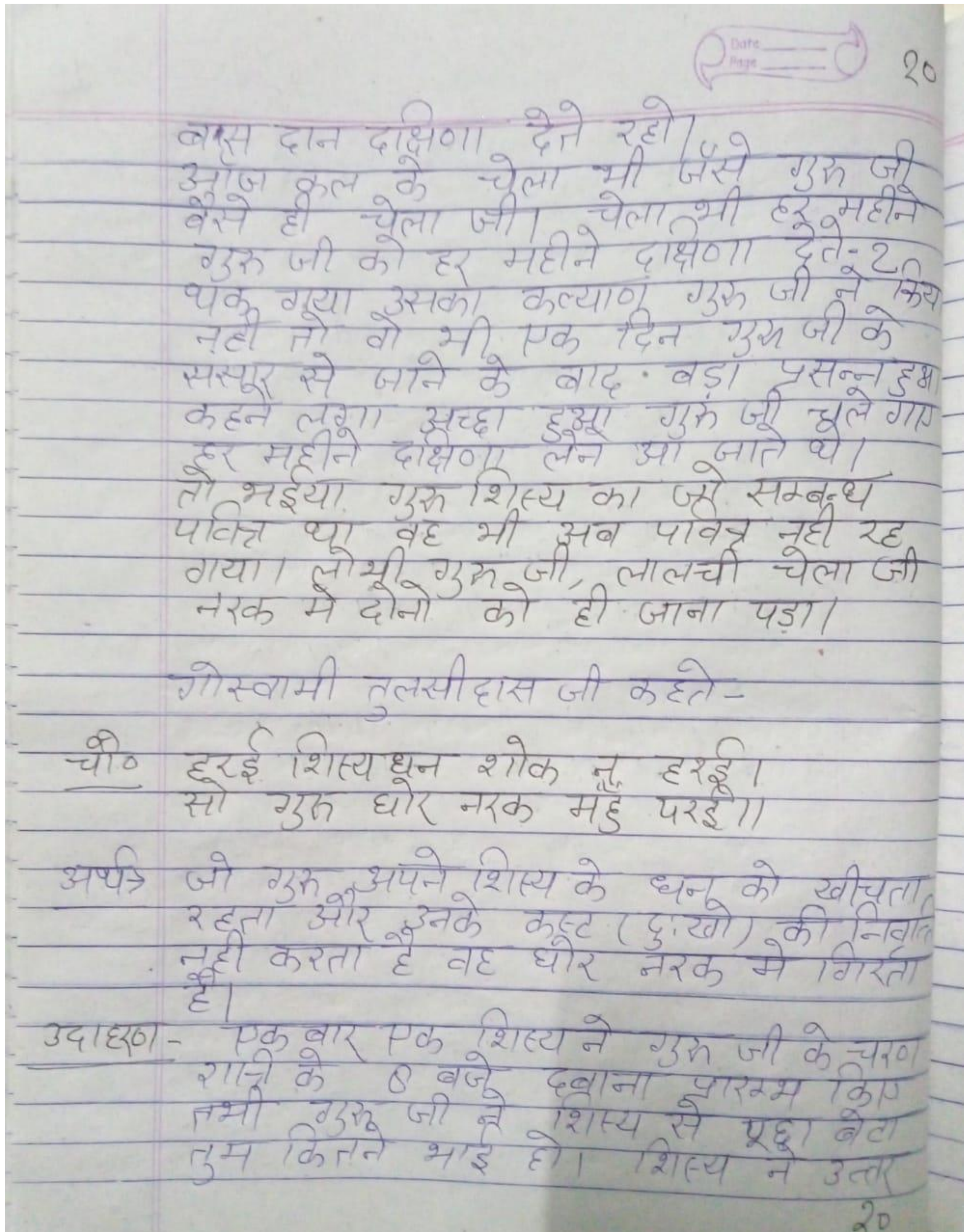
दो० भलो भयो गुरु चल बसो
चेलन पड़ गई चैन
छटे महीना आवतो, धोती
रुपया लेन॥

दो० लोभी गुरु लालची चेला।
होय नरक मे ठेलम ठेला॥

अर्थ- आज कल तो महाराज गली-गली मे गुरु जी फिर रहे दीक्षा लेलो - दीक्षा लेलो। अब तो महाराज ऐसा हाईटेक जमाना, जो दीक्षा मन्त्र कान मे गुप्त विधि से दिया जाता था वह गुरु जी हजारों भक्तो के बीच बैठकर बड़े मंच से दे रहे है। उन्हे इससे कोई लेना देना नही कि तुम्हारा कल्याण कैसे होगा वह तो यही चाहते, चाहे स्वर्ग जाओ या नर्क

19

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



20

बस दान दक्षिणा देते रहो। आज कल के चेला भी जैसे गुरु जी वैसे ही चेला जी। चेला भी हर महीने गुरु जी को हर महीने दक्षिणा देते-2 पक गया उसका कल्याण गुरु जी ने किया नहीं तो वो भी एक दिन गुरु जी के संसार से जाने के बाद बड़ा प्रसन्न हुआ कहने लगा अच्छा हुआ गुरु जी चले गए हर महीने दक्षिणा लेने आ जाते थे। तो भईया गुरु शिष्य का जो सम्बन्ध पवित्र था वह भी अब पवित्र नहीं रह गया। लोभी गुरु जी, लालची चेला जी नरक मे दोनो को ही जाना पड़ा।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते-

चौ० हरई शिष्य धन शोक न हरई।
सो गुरु घोर नरक महुँ परई।।

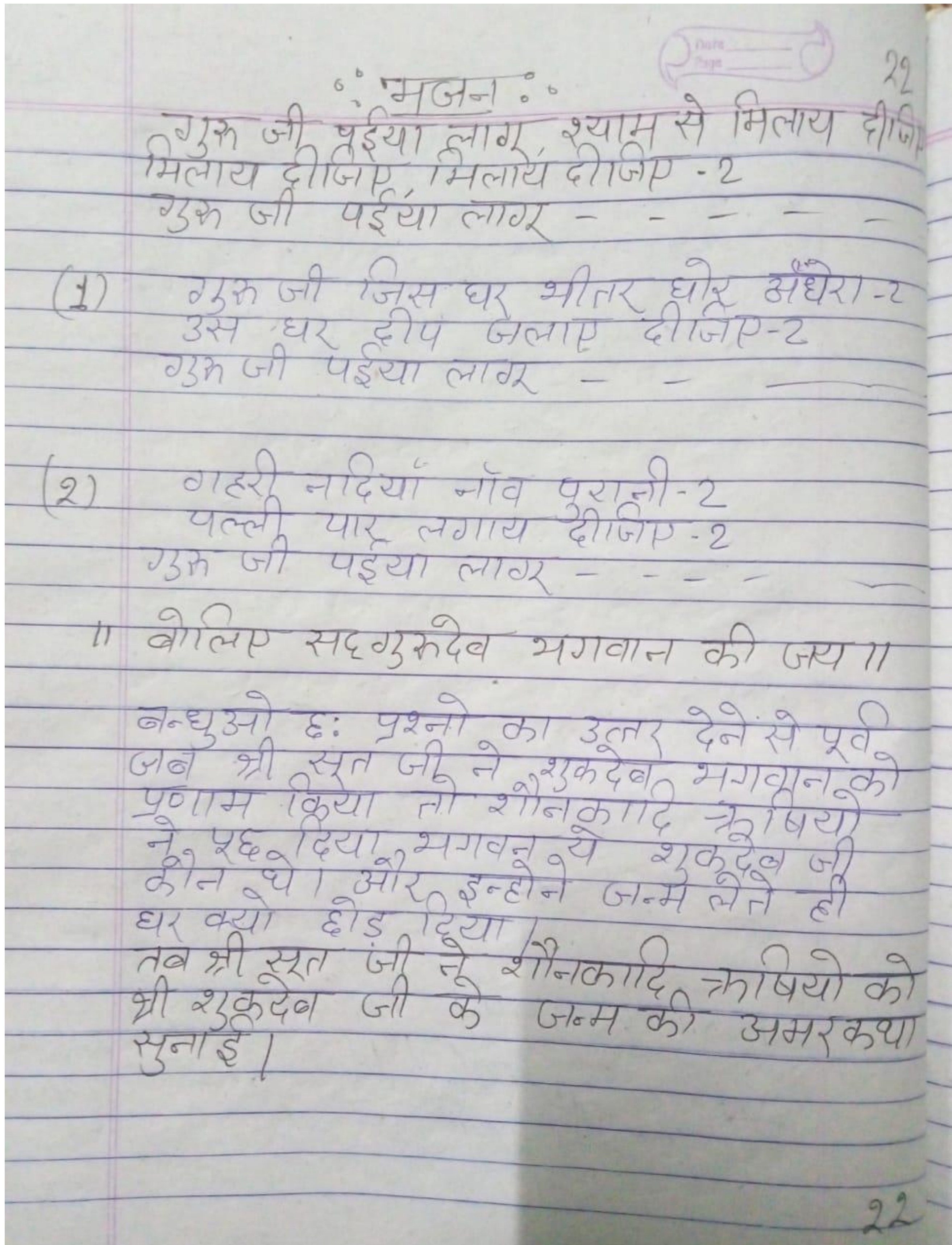
अर्थ- जो गुरु अपने शिष्य के धन को खींचता रहता और उनके कष्ट (दुःखो) की निवृत्ति नहीं करता है वह घोर नरक मे गिरता है।

उदाहरण- एक बार एक शिष्य ने गुरु जी के चरण रात्री के 8 बजे दबाना प्रारम्भ किए तभी गुरु जी ने शिष्य से पूछा बेटा तुम कितने भाई हो। शिष्य ने उत्तर

20

21

दिया गुरु जी हमे मिलाकर 4 भाई है हम।
इतना सुनते ही गुरु जी को निद्रा आ गई
चेला चरण चापन करता रहा। गुरुजी
की आँख रात्रि 12 बजे खुली। गुरु जी ने
फिरसे पूछा बेटा मै तुमसे पूछ रहा था
तुम कितने भाई हो चेला बोला गुरुजी
यही बात आपने 8 बजे पूछी थी यही अब
12 बजे पूछ रहे है। गुरु जी हमे मिलाकर
हम 4 भाइ है। इतना सुनते ही गुरु जी को
फिर निद्रा आ गई। अबकी बार आँख सीधे
4 बजे खुली चेला से कहा बेटा मै तुमसे
पूछ रहा था तुम कितने भाई हो चेला
गुस्से मे बोला गुरु जी हम तीन भाई
है। गुरु जी बोले रात्रि मे तो 4 भाई
बता रहा था। अब सुबह 3 ऐसा क्यो।
वह बोला गुरु जी जैसी सेवा आज 8 बजे
से सुबह 4 बजे तक कराई है ऐसी
सेवा यदि एक दो बार और करा ली तो मै
तो खत्म हो जाऊगा तो फिर तो तीन भाई
ही बचेगे। बन्धुओ इसलिए कभी गुरु
को शिष्य का किसी प्रकार से शोषण
नही करना चाहिए।
श्री सूत जी अपने गुरुदेव भगवान श्री
शुकदेव जी को प्रणाम कर रहे है आइए
हम सब भी अपने-2 गुरुदेव भगवान
को प्रणाम करे।



22

:: भजन ::

गुरु जी पईया लागू, श्याम से मिलाय दीजिए
मिलाय दीजिए, मिलाय दीजिए -2
गुरु जी पईया लागू - - - - -

(1) गुरु जी जिस घर भीतर घोर अँधेरा -2
उस घर दीप जलाए दीजिए -2
गुरु जी पईया लागू - - -

(2) गहरी नदियाँ नाव पुरानी -2
पल्ली पार लगाय दीजिए -2
गुरु जी पईया लागू - - -

॥ बोलिए सदगुरुदेव भगवान की जय ॥

बन्धुओ छः प्रश्नो का उत्तर देने से पूर्व जब श्री सूत जी ने शुकदेव भगवान को प्रणाम किया तो शौनकादि ऋषियो ने पूछ दिया, भगवन् ये शुकदेव जी कौन थे। और इन्होने जन्म लेते ही घर क्यो छोड़ दिया।
तब श्री सूत जी ने शौनकादि ऋषियो को श्री शुकदेव जी के जन्म की अमरकथा सुनाई।

22

-: श्री शुकदेव जी का जन्म :- 23

⇒ सूत जी कहते शौनकादि ऋषियों से - श्री शुकदेव जी गोलोक मे रहते है और राधा रानी की गोद मे खेला करते है।

⇒ एकदिन राधारानी ने शुकदेव जी से कहा बेटा मृत्यु लोक मे जाओ और जन-2 मे भागवत का प्रचार करो।

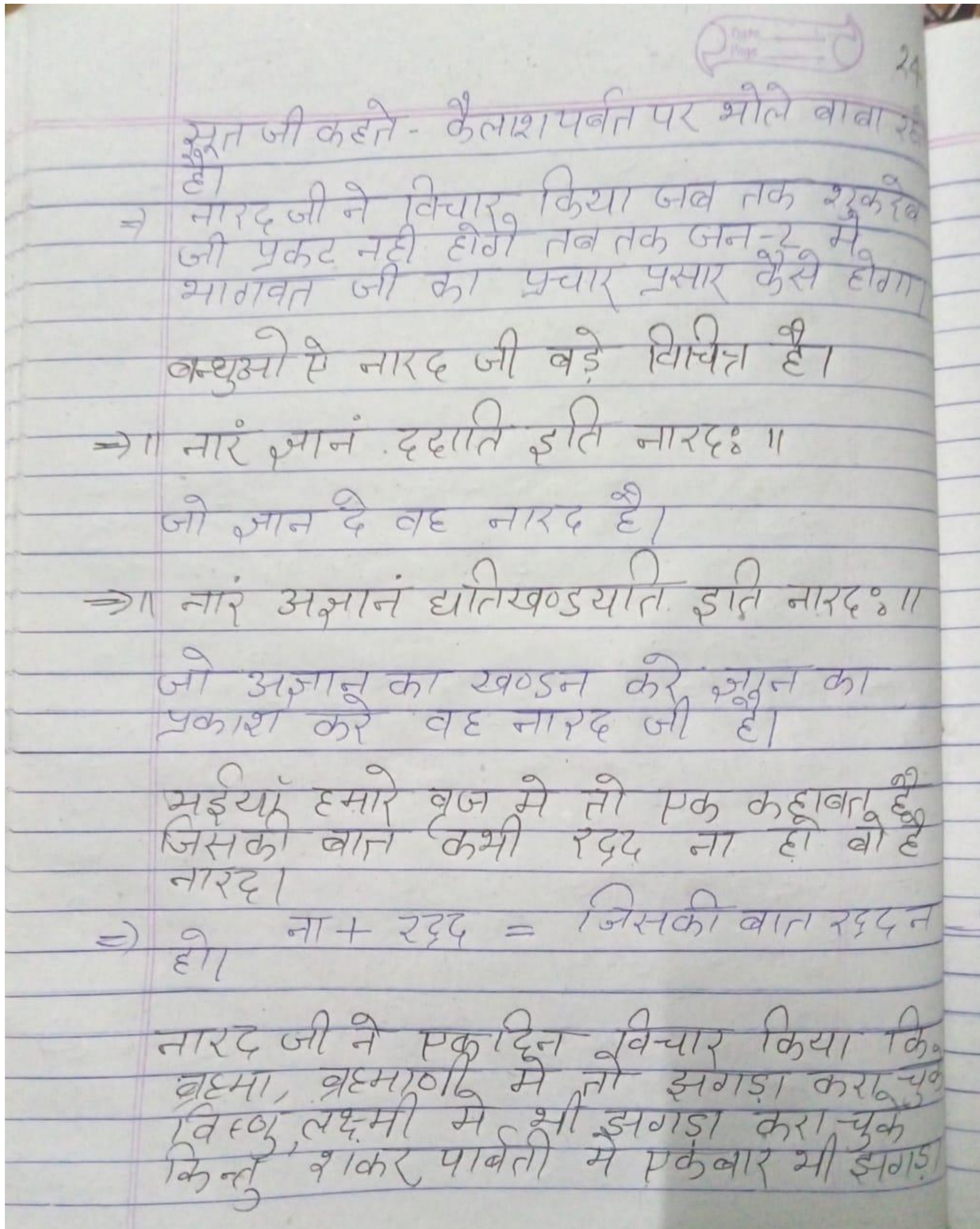
⇒ शुकदेव जी ने मृत्युलोक मे आने के लिए श्री राधारानी से मना कर दिया। शुकदेव जी कहते मृत्युलोक मे जाते ही मुझे प्रभु की माया जकड़ लेगी इस लिए मै नही जाऊगा।

⇒ तब किशोरी राधा रानी ने शुकदेव जी से कहा बेटा तुम मृत्यु लोक मे जाकर भागवत धर्म का प्रचार, प्रसार करो मेरी माया तुम्हे नही सतायेगी।

⇒ वही शुकदेव जी गोलोक से मृत्युलोक मे आये। कैलाश पर्वत पर एक पक्षिणी के गर्भ से जन्म लिया।

शौनकादि ऋषि कहते है। प्रभु यह सब हमे विस्तार से सुनाए

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



24

सूत जी कहते - कैलाश पर्वत पर भोले बाबा रहे
है।
⇒ नारद जी ने विचार किया जब तक शुकदेव
जी प्रकट नही होगे तब तक जन-२ मे
भागवत जी का प्रचार प्रसार कैसे होगा।

बन्धुओ ये नारद जी बड़े विचित्र है।

⇒ ॥ नारं ज्ञानं ददाति इति नारदः ॥

जो ज्ञान दे वह नारद है।

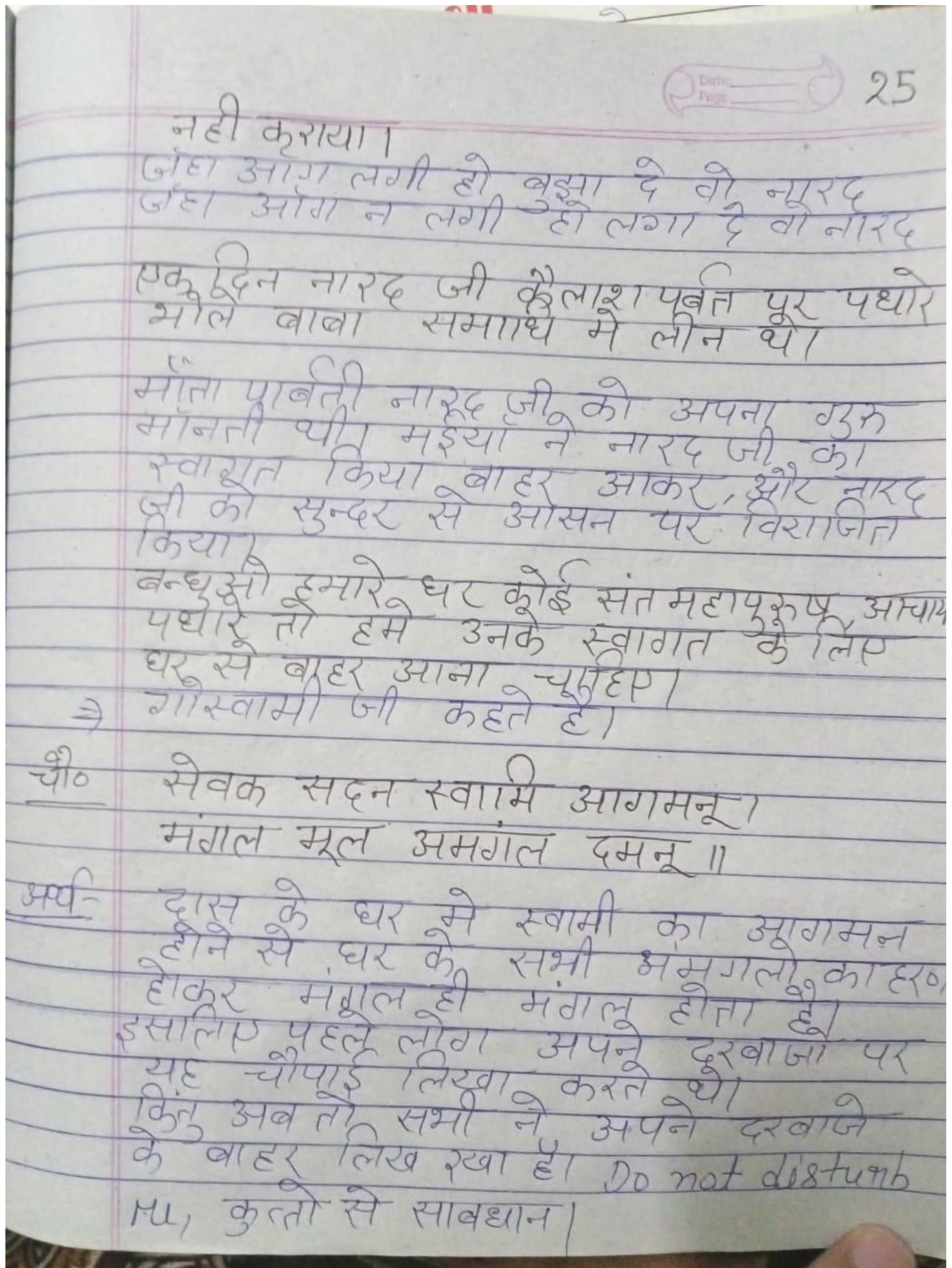
⇒ ॥ नारं अज्ञानं द्यतिखण्डयति इति नारदः ॥

जो अज्ञान का खण्डन करे ज्ञान का
प्रकाश करे वह नारद जी है।

सईयाँ हमारे ब्रज मे तो एक कहावत है
जिसकी बात कभी रद्द ना हो वो है
नारद।
⇒ ना + रद्द = जिसकी बात रद्द न
हो।

नारद जी ने एक दिन विचार किया कि
ब्रह्मा, ब्रह्माणी मे तो झगड़ा करा चुके
विष्णु, लक्ष्मी मे भी झगड़ा करा चुके
किन्तु शंकर पार्वती मे एकबार भी झगड़ा

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



25

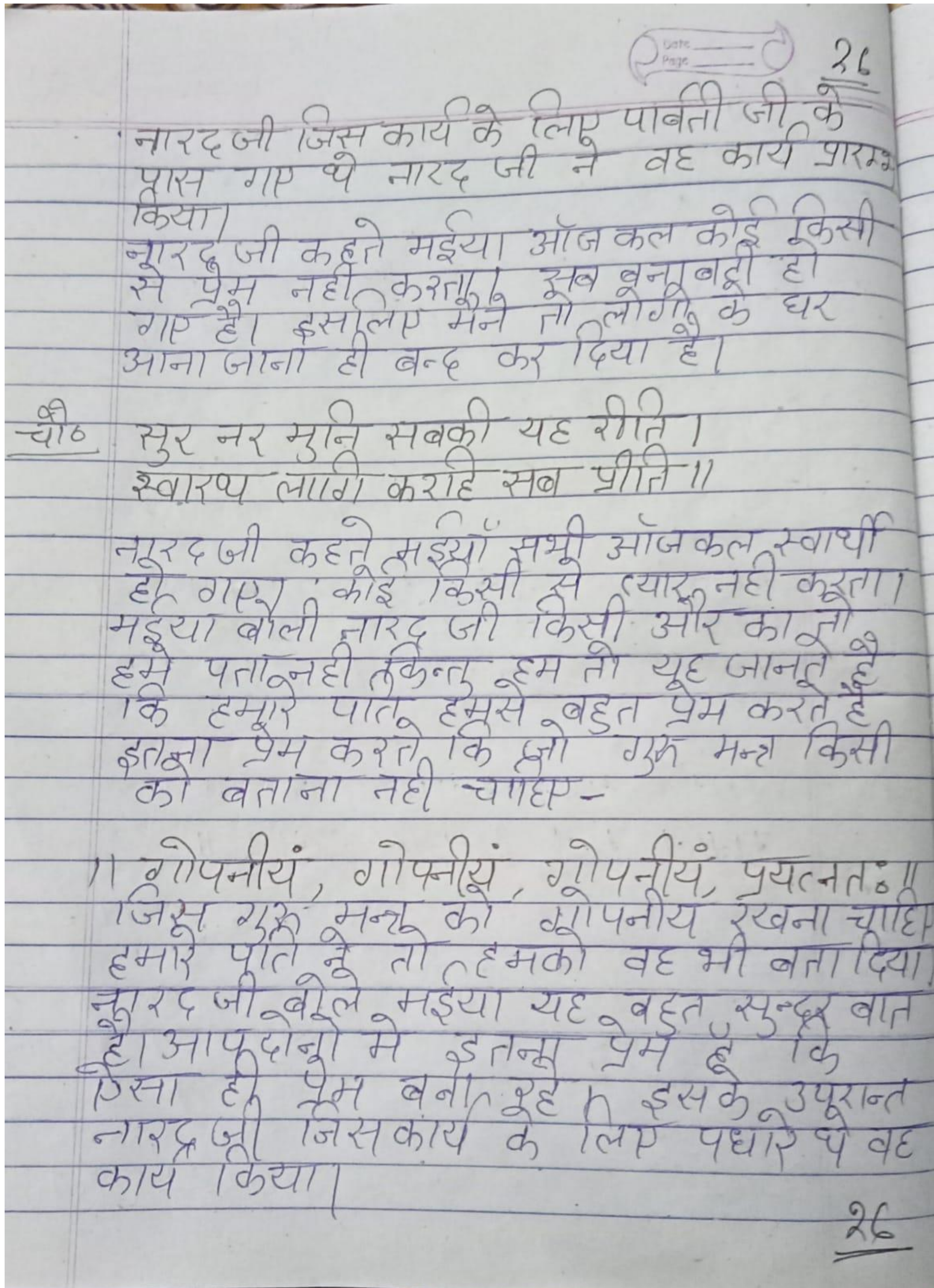
नही कराया।
जहा आग लगी हो बुझा दे वो नारद
जहा आग न लगी हो लगा दे वो नारद

एक दिन नारद जी कैलाश पर्वत पर पधारे
भोले बाबा समाधि मे लीन थे।

माँता पार्वती नारद जी को अपना गुरु
मानती थी। मइया ने नारद जी का
स्वागत किया बाहर आकर, और नारद
जी को सुन्दर से आसन पर विराजित
किया।
बन्धुओ हमारे घर कोई संत महापुरुष, आचार्य
पधारे तो हमे उनके स्वागत के लिए
घर से बाहर आना चाहिए।
⇒ गोस्वामी जी कहते है।

चौ० सेवक सदन स्वामि आगमनू।
मंगल मूल अमंगल दमनू॥

अर्थ- दास के घर मे स्वामी का आगमन
होने से घर के सभी अमंगलो का हरण
होकर मंगल ही मंगल होता है।
इसलिए पहले लोग अपने दरवाजो पर
यह चौपाई लिखा करते थे।
किंतु अब तो सभी ने अपने दरवाजे
के बाहर लिख रखा है Do not disturb
Me, कुत्तो से सावधान।



26

नारद जी जिस कार्य के लिए पार्वती जी के पास गए थे नारद जी ने वह कार्य प्रारम्भ किया।
नारद जी कहते मईया आज कल कोई किसी से प्रेम नही करता। सब बनावटी हो गए है। इसलिए मैंने तो लोगो के घर आना जाना ही बन्द कर दिया है।

चौ० सुर नर मुनि सबकी यह रीति।
स्वारथ लागि करहि सब प्रीति॥

नारद जी कहते मईयाँ सभी आज कल स्वार्थी हो गए। कोई किसी से प्यार नही करता। मईया बोली नारद जी किसी और का तो हमे पता नही किन्तु हम तो यह जानते है कि हमारे पति हमसे बहुत प्रेम करते है इतना प्रेम करते कि जो गुरु मन्त्र किसी को बताना नही चाहिए-

॥ गोपनीयं, गोपनीयं, गोपनीयं, प्रयत्नतः॥
जिस गुरु मन्त्र को गोपनीय रखना चाहिए हमारे पति ने तो हमको वह भी बता दिया। नारद जी बोले मईया यह बहुत सुन्दर बात है आप दोनो मे इतना प्रेम है कि ऐसा ही प्रेम बना रहे। इसके उपरान्त नारद जी जिस कार्य के लिए पधारे थे वह कार्य किया।

26

27

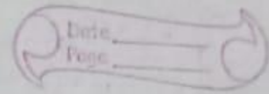
नारद जी बोले मईयां जब प्रभु आपसे कुछ छिपाते नही है। तो उन्होने आपको यह भी बताया होगा कि उनके गले मे जो मुण्डो का हार है उसमे सिर किसके पिरो रखे है।

मईयां बोली हर बात मुझे बताते बताते है किन्तु यह बात तो आज तक मुझे नही बताई।

नारद जी ने कहा इतना प्रेम आपसे करते है फिर यह बात आपको क्यो नही बताई। नारद जी बोले अच्छा मईया अब हम तो चलते है, हमे कुछ कार्य है। बाहर जाते वक्त नारद जी भोले बाबा से कह गए प्रभु शीघ्र ही अन्दर जाइयेगा मईया अन्दर इन्तजार कर रही है। बोले बाबा बोले आप अन्दर से होकर आ रहे है तो निश्चित ही मईया हमारा इन्तजार कर रही होगी। नारद जी तो चले गए मईया को इतना क्रोध सारे वस्त्र आभूषण त्याग दिए और कोपभवन मे जाकर बैठ गई। थे बन्धुओ पहले जब लोग घर बनवाते थे तो एक कोप भवन अलग से बनवाते थे जब स्त्रिया रूठ जाया करती थी तो इसी भवन मे जाकर बैठ जाती थी। फिर पतिदेव मनोहार करने जाया करते थे। देवी जी को मनाते थे।

28

महाराज भोले बाबा जी अन्दर पधारे तो देखा देवी जी तो कोप भवन मे बैठी। भोले बाबा ने कहा देवी जी कोई वस्तु की कमी हो तो हमे बताइए हम मगा देगे किन्तु ऐसे रूठ कर मत बैठिए।
मईया बोली आप हमसे प्रेम नही करते आप तो कपटी हो। अगर प्रेम करते होते तो मुझे बताया तो होता कि आप जो गले मे मुण्डो की माला पहने इसमे शीष किसके है। किन्तु आपने तो हमे यह बात आज तक नही बताई। भगवान बोले देवी आप हमे कपटी कहती हो अरे हम आपसे कितना प्रेम करते है इसका कोई प्रत्यक्ष प्रमाण है तो यह इस माला मे पड़े आपके मुण्ड है। हे देवी जितनी बार लीला की दृष्टि से रूपधारण कर आपने देह का त्याग किया उतनी बार मैने आपके शीषो को अपने इस माला मे पिरोकर धारण कर लिया।
अब तो मईया और क्रोधित हो गई। बोली प्रभु आप कपटी नही आप तो महाकपटी हो अरे ऐसा क्या खा लिया आपने जो आप अमर हो गए और हम बार-2 मरते है। अगर आप वास्तव मे प्रेम करते हो तो वह औषधि मुझे भी पिलाते जो आपने पी रखी है।

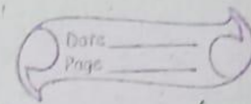


29

भोले बाबा बोले देवी मैने तो कथामृत (अमर कथा) रूपी अमृत का पान कर रखा है इसलिए मेरी जन्म और मृत्यु नही होती है। मईया तुरन्त चरणो मे गिरकर बोली प्रभु यह अमर कथा रूपी अमृत का पान हमे भी करा दीजिए। भगवान शंकर बोले, देवी जी मै भागवत की कथा तो नेत्र बंद कर के सुनाऊगा आप सुन रही कि नही सुन रही यह कैसे पता चलेगा। इसलिए आप बीच-2 मे हु,ऊँ, बोलती रहना।

वक्ता बने भगवान शिव, श्रोता बनी माँ पार्वती कथा आरम्भ हुई। जिस समय कथा आरम्भ हुई उस समय कैलाश पर कोई नही था हा एक छोटा सा तोते का बच्चा था जिसकी माँ उसको जन्म देते ही उड़ गई। महाराज अब शिव जी तो नेत्र बन्द कर के कथा कह रहे है। माता पार्वती और वो तोते का बच्चा दोनो ही कथा सुन रहे थे पांच दिन तक मईया ने नियम पूर्वक कथा सुनी। पांचवे दिन भगवान मईया से कह रहे थे देवी-

॥ योगेशा योग विन्यासः ॥ उद्धव जी ठाकुर जी से कहते है हे प्रभु आप योगा के स्वामी है, योगा के अधीश्वर है। बताइए त्याग क्या है? वैराग्य क्या है?



30

इसी ज्ञानमय प्रसंग को सुनते-2 माता पार्वती जी को निद्रा आ गई। पक्षी ने देखा मां सो गई है, भोले बाबा कहीं कथा सुनाना ना बंद कर दें। तो वह शुक का बच्चा ऊं, ऊं, ऊं करने लगा।

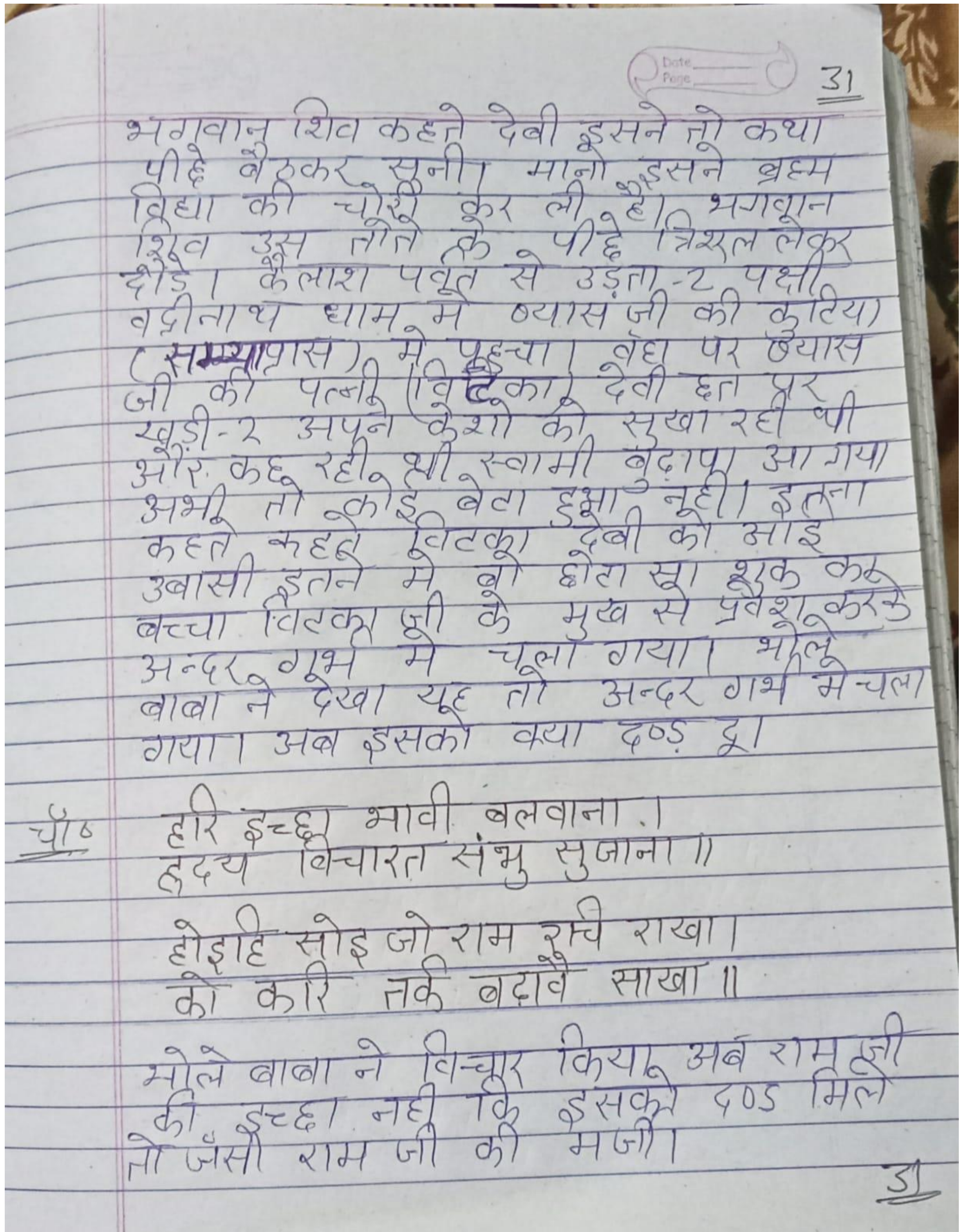
भागवत की कथा विराम हुई भोले बाबा ने जोर से जयकारा लगाई। बांके बिहारी लाल की जय।
जैसे ही जोर से जयकारा लगाया पार्वती जी की नींद टूट गई। प्रभु तो फिर कृष्ण ने उद्धव से क्या कहा। भगवान बोले क्या कहा मतलब कथा तो पूरी हो गई। मईया बोली मैं तो सो गई थी। भगवान बोले तो फिर यह बीच में ऊं, ऊं, कौन बोलता रहा। पीछे मुड़ कर देखा तो एक शुक का छोटा सा पक्षी ऊं, ऊं बोल रहा था। भगवान शिव ने कहा देवी कथा श्रवण के कुछ नियम होते हैं।

(1) कथा व्यासमंच के सामने बैठकर सुनना चाहिए पीछे नहीं।

(2) वक्ता से नीचे श्रोता का आसन होना चाहिए।

(3) कथा के मध्य मे सोना नहीं चाहिए कथा के मध्य मे उठकर जाना भी नहीं चाहिए

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



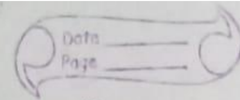
भगवान् शिव कहते देवी इसने तो कथा पीछे बैठकर सुनी। मानो इसने ब्रह्म विद्या की चोरी कर ली है। भगवान शिव उस तोते के पीछे त्रिशूल लेकर दौड़े। कैलाश पर्वत से उड़ता-2 पक्षी बद्रीनाथ धाम मे ब्यास जी की कुटिया (सम्याप्रास) मे पहुंचा। वहां पर ब्यास जी की पत्नी (विटिका) देवी छत पर खड़ी-2 अपने केशो को सुखा रही थी और कह रही थी स्वामी बुढ़ापा आ गया अभी तो कोई बेटा हुआ नहीं। इतना कहते कहते विटका देवी को आई उबासी इतने मे वो छोटा सा शुक का बच्चा विटका जी के मुख से प्रवेश करके अन्दर गर्भ मे चला गया। भोले बाबा ने देखा यह तो अन्दर गर्भ मे चला गया। अब इसको क्या दण्ड दूं।

चौ० हरि इच्छा भावी बलवाना।
हृदय बिचारत संभु सुजाना॥

होइहि सोइ जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बढ़ावै साखा॥

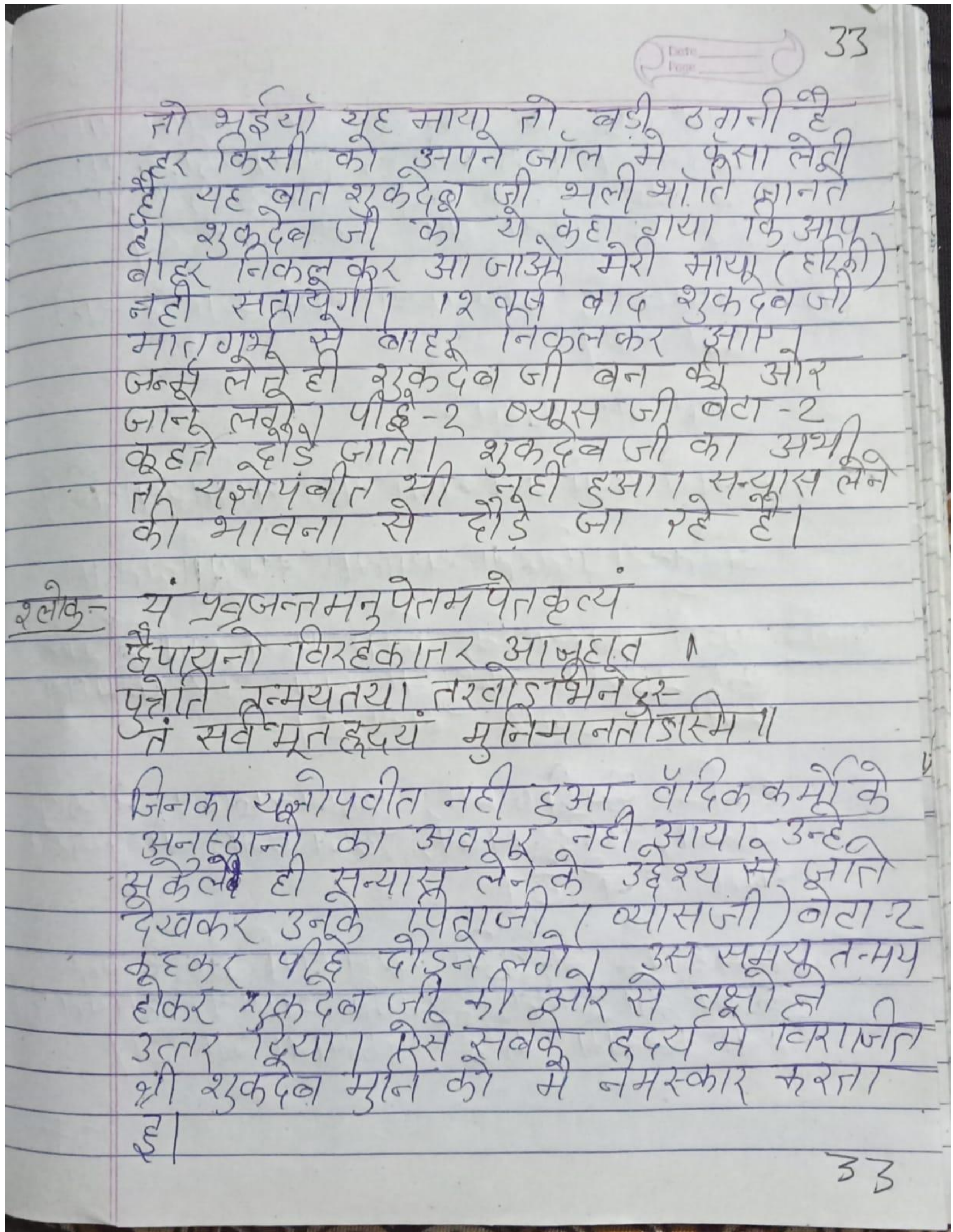
भोले बाबा ने विचार किया अब राम जी की इच्छा नही कि इसको दण्ड मिले तो जैसी राम जी की मर्जी।

31



॥ बोलिए शुकदेव जी महाराज की जय ॥
महाराज शुकदेव जी तो विटका देवी के गर्भ मे प्रवेश कर गए और बाहर आने का नाम तक नही लेते। एक दिन व्यास जी की पत्नी ने आकर कहा महाराज बहुत दिन हो गए अन्दर जो कोई भी है वेदमन्त्र पढ़ता है किन्तु बाहर आने का नाम तक नही लेता है। व्यास जी ने कहा बेटा तुम जो कोई भी हो बाहर आ जाओ तुम्हारी माँ को कष्ट हो रहा है। महाराज शुकदेव जी मातृ गर्भ मे 12 वर्ष रहे बाहर आने का नाम नही ले रहे क्यो कि वह जानते है बाहर आते ही प्रभु की माया जकड़ लेगी। बन्धुओ शुकदेव जी तो सबकुछ जानते है माया के विषय मे इसीलिए नही फस रहे माया के चक्कर मे उन्होने तो 12 वर्ष मे मातृ गर्भ को ही मन्दिर बना दिया। हम और आप तो जब गर्भ से उल्टे लटकते है तो ठाकुर जी से कहते है- हे प्रभु मुझे इस नर्क से बाहर निकालो मै संसार मे जाकर आपका भजन करूगा किन्तु जैसे ही पृथ्वी पर आते माया के जाल मे ऐसे फस जाते कि भगवान को ही भूल जाते है।

भजन- ये माया ऐसी ठगनी है भजन होने नही देती
ब्रह्म और जीव दोनो का मिलन होने नही देती



33

तो भईयों यह माया तो बड़ी ठगनी है हर किसी को अपने जाल मे फंसा लेती है यह बात शुकदेव जी भली भांति जानते है शुकदेव जी को ये कहा गया कि आप बाहर निकल कर आ जाओ मेरी माया (हरि की) नही सतायेगी। १२ वर्ष बाद शुकदेव जी मातागर्भ से बाहर निकलकर आए। जन्म लेते ही शुकदेव जी बन की ओर जाने लगे। पीछे-२ ब्यास जी बेटा-२ कहते दौड़े जाते। शुकदेव जी का अभी तो यज्ञोपवीत भी नही हुआ। सन्यास लेने की भावना से दौड़े जा रहे है।

श्लोक- यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं
द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव ।
पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदुस्
तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि ॥

जिनका यज्ञोपवीत नही हुआ, वैदिक कर्मों के अनुष्ठानों का अवसर नही आया, उन्हें अकेले ही सन्यास लेने के उद्देश्य से जाते देखकर उनके पिताजी (व्यासजी) बेटा-२ कहकर पीछे दौड़ने लगे। उस समय तन्मय होकर शुकदेव जी की ओर से वृक्षों ने उत्तर दिया। ऐसे सबके हृदय मे विराजित श्री शुकदेव मुनि को मै नमस्कार करता हूँ।

33

महाराज अब गुरु जी को प्रणाम मात्र करने से गुरु जी के जन्म की कथा को सूत जी कहकर शौनक ऋषियों द्वारा पूछे छः प्रश्नो का उत्तर देते है।

① मानव के लिए परम धर्म क्या है यही पूछा था।

② सूत जी कहते-

श्लोक- सर्वै पुंसां परो धर्मो यतो भक्तिरधोक्षजे।
अहैतुक्य प्रतिहता ययात्मा सम्प्रसीदति ॥

अर्थ- सभी मनुस्यो के लिए परम धर्म है गोविंद की प्राप्ति। बन्धुओ धर्म और परम धर्म दोनो मे अन्तर होता है।

धर्म- फैक्टी जाना, दुकान चलाना, नौकरी करना, मन्दिर जाना, दान देना, सेवा करना सभी धर्म है।

परमधर्म- बन्धुओ परम धर्म तो केवल कृष्ण की प्राप्ति, उनकी भक्ति, भक्ति भी ऐसी जिसमे कोई कामना ना हो।

35

बन्धुओ धर्म करके ही हमारे हृदय मे परम धर्म करने की इच्छा होती है।
शास्त्र कहते -

श्लोक- धर्मः स्वनुष्ठितः पुंसां विष्वक्सेन कथासु यः
नोत्पादयेद्यदि रतिं श्रम एव हि केवलम् ॥

अर्थ- धर्म का ठीक-2 अनुष्ठान करने पर भी यदि मनुष्य के हृदय मे भगवान की लीला, कथाओ के प्रति अनुराग उदय न हो तो वह निराश्रम - ही श्रम है।

बन्धुओ एक बात विचारणीय है? हम धर्म क्यो करते है।
शास्त्र कहते है -

श्लोक- धर्मस्य ह्यापवर्ग्यस्य नार्थोऽर्थायोपकल्पते।
नार्थस्य धर्मैकान्तस्य कामो लाभाय हि स्मृतः॥

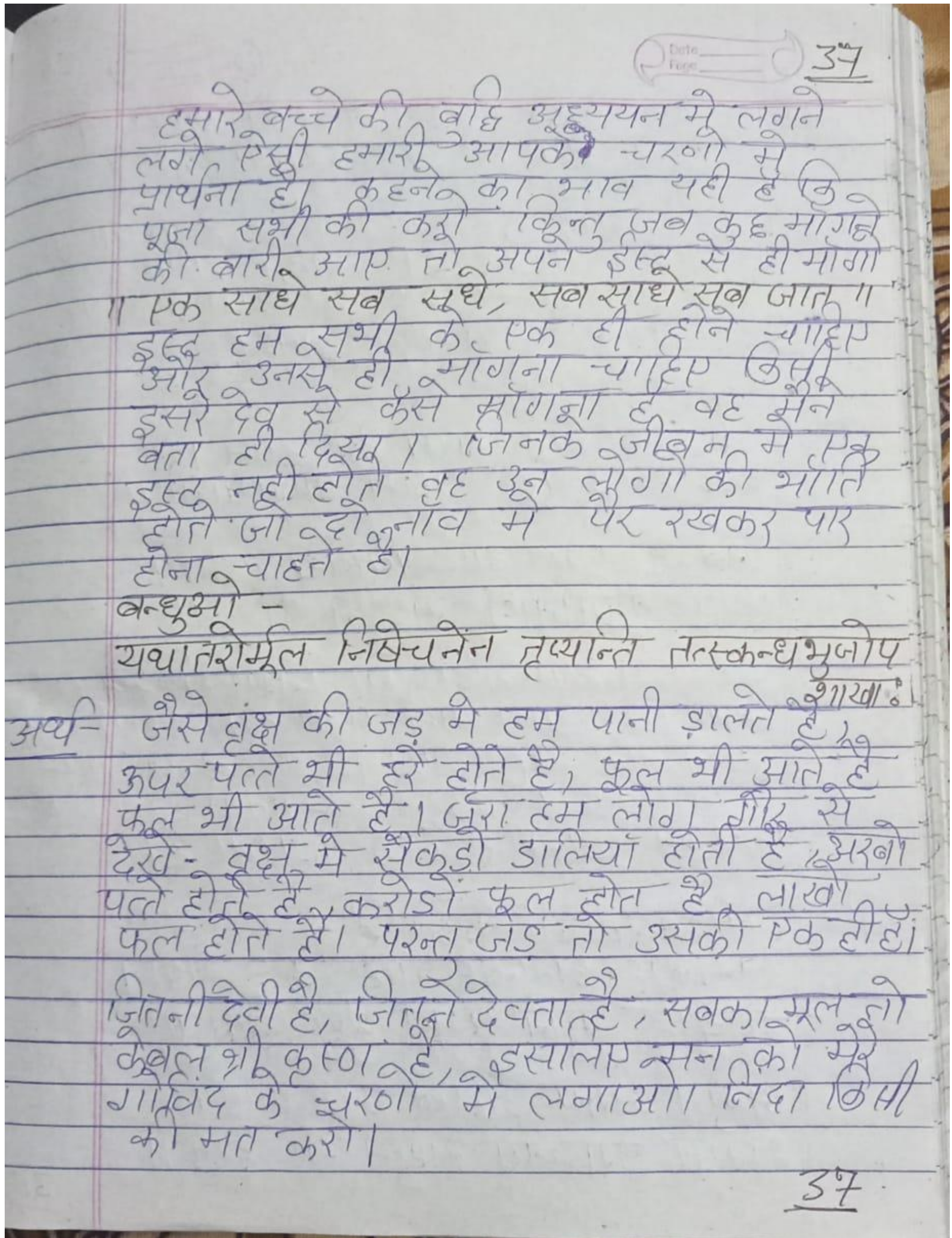
अर्थ:- बन्धुओ हम सभी धर्म प वर्ग के लिए करते है। प वर्ग मे कौन-2 से अक्षर आते है।
प - पाप से मुक्ति के लिए
फ - फल की प्राप्ति के लिए
ब - बन्धन से मुक्ति के लिए
भ - भय से मुक्ति के लिए
म - मृत्यु के समय हरि दर्शन के लिए

36

(२) द्वितीय प्रश्न किया था किसी मन्दिर मे जाते है वहा कई देवी, देवता होते है कैसे पता करे की देवता कौन श्रेष्ठ है ?

उत्तर= सूत कहते शौनकादि मुनियो से निन्दा किसी की मत करो निष्ठा एक मे रखो बन्धुओ हम सभी के जीवन मे एक इस्टदेव एक होने चाहिए पूजा सभी की करनी चाहिए।

इस्ट किसे कहते है - बन्धुओ मान लो हमारी अधिक प्रीति राधारमण जी मे है तो हम राधारमण जी को अपना इस्ट मान लेगे। यदि प्रीति सीताराम जी मे है तो सीताराम जी को अपना इस्ट मान लेगे। यदि हमारे इस्ट राधारमण जी है और हम किसी मन्दिर मे गए वहा अनेक भगवान है तो हम क्या करेगे। पूजन सभी का करेगे किन्तु जब कुछ मागने की बारी आयेगी तो हम अपने राधारमण जी से ही मागेगे। इसका अर्थ तो यह हुआ कि अन्य किसी देव से हम कुछ मागे ही ना तो सुनिए हमे किस बिधि से मागना है मान लीजिए हम सीताराम की शरण मे खडे है और हमे कुछ मागना है तो हम कैसे मागेगे हम सीताराम प्रभु से कहेगे कि हे सीताराम जी हमारे बच्चे की बुद्धि अध्ययन मे कम लगती है आप श्री राधाकृष्ण जी से कह दीजिए कि



37

हमारे बच्चे की बुद्धि अध्ययन मे लगने लगे, ऐसी हमारी आपके चरणो मे प्रार्थना है। कहने का भाव यही है कि पूजा सभी की करो किन्तु जब कुछ मांगने की बारी आए तो अपने इष्ट से ही मांगो

॥ एक साधे सब सधे, सब साधे सब जात ॥

इष्ट हम सभी के एक ही होने चाहिए और उनसे ही मांगना चाहिए किसी दूसरे देव से कैसे मांगना है वह मैंने बता ही दिया। जिनके जीवन मे एक इष्ट नही होते वह उन लोगो की भांति होते जो दो नाव मे पैर रखकर पार होना चाहते है।

बन्धुओ -

यथातरोमूल निषेचनेन तृप्यन्ति तत्स्कन्धभुजोपशाखाः

अर्थ- जैसे वृक्ष की जड़ मे हम पानी डालते है तो ऊपर पत्ते भी हरे होते है, फूल भी आते है फल भी आते है। जरा हम लोग गौर से देखे - वृक्ष मे सैकड़ो डालियां होती है, अरबो पत्ते होते है, करोड़ो फूल होते है, लाखो फल होते है। परन्तु जड़ तो उसकी एक ही है।

जितनी देवी है, जितने देवता है, सबका मूल तो केवल श्री कृष्ण है, इसलिए मन को मेरे गोविंद के चरणो मे लगाओ निंदा किसी की मत करो।

37

38

(3) तीसरा प्रश्न किया- वेदो मे तो परमात्मा अजन्मा है। तो वह दशरथ का बेटा राम कैसे बना?

उत्तर: शौनकादि कहते वेद कहते है परमात्मा निर्गुण निराकार है। उसका अवतार (जन्म) नही होता है तो भगवान राम के रुप मे अवतार कैसे लेके आए।

सूत जी कहते -

चौ० जब-2 होई धरम की हानि।
बाढ़हि असुर अधम अभिमानी॥

तब-2 प्रभु धरि विविध शरीरा।
हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा॥

जो परमात्मा वेदो मे निर्गुण निराकार बताया गया। वही परमात्मा धर्म की हानि होने पर अधर्म के बढ़ने पर उसको खत्म करने के लिए सगुण साकार रुप मे अवतार लेके आता है।

चौ० गोस्वामी जी कहते है -
सगुनहि अगुनहि नहि कछु भेदा।
गावहि मुनि पुरान बुध बेदा॥

अगुन अरूप अलख अज जोई।
भगत प्रेम बस सगुन सो होई॥

39

जो गुन रहित सगुन सोइ कैसे ।
जलु हिम उपल बिलग नहीं जैसे ॥

जो परमात्मा निर्गुण निराकार है, वही परमात्मा भक्तो के प्रेम वश सगुण साकार हो जाता है। इसलिए सगुण, निर्गुण दोनो मे कोई भेद नही है
निर्गुण परमात्मा सगुण कैसे बनता है?

उदाहरण - ① आप सभी के घर मे नल मोटर लगी है। आप लोग उससे एक लोटा जल भरकर हाथ मे पकड़ने का प्रयास करे क्या जल आपके हाथो मे पकड़ मे आयेगा नही।
किन्तु इसी जल को लोटे मे भरकर फ्रिज मे रख दो जल बर्फ बन जायेगा और पकड़ मे आ जायेगा।
ठीक इसी भांति परमात्मा जल रूप मे निर्गुण स्वरूप है पकड़ मे नही आता किन्तु कोई भक्त यदि प्रेम भाव से भगवान को देखने का प्रयास करता है तो वही निर्गुण प्रभु भक्तो के प्रेम बस सगुण साकार बन जाते है।

② उदा० आपने प्रायः ▬ वर्षा होते तो देखी है, वर्षा की बूंदो को हाथ मे पकड़कर दीखिए क्या पकड़ मे आयेगी नही।

40

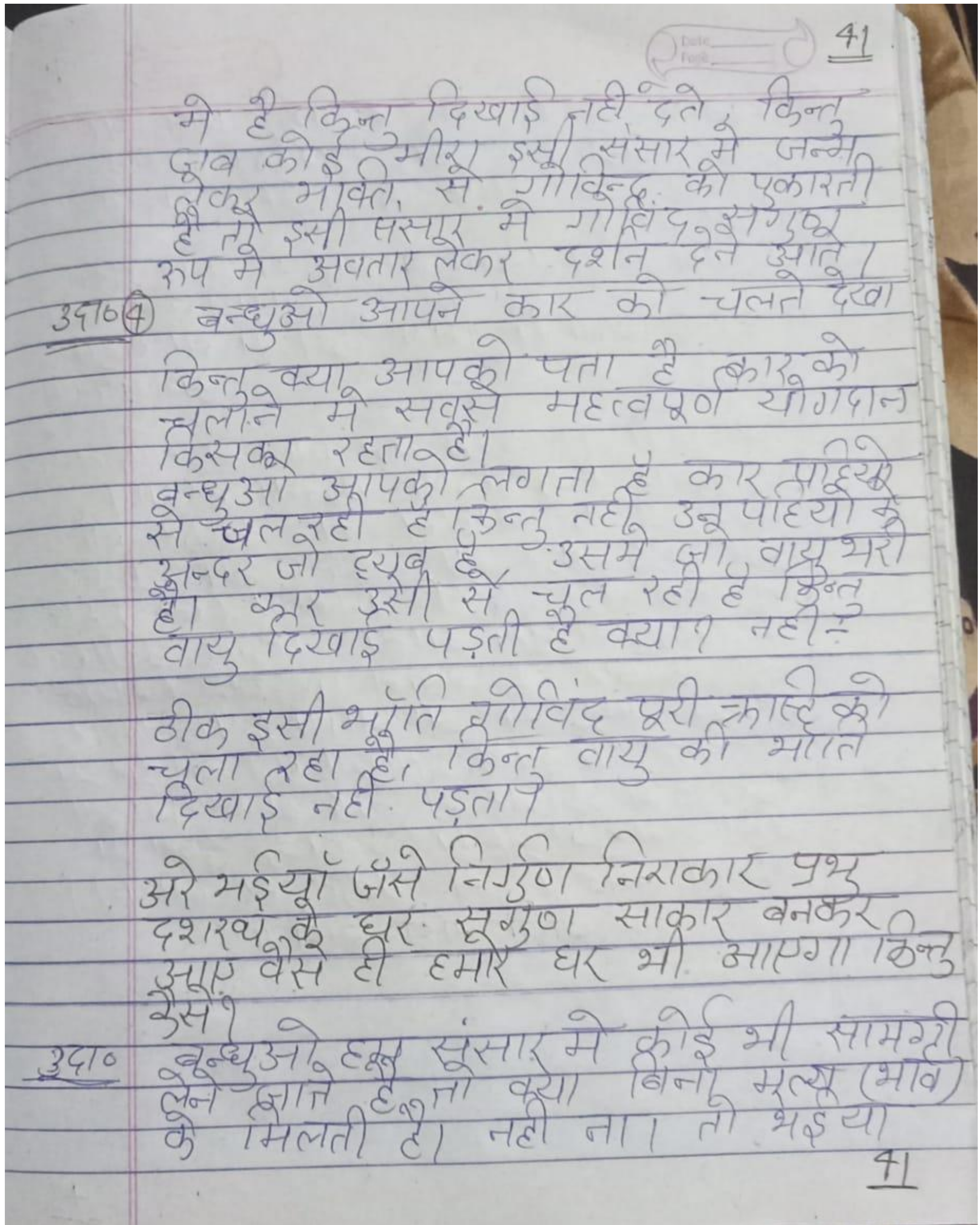
किन्तु कभी-2 वर्षा के साथ ओले भी गिरते है, जल से ही ओले बने है। जल पकड़ मे नही आता, किन्तु ओले पकड़ मे आजाते है।

ठीक इसी भाँति परमात्मा को जो लोग बाहर की आँखो से देखते है उन्हे परमात्मा निर्गुण (जल) रुप मे दिखाई देते जो पकड़ मे नही आते किन्तु जो प्रेम भाव से अन्दर के नेत्रों से भगवान को प्रेम से पाने का प्रयास करते है। मेरे प्रभु उनके लिए ओला (द्रव से ठोस) बनकर आकर दर्शन देते है। और निर्गुण से सगुण बन जाते है।

जो परमात्मा निर्गुण, निराकार है उसे कोई, मीरा, कर्मा, गोपी, ग्वाला, यशोदा, रसखान, सूरदास, ताजखान जैसे भक्त प्रेम बस सगुण और साकार रुप मे प्राप्त करते है।

उदा(3) बन्धुओ घी हमे किससे प्राप्त होता दूध से दही, दही से छाछ, उससे मक्खन, मक्खन से घी बनता है। घी बना तो दूध से, किन्तु दूध मे घी दिखाई नही देता। ठीक इसी प्रकार निर्गुण प्रभु इस संसार मे हम सभी के मध्य

40



41

मे है किन्तु दिखाई नहीं देते, किन्तु
जब कोई मीरा इसी संसार मे जन्म
लेकर भक्ति से गोविन्द को पुकारती
है तो इसी संसार मे गोविंद सगुण
रूप मे अवतार लेकर दर्शन देने आते।

उदा० (4) बन्धुओ आपने कार को चलते देखा
किन्तु क्या आपको पता है कार को
चलाने मे सबसे महत्वपूर्ण योगदान
किसका रहता है
बन्धुओ आपको लगता है कार पहियो
से चल रही है किन्तु नहीं उन पहियो के
अन्दर जो ट्यूब है उसमे जो वायु भरी
है कार उसी से चल रही है किन्तु
वायु दिखाई पड़ती है क्या? नहीं।

ठीक इसी भाँति गोविंद पूरी सृष्टि को
चला रहा है, किन्तु वायु की भाँति
दिखाई नही पड़ता।

अरे भईया जैसे निर्गुण निराकार प्रभु
दशरथ के घर सगुण साकार बनकर
आए वैसे ही हमारे घर भी आएगा किन्तु
कैसे?

उदा० बन्धुओ हम संसार मे कोई भी सामग्री
लेने जाते है तो क्या बिना मूल्य (भाव)
के मिलती है। नही ना। तो भईया

41

42

जब संसार मे कोई सामग्री बिना भाव के नही मिलती है तो निर्गुण निराकार ब्रह्म बिना भाव के तुम्हारे घर कैसे आयेगा।

दोहा- जब भाव बिना बाजार मे कोई वस्तु मिले न मोल।
भाव बिना मै मिलू कैसे मै तो बहुत अनमोल॥

बन्धुओ परमात्मा को जल से बर्फ बनाने के लिए एक कार्य करना होगा। भावना की बोतल मे ठाकुर जी को कैद कर लो हृदय रुपी फ्रीजर मे रख लो। जैसे निर्गुण (जल) हाथ मे पकड़ मे नही आता किन्तु उसी जल को फ्रीजर मे रखने पर बर्फ (सगुण) रुप से पकड़ मे आ जाता इसी प्रकार गोविंद भी जब भावना की बोतल से हृदय रुपी फ्रीजर मे कैद हो जायेगे तो वही निर्गुण ब्रह्म आपके हृदय मे सगुण स्वरुप मे प्रकट हो जायेगे।

॥ बोलो राधे राधे ॥

(4) चौथा प्रश्न शौनकादि मुनियों ने किया था कि भगवान के कुल अवतार कितने है?

43

उत्तर- बन्धुओ भगवान नारायण श्री हरि ही मुख्य भगवान है। किन्तु जब-2 किसी भक्त पर उनके प्रिय पर कष्ट पड़ता है। तब-2 भगवान भिन्न-2 अवतार लेकर प्रकट होते है। बन्धुओ अवतार भी कई प्रकार के होते है।

(1) अंशावतार (कलावतार) - पृथ्वी पर भगवान का अवतार अधिकतम 16 कलाओं के साथ ही हो सकता है, तो 1-16 कलाओं के साथ अवतरित होने पर वे अंशावतार अथवा कलावतार कहलाते है।

(2) पूर्णावतार - जो ईश्वर की सभी 16 कलाओं के साथ अवतरित हो उन्हे पूर्णावतार कहा जाता है। श्री हरि के दशावतार में केवल श्री कृष्ण ही उन सभी 16 कलाओं के साथ अवतरित होते है। इसलिए उन्हे ही पूर्णावतार कहा जाता है।

(3) कल्पावतार - जो अवतार कल्प मे एक बार ही होते है उन्हे कल्पावतार कहा जाता है।

(4) मन्वन्तरावतार - एक मन्वन्तर मे एक बार अवतरित होने वाले मन्वन्तरावतार कहे जाते है।

43

44

(5) लीलावतार - भगवान विष्णु के 24 अवतार लीला अवतार कहलाते हैं।

(1) स एव प्रथमं देवः कौमारं सर्गमास्थितः।
चचार दुश्चरं ब्रह्मा, ब्रह्मचर्यमखण्डितम् ॥

अर्थ- बन्धुओ प्रथम अवतार के रूप मे सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार इन चार ब्राह्मणो के रूप मे पधारे।

इसके उपरान्त 23 और अवतार क्रमशः इस प्रकार है।

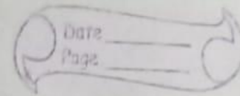
(2) वाराह अवतार (3) संत नारद (4) नर और नारायण
(5) कपिलदेव (6) दत्तात्रेय जी (7) यज्ञ भगवान
(8) श्री ऋषभदेव जी (9) पृथु जी (10) मत्स्य अवतार
(11) कच्छप अवतार (12) धन्वन्तरि अवतार
(13) मोहिनी (14) श्री नृसिंह भगवान
(15) वामन भगवान (16) श्री परशुराम जी
(17) महर्षि वेदव्यास जी (18) प्रभु श्री राम

45

(19) श्री बलराम जी (शेषवतार)
(20) श्री कृष्ण अवतार
(21) हरि अवतार
(22) हंस अवतार
(23) बुद्ध अवतार
(24) काल्कि अवतार

बन्धुओ आप सभी विचार कर रहे होगे कि ये भगवान के इतने अवतार क्यो भगवान तो एक ही होना चाहिए। किन्तु हमारे यहा तो वर्णन आता है कि 33 कोटि भगवान है। बन्धुओ कोटि के 2 अर्थ होते है।
(1) कोटि - करोड़
(2) प्रकार - कोटि
प्रायः यह प्रमाण मिलता है कि हमारे यहा 33 प्रकार के देव है। किन्तु उन सभी के मूल श्री कृष्ण ही है हमारे पिता।

उदा० जैसे हमारे जीवन मे हमारे पिता एक ही होते है। किन्तु हमारे अन्य भी सम्बन्धी चाचा ताऊ बाबा के रूप मे होते है जिनके भीतर एक खून होता है किन्तु सबको हम अलग-2 सम्बोधन करके बुलाते है। पिता हमारे एक ही होते है। ठीक इसी प्रकार हमारे जीवन मे भी हमारे नारायण एक ही है श्रीकृष्ण



46

किन्तु जब-2 भक्तो पर कष्ट पड़ा तब-2 मेरे प्रभु ने किसी न किसी रुप मे अवतार लेकर अपने भक्तो की रक्षा की इसलिए भगवान के रुप तो अनेक है किन्तु जैसे हमारे पिता एक है। वैसे ही नारायण श्री कृष्ण भी प्रमुख है।

गोस्वामी जी कहते-

चौ० हरि व्यापक सर्बत्र समाना।
प्रेम ते प्रगट होहि मै जाना॥
हरि अनंत हरि कथा अनंता।
कहहि सुनहि बहु विधि सब संता॥

अर्थ- बन्धुओ परमात्मा तो कण-2 मे विराजमान है। जब-2 भक्तो पर कष्ट पड़ा तब-2 मेरे नारायण ने कभी वाराह, कभी नृसिंह बनकर भक्तो की रक्षा करी तो भइया मुख्य श्री नारायण है। इनके 24 अवतार हुए इनमे दो सर्वाधिक विख्यात अवतार है। (1) राम (2) कृष्ण

(5) पाँचवा प्रश्न किया कि किस-2 अवतार मे कौन-2 सी लीला की?

उत्तर- बन्धुओ इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए सूत जी ने शौनकादि मुनियो को

भगवान ने किस-2 अवतार मे कौन-2 सी लीला की सभी श्रवण पान कराए।

Ex - वाराह अवतार कथा, कामिविस्तार, कपिल अवतार, हिरण्यकश्यपु उद्धार, नरसिंह लीला आदि की कथा का श्रवण पान कराया।

प्रश्न-6 भगवान जब धर्म की रक्षा के लिए ही आते है। तो जब द्वापर युग से भगवान श्री कृष्ण लीलापूर्ण करके अपने धाम चले गए तो ये धर्म किसकी शरण मे गया। इसकी रक्षा किसने की ?

उत्तर - सूत जी कहते शौनकादि मुनियो से - जब भगवान श्री कृष्ण अपनी लीला पूर्ण करके इस धरा धाम से जा रहे थे तभी उद्धव जी ने गोविंद से कहा प्रभु आप चले जायेगे तो ये धर्म तो अकेला ही रह जायेगा।
तब जाते-2 भगवान ने कहा कि मै अपने भक्तो को कभी अकेला नही छोड़ सकता। श्री कृष्ण भगवान कहते मै सूक्ष्म रूप मे आज से श्रीमद भागवत जी मे विराजमान होकर समस्त भक्तो के कष्ट दूर करूगा।
भगवान श्री कृष्ण के शरीर से एक दिव्य ज्योति निकली और भागवत जी के अन्दर विराजित हो गई।

48

श्लोक- तेनेयं वाङ्मयी मूर्तिः प्रत्यक्षा वर्तते हरेः।
तिरोधाय प्रविष्टोऽयं श्रीमद्भागवतार्णवम्॥

अर्थ- बन्धुओ भगवान श्री कृष्ण ही सूक्ष्म रुप मे भागवत जी मे विराजित हो गए इसलिए भागवत जी को वाङ्मयी प्रतिमूर्ति (ठाकुर जी) की बोलते है। भागवत जी कोई साधारण पुस्तक नही है।

This is a not book.

बन्धुओ भागवत जी साक्षात नारायण का वाङ्मय स्वरुप है। इसलिए भागवत जी को कही भी विराजित करने से पूर्व नीचे कोई आसन अवश्य बिछाए। स्नान करके ही भागवत जी के ग्रन्थ का अध्ययन हमे करना चाहिए। अपने पूजास्थल मे एक वस्त्र मे भागवत जी को विराजित करके नित्यप्रति भागवत जी का पूजन, अर्चन करना चाहिए। भागवत जी इसलिए नही है कि अपनी किताबो की अलमारी मे उन्हे सजाले और भागवत जी पर धूल जम जाए हम प्रायः देखते है लोगो के घरो मे ग्रन्थ रखे तो है उन्हे कोई पढने वाला नही है, ग्रन्थो पर धूल जम गई है। और कम से कम ग्रन्थ तो

पढ़ नही सकते उसका पूजन तो कर सकते है। नित्यप्रति भागवत जी के कुछ श्लोक हम सभी को ठाकुर जी को नित्यप्रति सुनाने चाहिए।

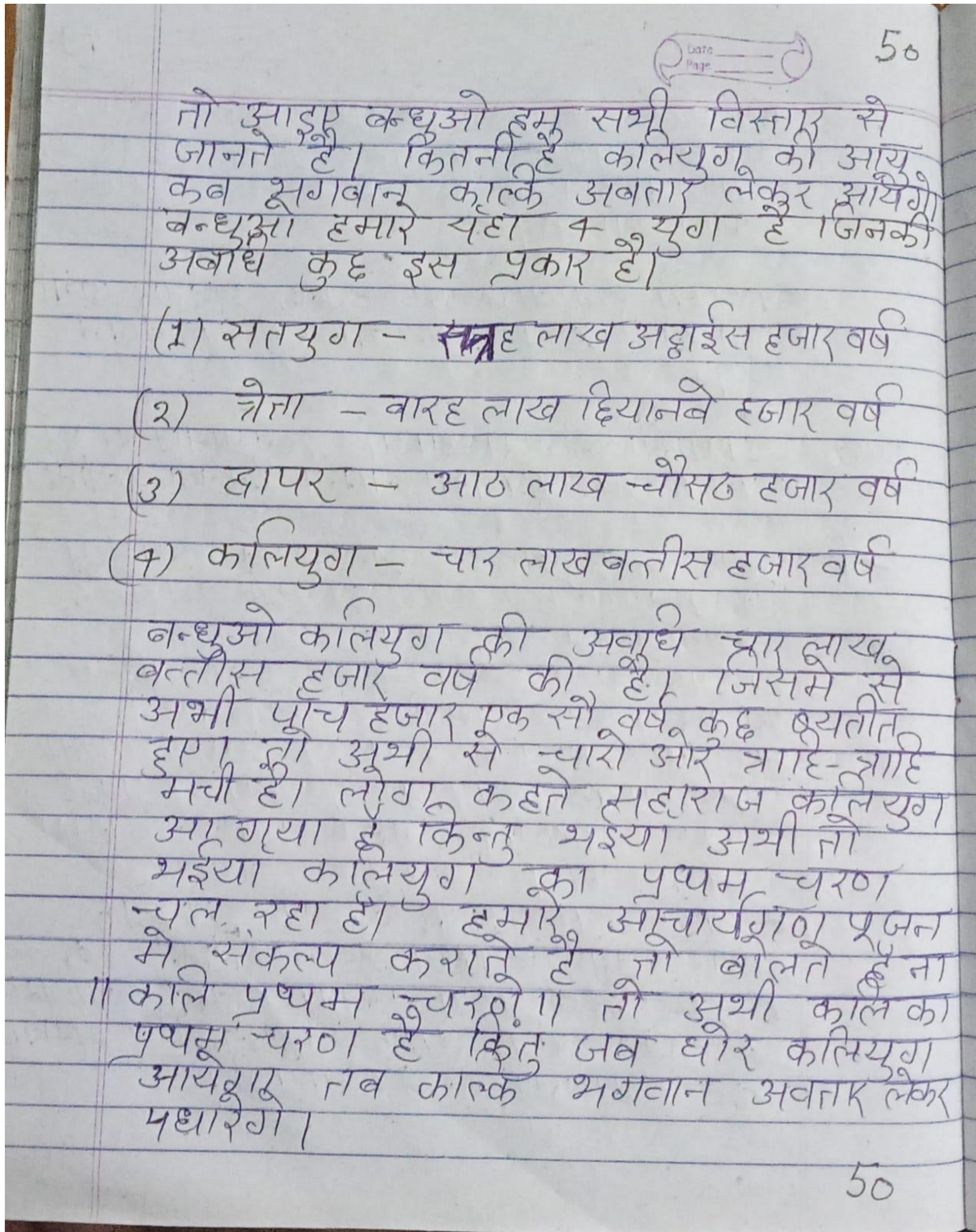
बन्धुओ भगवान का कल्कि अवतार अभी हुआ नही है। भागवत जी मे वर्णन है।

श्लोक- अथासौ युगसंध्यायां दस्युप्रायेषु राजसु। जनिता विष्णुयशसो नाम्ना कल्किर्जगत्पतिः॥

अर्थ- जब कलयुग का अन्त समय समीप होगा। और राजालोग प्रायः लुटेरे हो जायेगे। तब जगत के रक्षक भगवान विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर कल्किरूप मे अवतीर्ण होगे। कल्कि भगवान सम्भल ग्राम मे अपने पिता की पांचवी संतान के रूप मे प्रकट होकर आयेगे। इनकी माता का नाम सुमति होगा।

बन्धुओ आप सभी के मन मे यह जानने की च्येष्ठा होती होगी कि कलियुग का अन्तसमय कब आयेगा कलियुग की आयु कितनी है? भगवान कब अवतार लेके आयेगे।

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



50

तो आइए बन्धुओ हम सभी विस्तार से जानते है। कितनी है कलियुग की आयु कब भगवान् काल्कि अवतार लेकर आयेगे। बन्धुओ हमारे यहा 4 युग है जिनकी अवधि कुछ इस प्रकार है।

(1) सतयुग - सत्रह लाख अट्ठाईस हजार वर्ष

(2) त्रेता - बारह लाख छियानबे हजार वर्ष

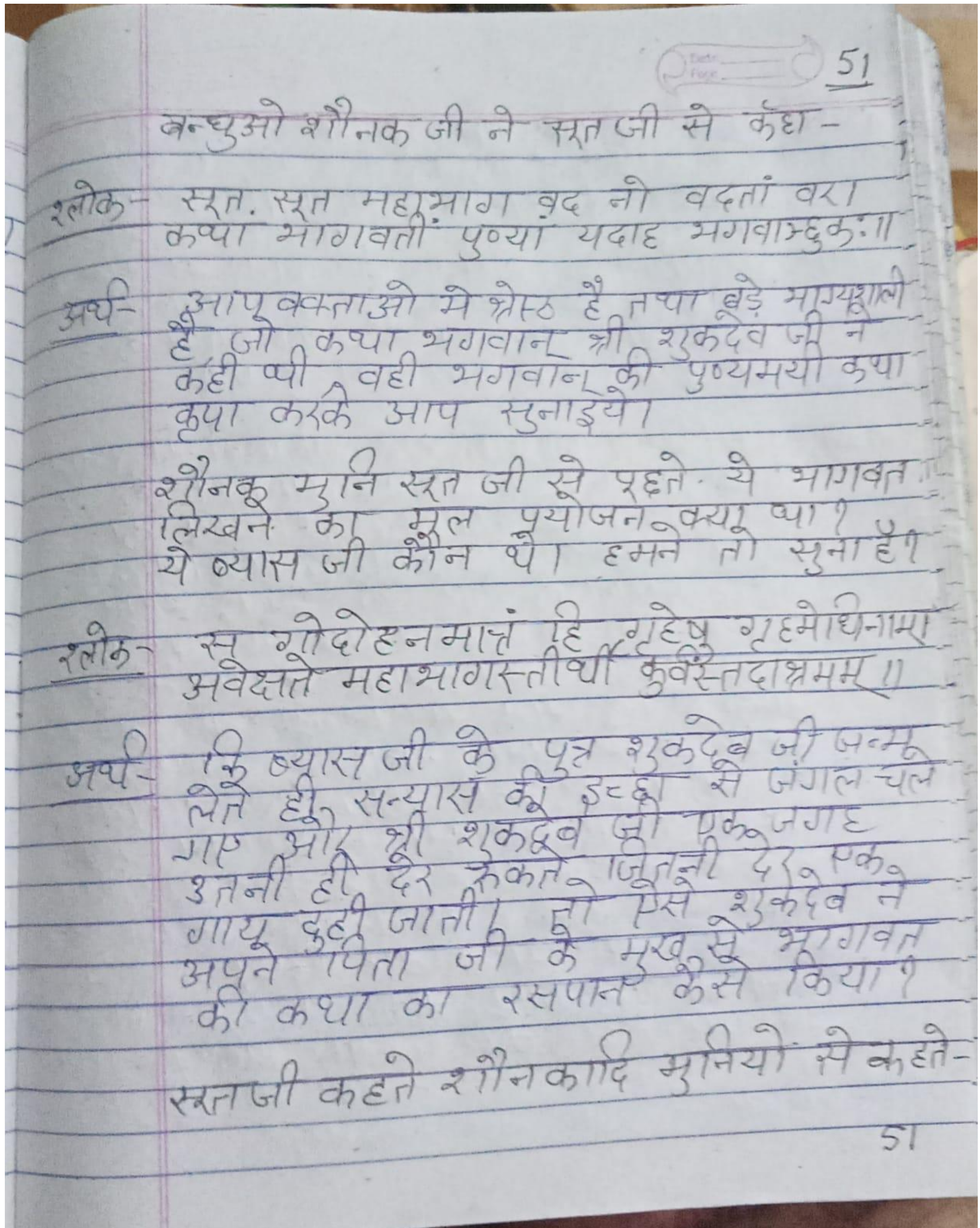
(3) द्वापर - आठ लाख चौसठ हजार वर्ष

(4) कलियुग - चार लाख बत्तीस हजार वर्ष

बन्धुओ कलियुग की अवधि चार लाख बत्तीस हजार वर्ष की है। जिसमे से अभी पाँच हजार एक सौ वर्ष कुछ व्यतीत हुए। तो अभी से चारो ओर त्राहि-त्राहि मची है। लोग कहते महाराज कलियुग आ गया है किन्तु भईया अभी तो भईया कलियुग का प्रथम चरण चल रहा है। हमारे आचार्यगण पूजन मे संकल्प कराते है तो बोलते है ना ।। कलि प्रथम चरणे ।। तो अभी कलि का प्रथम चरण है किंतु जब घोर कलियुग आयेगा तब काल्कि भगवान अवतार लेकर पधारेगे।

50

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



51

बन्धुओ शौनक जी ने सूत जी से कहा -

श्लोक- सूत. सूत महाभाग वद नो वदतां वरा
कथां भागवतीं पुण्यां यदाह भगवाञ्छुकः॥

अर्थ- आप वक्ताओ मे श्रेष्ठ है तथा बड़े भाग्यशाली है जो कथा भगवान श्री शुकदेव जी ने कही थी, वही भगवान की पुण्यमयी कथा कृपा करके आप सुनाइये।

शौनक मुनि सूत जी से पूछते ये भागवत लिखने का मूल प्रयोजन क्या था? ये व्यास जी कौन थे। हमने तो सुना है?

श्लोक- स गोदोहनमात्रं हि गृहेषु गृहमेधिनाम।
अवेक्षते महाभागस्तीर्थी कुर्वंस्तदाश्रमम॥

अर्थ- कि व्यास जी के पुत्र शुकदेव जी जन्म लेते ही सन्यास की इच्छा से जंगल चले गए और श्री शुकदेव जी एक जगह इतनी ही देर रुकते जितनी देर एक गाय दुही जाती, तो ऐसे शुकदेव ने अपने पिता जी के मुख से भागवत की कथा का रसपान कैसे किया?

सूत जी कहते शौनकादि मुनियो से कहते-

51

52

श्लोक- द्वापरे समनुप्राप्ते तृतीये युगपर्यये।
जातः पराशराद्योगी वासव्यां कलया हरेः॥

अर्थ- चतुर्युगी के तीसरे युग द्वापर मे महर्षि पराशर के द्वारा वसुकन्या सत्यवती के गर्भ से भगवान के कलावतार के रूप मे व्यास जी का जन्म हुआ।

⇒ एक दिन व्यास जी सरस्वती नदी मे स्नान करके एकान्त मे पवित्र स्थान मे बैठे हुए थे। व्यास जी भूत और भविष्य को जानने वाले थे। उन्होंने देखा संसार के लोग समय के फेर से प्रायः अपने उद्देश्य को भूलकर माया से ग्रसित होकर दुःख को प्राप्त कर रहे है। व्यास जी के मन मे चिन्ता व्याप्त हो गई विचार करने लगे संसार के मनुष्यों का दुख कैसे दूर कर पाऊं। उन्होंने विचार किया चातुर्होत्र कर्म लोगो का हृदय शुद्ध करने वाला होता है। इस दृष्टि से यज्ञों का विस्तार करने हेतु उन्होंने एक वेद के चार भाग कर दिए।
व्यास जी के द्वारा ऋक्, यजुः, साम, अथर्व इन चार वेदो को लिखा गया।

53

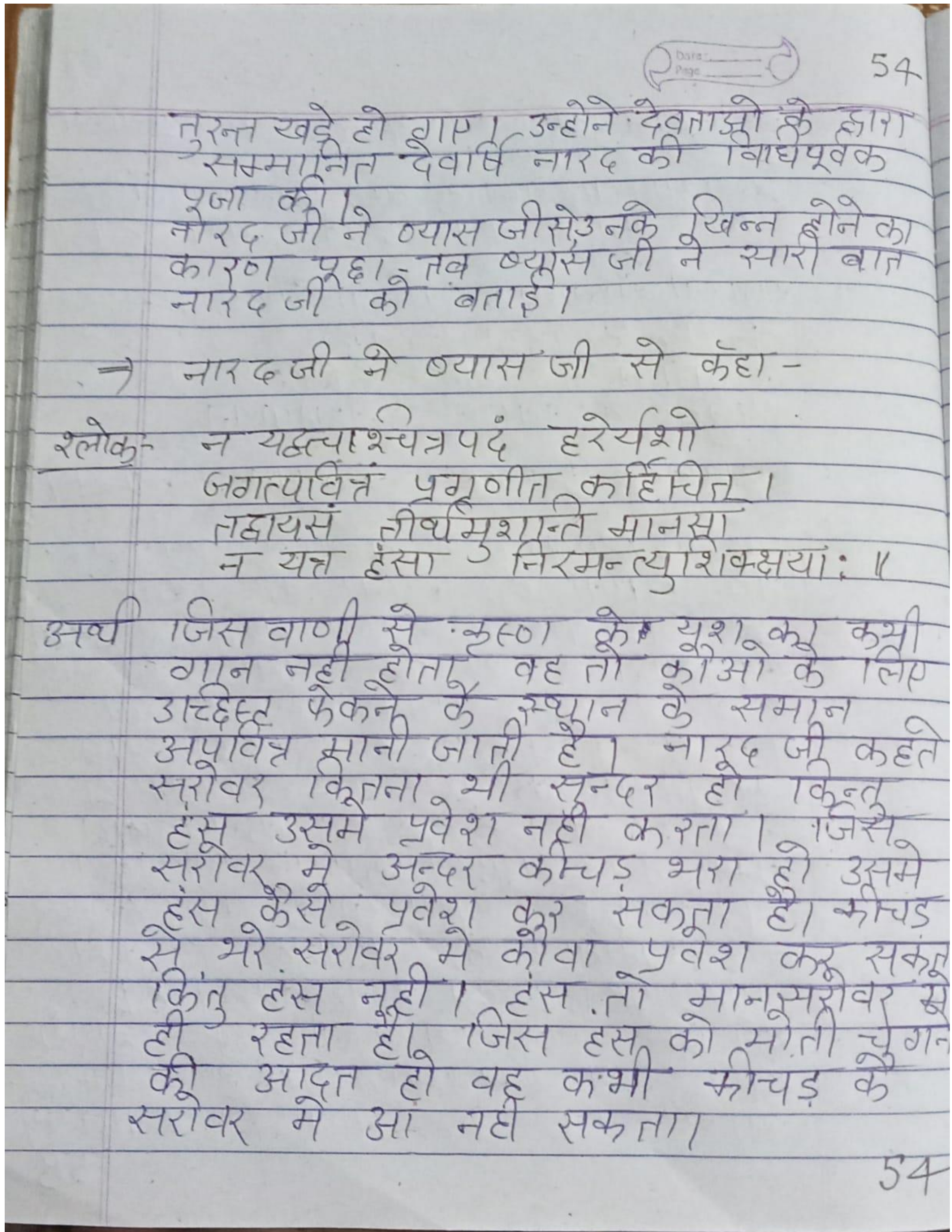
श्लोक- इतिहासपुराणं च पञ्चमो वेद उच्यते ॥

बन्धुओ चार वेदो के बाद इतिहास और पुराण को पाँचवा वेद कहा गया है।

सूत जी शौनकादि मुनियो से कहते-
ऋग्वेद के विद्वान - पैल
सामगान के विद्वान - जैमिनि
यजुर्वेद के विद्वान - वैशम्पायन
अथर्ववेद के विद्वान - दरुणनन्दन जी हुए।

बन्धुओ व्यास जी 4 वेदो, के उपरान्त 17 पुराणो की रचना की किन्तु उनके हृदय को शान्ति नही हुई उन्होने महाभारत ग्रन्थ की रचना की किन्तु जब मन को शांति नही हुई तो एक दिन बैठे-2 व्यास जी मन मे विचार करने लगे- अवश्य ही मैने भगवान को प्राप्त कराने वाले धर्मो का प्रायः निरूपण नही किया है। वे ही धर्म परमहंसो को प्रिय है और वे ही भगवान को प्रिय हो हो न हो मेरी अपूर्णता का यही कारण है। यही विचार कर व्यास जी खिन्न हो रहे थे। उसी समय देवर्षि नारद जी आ पहुँचे। उन्हे आया देख व्यास जी

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



54

तुरन्त खड़े हो गए। उन्होने देवताओ के द्वारा सम्मानित देवर्षि नारद की विधिपूर्वक पूजा की।
नारद जी ने व्यास जी से उनके खिन्न होने का कारण पूछा - तब व्यास जी ने सारी बात नारद जी को बताई।

→ नारद जी ने व्यास जी से कहा -

श्लोक - न यद्वचश्चित्रपदं हरेर्यशो
जगत्पवित्रं प्रगृणीत कर्हिचित्।
तद्वायसं तीर्थमुशन्ति मानसा
न यत्र हंसा निरमन्त्युशिक्क्षया: ॥

अर्थ जिस वाणी से कृष्ण के यश का कभी गान नही होता, वह तो कौओ के लिए उच्छिष्ट फेकने के स्थान के समान अपवित्र मानी जाती है। नारद जी कहते सरोवर कितना भी सुन्दर हो किन्तु हंस उसमे प्रवेश नही करता। जिस सरोवर मे अन्दर कीचड़ भरा हो उसमे हंस कैसे प्रवेश कर सकता है। कीचड़ से भरे सरोवर मे कौवा प्रवेश कर सकता किंतु हंस नही। हंस तो मानसरोवर मे ही रहता है। जिस हंस को मोती चुगने की आदत हो वह कभी कीचड़ के सरोवर मे आ नही सकता।

54

नारद जी ने कहा है व्यास जी आपने ग्रन्थो की रचना तो की। संसार के कार्यो मे फंसे रहने वाले जो लोग है, उनके लिए वह ग्रंथ अच्छे है। किन्तु हंसो के समान जो रामकृष्ण के भक्त है। उनके लिए जबतक भागवत की रचना नही करोगे। आपके मन को संतोष नही मिलेगा।

व्यास जी बोले अब मै क्या करु मुझसे कुछ नही हो सकता आँखो से दिखना भी कम हो गया। ठीक प्रकार से कोई कार्य भी नही कर पाता चौथा पन आ गया। अब इस उम्र मे भागवत की रचना नही कर सकता।

=> नारद जी ने व्यास जी से कहा संतो के चरणो का आश्रय लेलो तो जो कार्य आप से नही सिद्ध हो पा रहा वह भी सिद्ध हो जायेगा।

= नारद जी कहते संतो की कृपा क्या होती है। इसे मुझसे अच्छा कोई नही जानता। मैने संतो की कृपा का अनुभव किया है।

=> तब नारद जी ने व्यास जी को अपने पूर्व जन्म की कथा का प्रसंग सुनाया।

श्लोक- [illegible] प्रथम स्कन्ध, पंचम अध्याय :-

अहं पुरातीतभवेऽभवं मुने
दास्यास्तु कस्याश्चन वेदवादिनाम् ।
निरूपितो बालक एव योगिनां
शुश्रूषणे प्रावृषि निर्विविक्षताम् ॥२३

अर्थ:- नारद जी व्यास जी से कहते मुने मैं पिछले कल्प मे अपने पूर्वजीवन मे मैं ब्राह्मणो की एक दासी का लड़का था।

=> मेरे पिता की मृत्यु बचपन मे हो गई। मेरी माँ ने एक आश्रम मे जाकर संतो से निवेदन किया। महाराज मुझे अपने आश्रम मे रख लीजिए, मैं आश्रम मे नित्य प्रति सेवा करती रहूंगी। संतो ने रामदास की माँ को आश्रम मे रख लिया। संतो के आश्रम मे सुबह शाम, झाड़, बहार कर देती। जो कुछ प्रसादी मिलती उसी से अपना और हमारा दोनो का पालन पोषण करती।

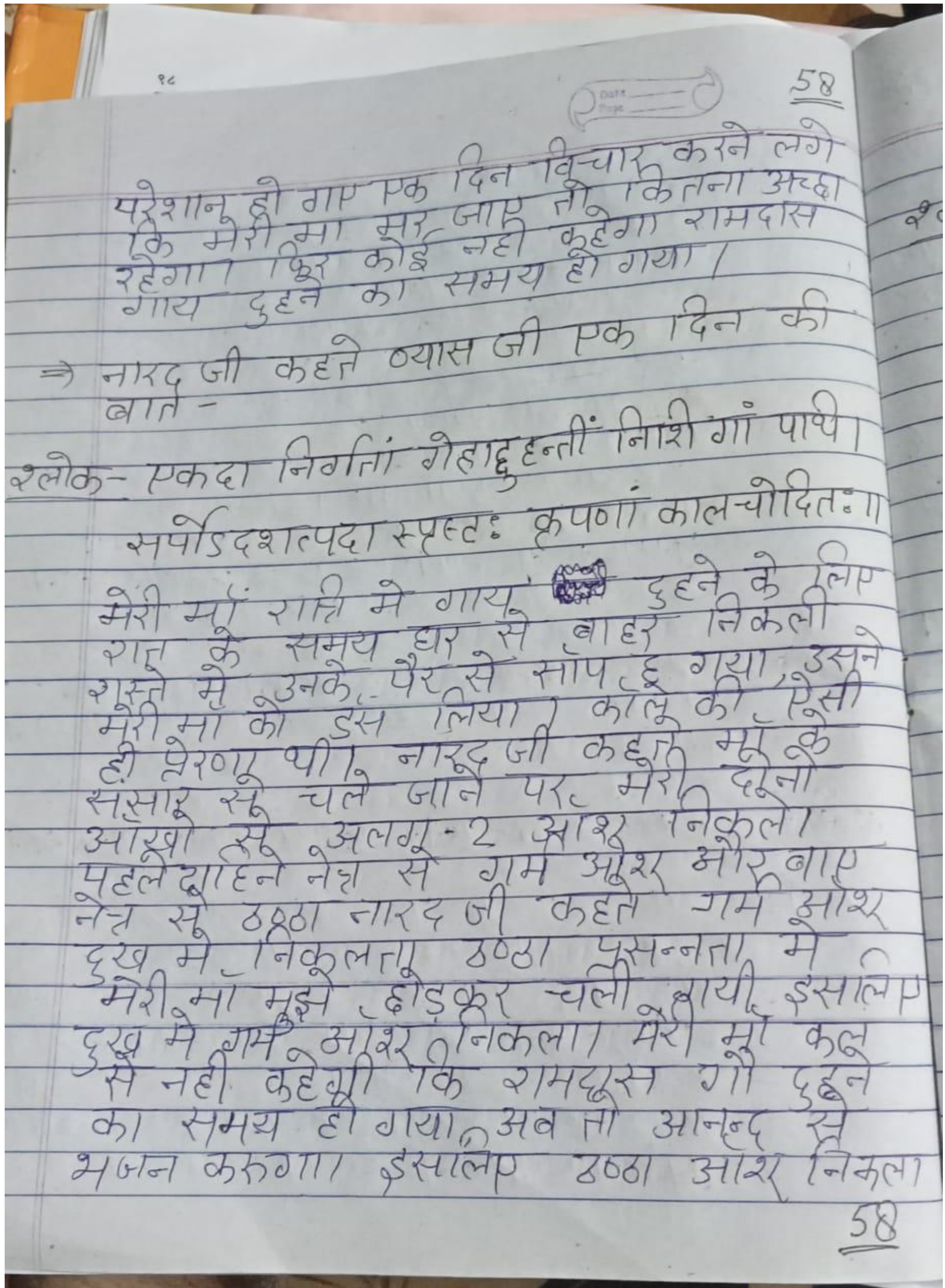
=> नारद जी व्यास जी से कहते एक दिन आश्रम मे बाहर से कुछ संत चातुर्मास्य

करने के लिए पधारे। मुझे उनकी सेवा करने के लिए नियुक्त किया गया। मैं बड़े अच्छे तरीके से संतो की सेवा किया करता था। एक दिन संतभगवान ने प्रसन्न होकर मुझसे कहा बेटा इस संसार मे, स्त्री, पुत्र, धन, रिश्तेदार कोई भी तुम्हारे साथ नहीं जाते। केवल हरिनाम ही साथ जाता है। इसलिए समय निकालकर अधिक-२ से अधिक हरि नाम किया करो।
नारद जी कहते एक दिन चातुर्मास्य समाप्त हो गया और सन्तभगवान के जाने का समय हो गया।

⇒ जाते-जाते संत भगवान मुझे एक मंत्र दे गए और कहा इसका जप करना।

श्लोक- नमो भगवते तुभ्यं वासुदेवाय धीमहि

अर्थ- नारद जी ने संतो के जाने के पश्चात इस मंत्र को जपना प्रारम्भ कर दिया। किंतु जैसे ही नारद जी जप करने लगे (नारद अर्थात रामदास) उनकी माँ किसी न किसी कार्य के लिए उनको बुला लेती। नारद जी का भजन भी नहीं हो पाता। नारदजी

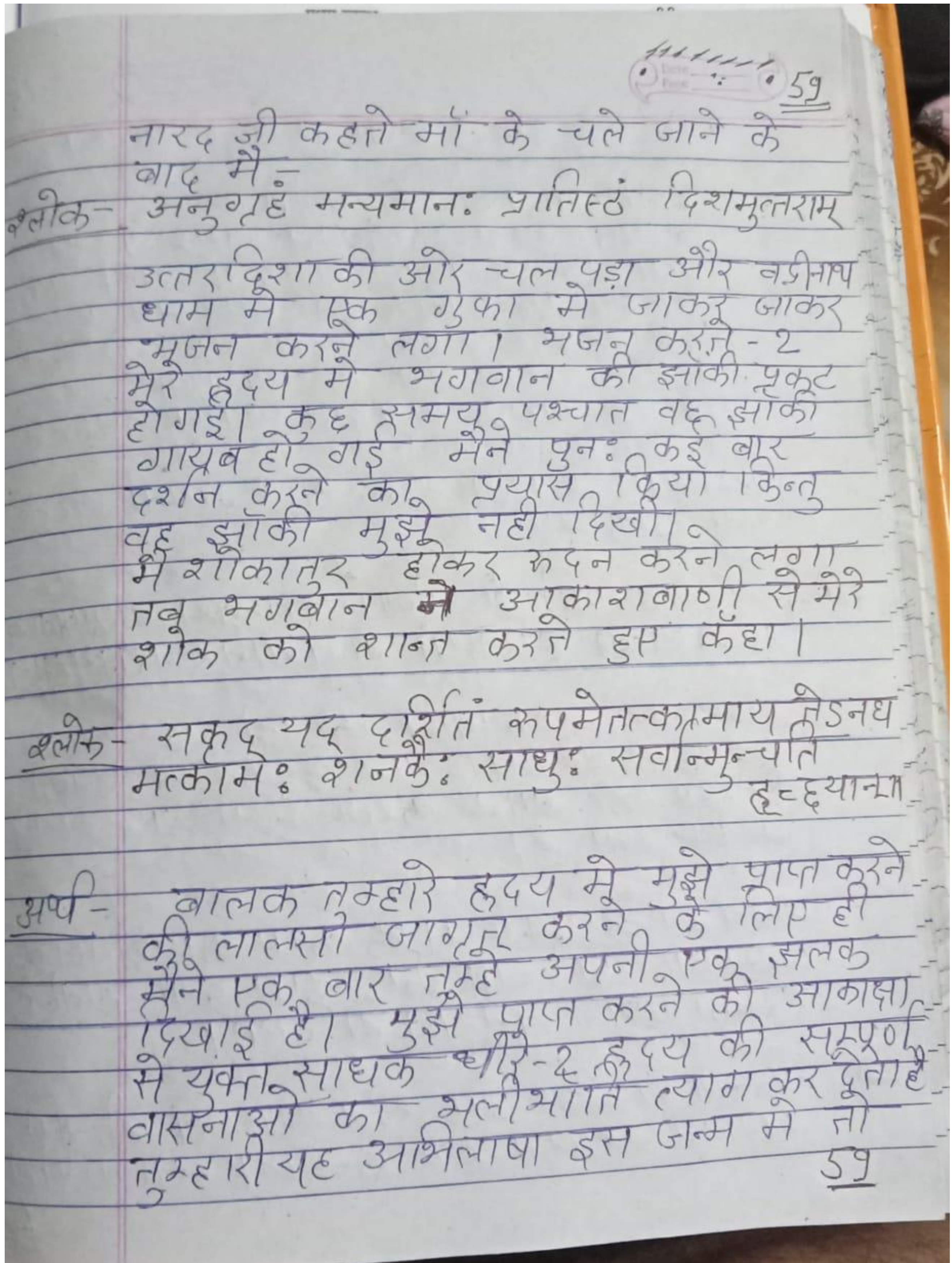


परेशान हो गए एक दिन विचार करने लगे
कि मेरी मां मर जाए तो कितना अच्छा
रहेगा। फिर कोई नही कहेगा रामदास
गाय दुहने का समय हो गया।

⇒ नारद जी कहते व्यास जी एक दिन की
बात -

श्लोक- एकदा निर्गतां गेहाद्दुहन्तीं निशि गां पथि।
सर्पोऽदशत्पदा स्पृष्टः कृपणां कालचोदितः॥

मेरी मां रात्रि मे गाय दुहने के लिए
रात के समय घर से बाहर निकली
रास्ते मे उनके पैर से सांप छू गया, उसने
मेरी मां को डस लिया। काल की ऐसी
ही प्रेरणा थी। नारद जी कहते मां के
संसार से चले जाने पर मेरी दोनो
आंखो से अलग-2 आंसू निकले।
पहले दाहिने नेत्र से गर्म आंसू और बाए
नेत्र से ठण्डा नारद जी कहते गर्म आंसू
दुख मे निकलता ठण्डा प्रसन्नता मे
मेरी मां मुझे छोड़कर चली गयी इसलिए
दुख मे गर्म आंसू निकला। मेरी मां कल
से नही कहेगी कि रामदास गौ दुहने
का समय हो गया, अब तो आनन्द से
भजन करूंगा। इसलिए ठण्डा आंसू निकला



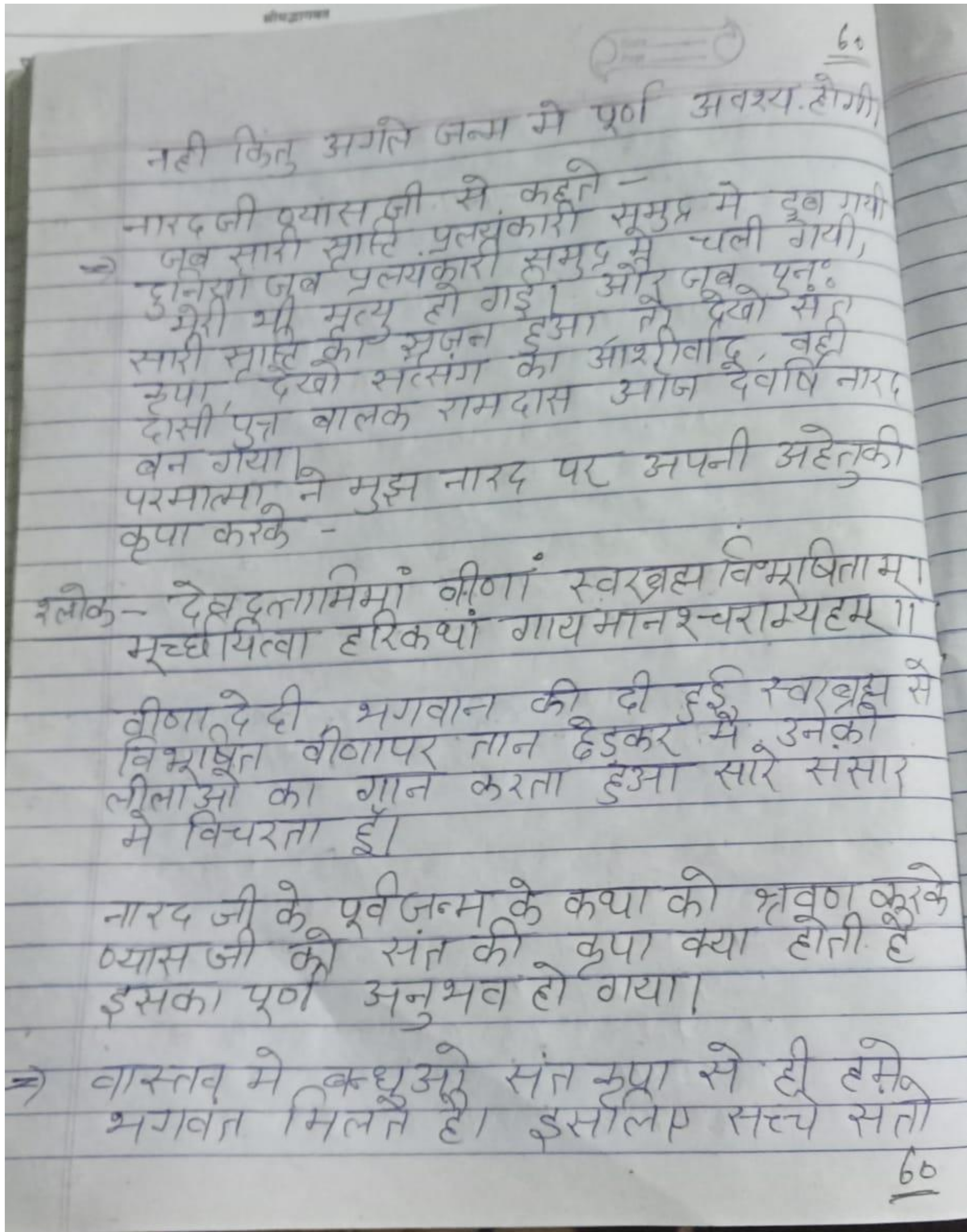
नारद जी कहते माँ के चले जाने के बाद मैं-

श्लोक- अनुग्रहं मन्यमानः प्रातिष्ठं दिशमुत्तराम्

उत्तरदिशा की ओर चल पड़ा और बद्रीनाथ धाम मे एक गुफा मे जाकर जाकर भजन करने लगा। भजन करते-2 मेरे हृदय मे भगवान की झांकी प्रकट होगई। कुछ समय पश्चात वह झांकी गायब हो गई मैंने पुनः कई बार दर्शन करने का प्रयास किया किन्तु वह झांकी मुझे नही दिखी। मै शोकातुर होकर रुदन करने लगा तब भगवान ने आकाशवाणी से मेरे शोक को शान्त करते हुए कहा।

श्लोक- सकृद् यद् दर्शितं रूपमेतत्कामाय तेऽनघ मत्कामः शनकैः साधुः सर्वान्मुन्चति हृच्छयान्॥

अर्थ- बालक तुम्हारे हृदय मे मुझे प्राप्त करने की लालसा जागृत करने के लिए ही मैंने एक बार तुम्हे अपनी एक झलक दिखाई है। मुझे प्राप्त करने की आकांक्षा से युक्त साधक धीरे-2 हृदय की सम्पूर्ण वासनाओ का भलीभांति त्याग कर देता है तुम्हारी यह अभिलाषा इस जन्म मे तो



60

नही किंतु अगले जन्म मे पूर्ण अवश्य होगी।

नारद जी व्यास जी से कहते –

⇒ जब सारी सृष्टि प्रलयंकारी समुद्र मे डूब गयी
दुनिया जब प्रलयंकारी समुद्र मे चली गयी,
मेरी भी मृत्यु हो गई। और जब पुनः
सारी सृष्टि का सृजन हुआ तो देखो संत
कृपा, देखो सत्संग का आशीर्वाद, वही
दासी पुत्र बालक रामदास आज देवर्षि नारद
बन गया।
परमात्मा ने मुझ नारद पर अपनी अहेतुकी
कृपा करके –

श्लोक– देवदत्तामिमां वीणां स्वरब्रह्म विभूषिताम।
मूर्च्छयित्वा हरिकथां गायमानश्चराम्यहम॥

वीणा दे दी, भगवान की दी हुई स्वरब्रह्म से
विभूषित वीणापर तान छेड़कर मैं उनकी
लीलाओं का गान करता हुआ सारे संसार
मे विचरता हूँ।

नारद जी के पूर्वजन्म के कथा को श्रवण करके
व्यास जी को संत की कृपा क्या होती है
इसका पूर्ण अनुभव हो गया।

⇒ वास्तव मे बन्धुओ संत कृपा से ही हमें
भगवत मिलते है। इसलिए सच्चे संतो

60

61

का संग हमे करना चाहिए।
बन्धुओ संत का संग तो हम करे किंतु हमे यह ज्ञात तो हो कि सच्चा संत कौन है।
करोणो के आश्रम बनाने वाले, लग्जरी जीवन जीने वाले ये कोई संत नही है।
बन्धुओ दो शब्द है।
(1) साधु - जिसके अन्दर सादिगी हो।
(2) स्वादू - भौतिक सुविधाओ के बिना रह नही पाता।

संत कौन है -

दोहा - सादगी शृंगार बन गई।
आयनो की हार हो गई॥

जिसका जीवन सादा है। जो बिना भौतिक संसाधनो के भी अपना जीवन व्यतीत कर लेता है। जो एक वस्त्र कटि और एक उत्तरीय वस्त्र के अलावा दूसरा वस्त्र नही रखता। जो अपने लिए कभी धन का संचय नही करता वही साधु है। बन्धुओ आज भी कुछ सच्चे संत है जो हम लोगो की द्रष्टि से दूर जाकर एकान्त मे गुफा मे भजन कर रहे है।

62

हमारे यहाँ कहते है-

दोहा- वृक्ष कबहुं न फल भखै, नदी न संचय नीर।
परमार्थ के काज से, साधुन धरा शरीर॥

अर्थ- जिस वृक्ष पर हजारो फल लगे होते है वह वृक्ष कभी भी अपने फलो को नही खाता नदी कभी भी अपने लिए जल का संचय नही करती। इसी प्रकार जो साधु जगत कल्याण के लिए जन्म लेकर आते है वह अपने लिए धन का संचय नही करते है। बन्धुओ लाल वस्त्र या सफेद वस्त्र पहनने से या जटा रखाने से कोई सन्त नही होता। सन्त भेष से नही, संत स्वभाव से बनते है। किसी व्यक्ति को सन्त का चोला पहने देखकर उसको संत नही मान लेना चाहिए। उसके गुण, कर्म, स्वभाव भी देखने चाहिए। जो संत भेष मे बगुला बनकर बैठा है उसके द्वारा जब कोई व्यक्ति ठगए जाता है। तो फिर उसकी श्रद्धा सच्चे संतो से भी उठ जाती है। इसलिए बहुत विचार करके संत की शरणागति गृहण करनी चाहिए।

⇒ आज कल तो लोग महाराज घर से परेशान हो जाते तो तुरन्त कहने लगते लो सम्हालो अपना घर हम तो चले

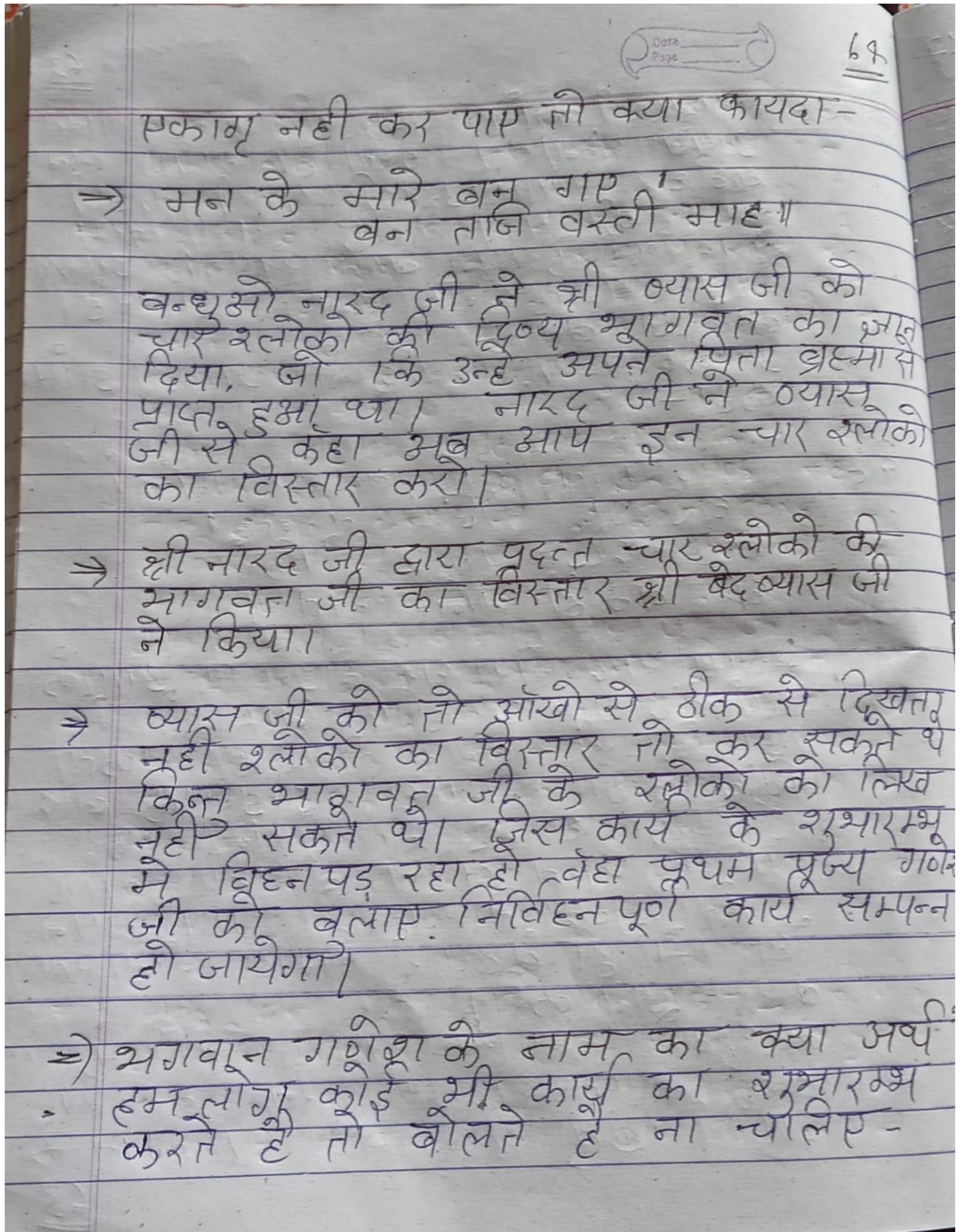
63

उदाहरण - बाबा जी बनने। एक बार एक व्यक्ति अपने पत्नी से दुखी हो गया। जब वह घर आता उसकी पत्नी कहती चाय की पत्ती खत्म, चीनी खत्म रोज-रोज के इन बातो से तंग आकर कहने लगा सुनो हम तो जा रहे बाबा जी बनने
उसकी पत्नी ने पीछे से आकर उससे कहा -

दोहा - यदि ये घर छोड़े, वो घर मिले।
घर को ताजिए तुरन्त।
घर छोड़े घर-2 फिरो
घर बैठे ही बनिए संत ॥

स्वामी यदि मेरा घर छोड़ने से आपको गोविंद का घर मिल जाए तो मै आपको संत बनने से नही रोकती किंतु अगर मेरा घर छोड़ने के बाद आपको घर-2 मे घूमना फिरे तो मै सन्त बनने नही दूगी। इससे अच्छा तो यह है आप अपने घर मे ही बैठकर नमक रोटी खा कर भजन करो।
बन्धुओ मन से अशान्त होने के कारण संत भजन करने वन मे जाते किंतु यदि वहा भी मन को

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



एकाग्र नही कर पाए तो क्या फायदा -

⇒ मन के मारे बन गए,
बन तजि बस्ती माहि॥

बन्धुओ नारद जी ने श्री व्यास जी को चार श्लोको की दिव्य भागवत का ज्ञान दिया, जो कि उन्हे अपने पिता ब्रह्मा से प्राप्त हुआ था। नारद जी ने व्यास जी से कहा अब आप इन चार श्लोको का विस्तार करो।

⇒ श्री नारद जी द्वारा प्रदत्त चार श्लोको की भागवत जी का विस्तार श्री वेदव्यास जी ने किया।

⇒ व्यास जी को तो आँखो से ठीक से दिखता नही श्लोको का विस्तार तो कर सकते थे किन्तु भागवत जी के श्लोको को लिख नही सकते थे। जिस कार्य के शुभारम्भ मे विघ्न पड़ रहा हो वहा प्रथम पूज्य गणेश जी को बुलाए निर्विघ्न पूर्ण कार्य सम्पन्न हो जायेगा।

⇒ भगवान गणेश के नाम का क्या अर्थ हम लोग कोई भी कार्य का शुभारम्भ करते है तो बोलते है ना चलिए -

65

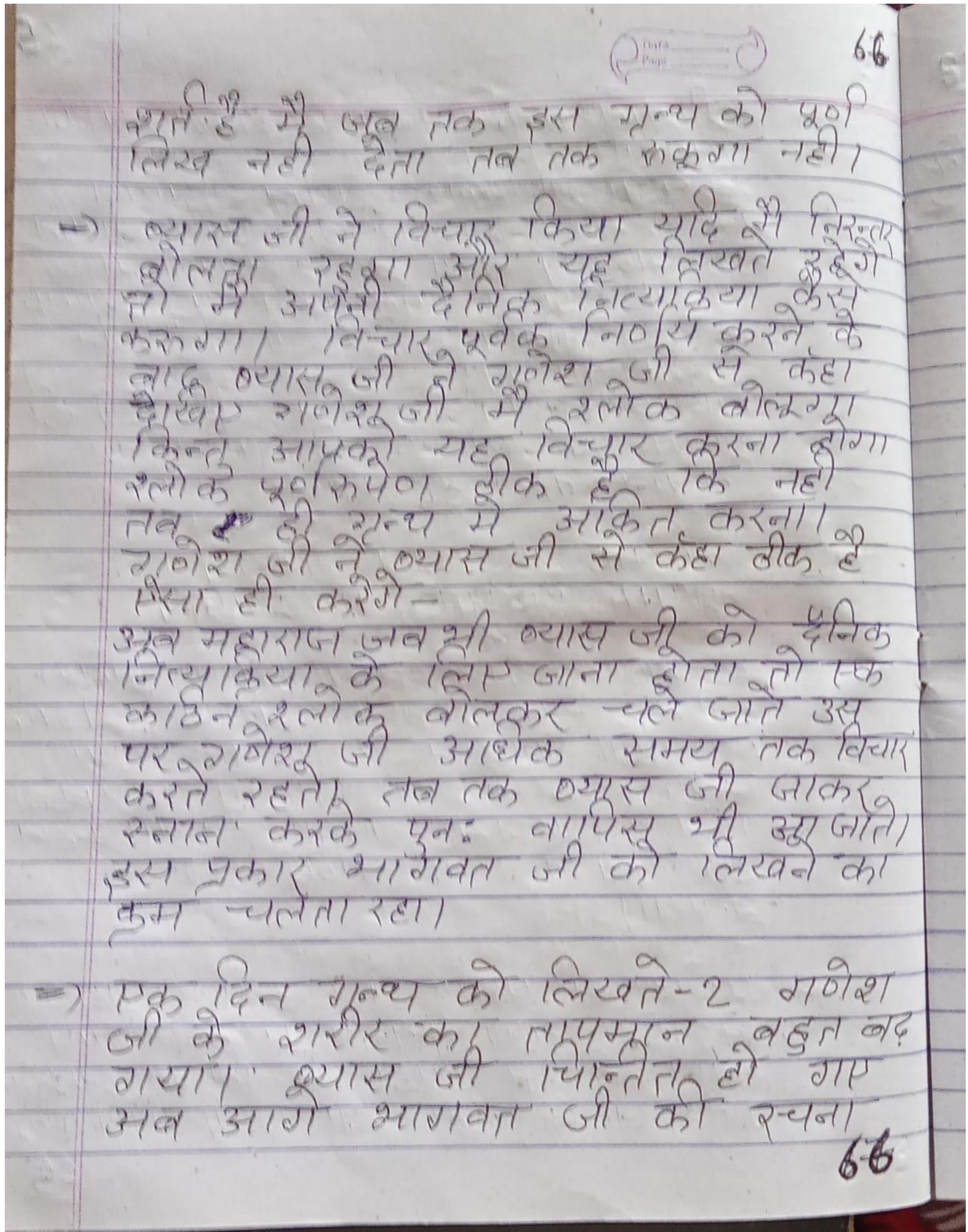
श्री गणेश करण क्या है श्री गणेश का अभिप्राय।
बन्धुओ श्री गणेश - अर्थात- आरम्भ किसी भी शुभ कार्य का आरम्भ अर्थात श्री गणेश। कार्य के शुभारम्भ मे किसी प्रकार का विघ्न न पड़े इसलिए हमे भगवान गणेश जी का पूजन करना चाहिए।
गोस्वामी तुलसीदास जी ने गणेश जी की प्रथम पूज्यनीय होने की महिमा का बखान करते हुए कहा -

चौ० महिमा जासु जान गनराऊ।
प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ॥

जो लोग कार्य के शुभारम्भ मे गणेश जी को याद करते वहा विघ्न नही आते व्यास जी महाराज ने विचार किया श्लोको का विस्तार तो मै कर सकता किंतु लिख नही सकता इसलिए उन्होने इस कार्य के लिए गणेश जी को बुलाया।

→ गणेश जी पधारे और उन्होने व्यास जी से कहा आप चिन्ता न करे आप श्लोक बोलते जाइए मै लिखता जाऊंगा गणेश जी ने कहा व्यास जी मेरी एक

65



66

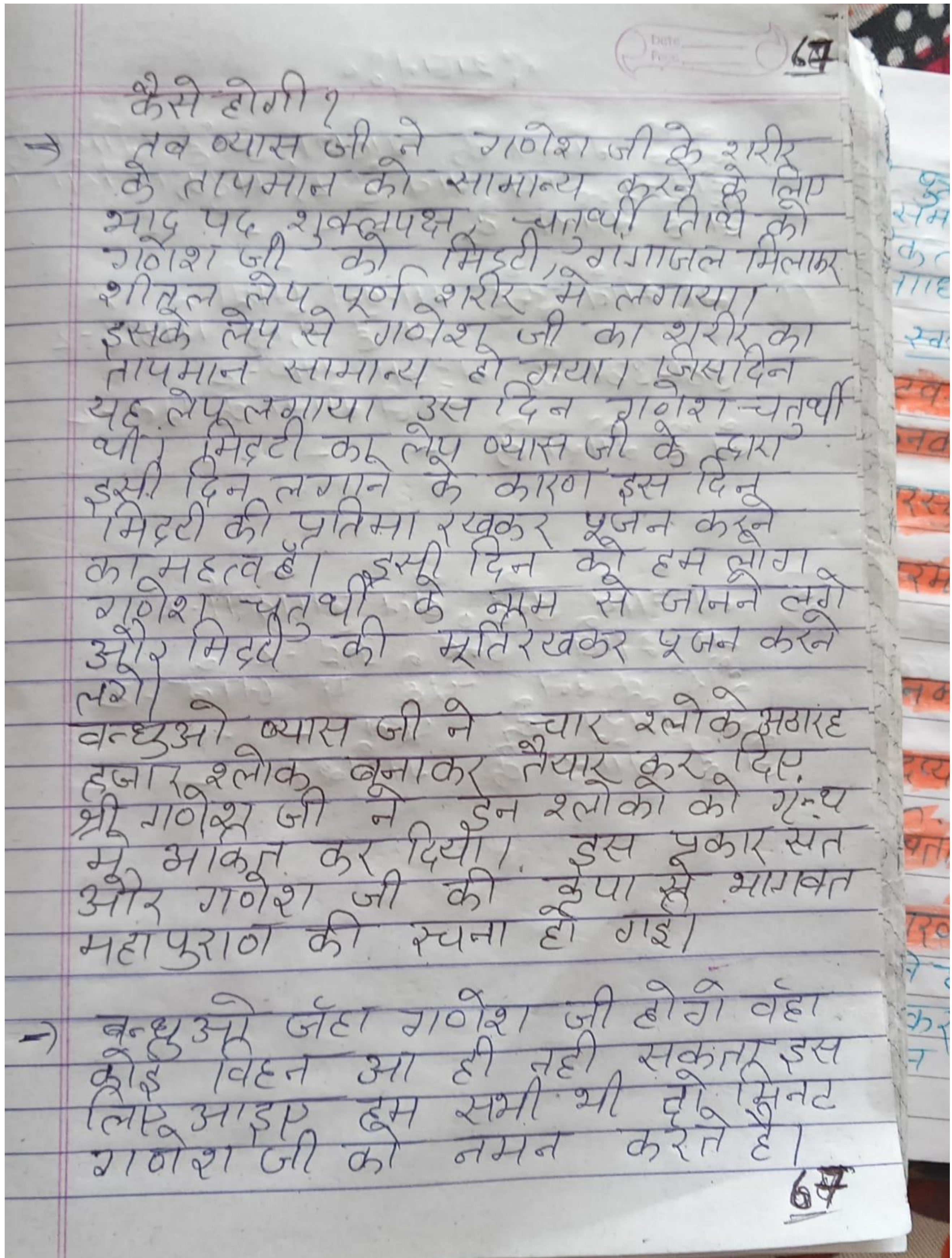
शर्त है मैं जब तक इस ग्रन्थ को पूर्ण लिख नहीं देता तब तक रुकूँगा नहीं।

=> व्यास जी ने विचार किया यदि मैं निरन्तर बोलता रहूँगा और यह लिखते रहेंगे तो मैं अपनी दैनिक नित्यक्रिया कैसे करूँगा। विचार पूर्वक निर्णय करने के बाद व्यास जी ने गणेश जी से कहा ठीक है गणेश जी मैं श्लोक बोलूँगा किन्तु आपको यह विचार करना होगा श्लोक पूर्णरूपेण ठीक है कि नहीं तब ही ग्रन्थ में अंकित करना। गणेश जी ने व्यास जी से कहा ठीक है ऐसा ही करेंगे-

अब महाराज जब भी व्यास जी को दैनिक नित्यक्रिया के लिए जाना होता तो एक कठिन श्लोक बोलकर चले जाते उस पर गणेश जी अधिक समय तक विचार करते रहते। तब तक व्यास जी जाकर स्नान करके पुनः वापिस भी आ जाते। इस प्रकार भागवत जी को लिखने का क्रम चलता रहा।

=> एक दिन ग्रन्थ को लिखते-2 गणेश जी के शरीर का तापमान बहुत बढ़ गया। व्यास जी चिन्तित हो गए अब आगे भागवत जी की रचना

66



67

कैसे होगी ?

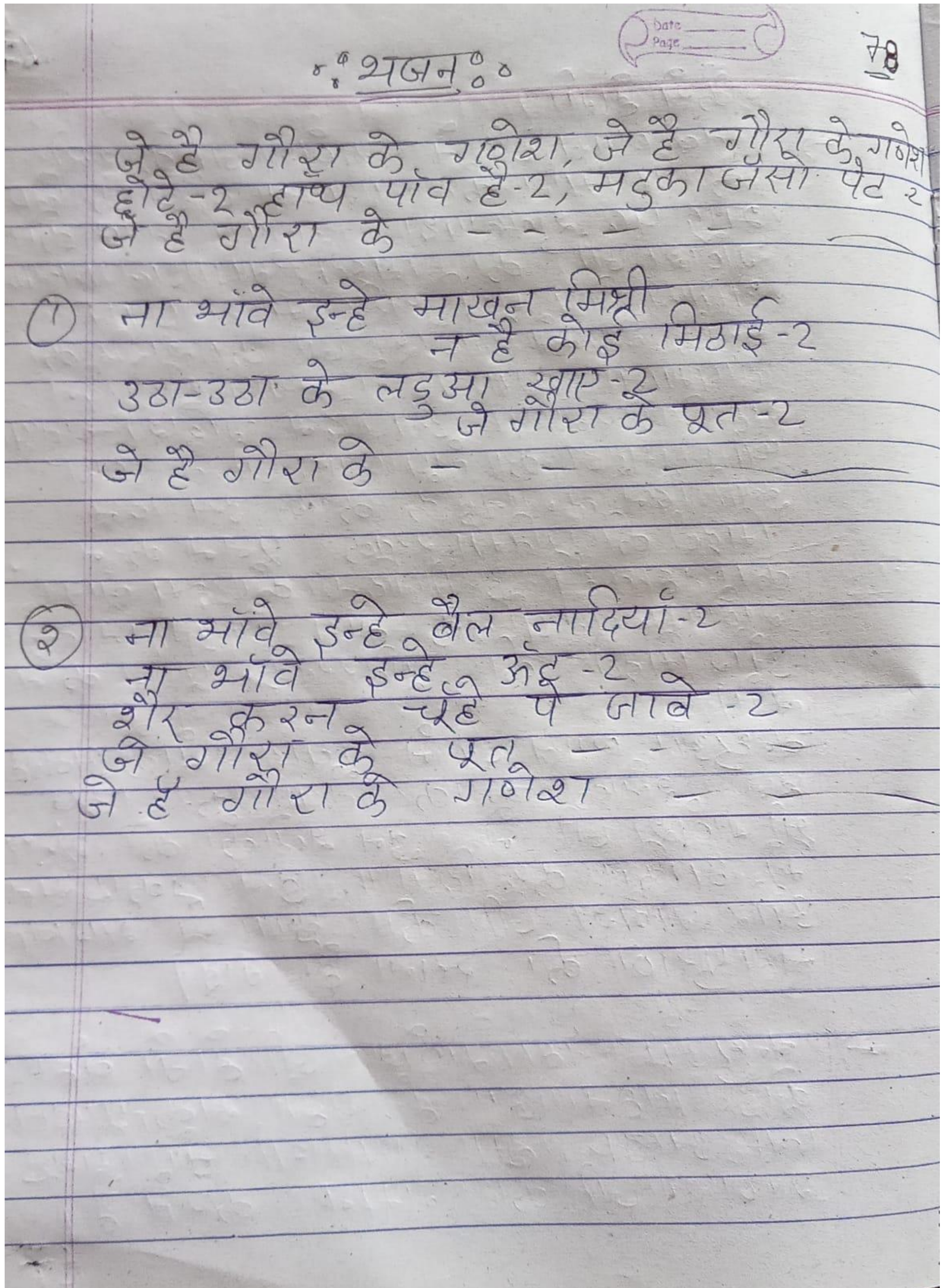
→ तब व्यास जी ने गणेश जी के शरीर के तापमान को सामान्य करने के लिए भाद्र पद शुक्लपक्ष, चतुर्थी तिथि को गणेश जी को मिट्टी, गंगाजल मिलाकर शीतल लेप पूर्ण शरीर मे लगाया। इसके लेप से गणेश जी का शरीर का तापमान सामान्य हो गया। जिसदिन यह लेप लगाया उस दिन गणेश चतुर्थी थी। मिट्टी का लेप व्यास जी के द्वारा इसी दिन लगाने के कारण इस दिन मिट्टी की प्रतिमा रखकर पूजन करने का महत्व है। इसी दिन को हम लोग गणेश चतुर्थी के नाम से जानने लगे और मिट्टी की मूर्ति रखकर पूजन करने लगे।

बन्धुओ व्यास जी ने चार श्लोक के अठारह हजार श्लोक बनाकर तैयार कर दिए श्री गणेश जी ने इन श्लोको को ग्रन्थ मे अंकित कर दिया। इस प्रकार संत और गणेश जी की कृपा से भागवत महापुराण की रचना हो गई।

→ बन्धुओ जहा गणेश जी होगे वहा कोई विघ्न आ ही नही सकता इस लिए आइए हम सभी भी दो मिनट गणेश जी को नमन करते है।

67

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



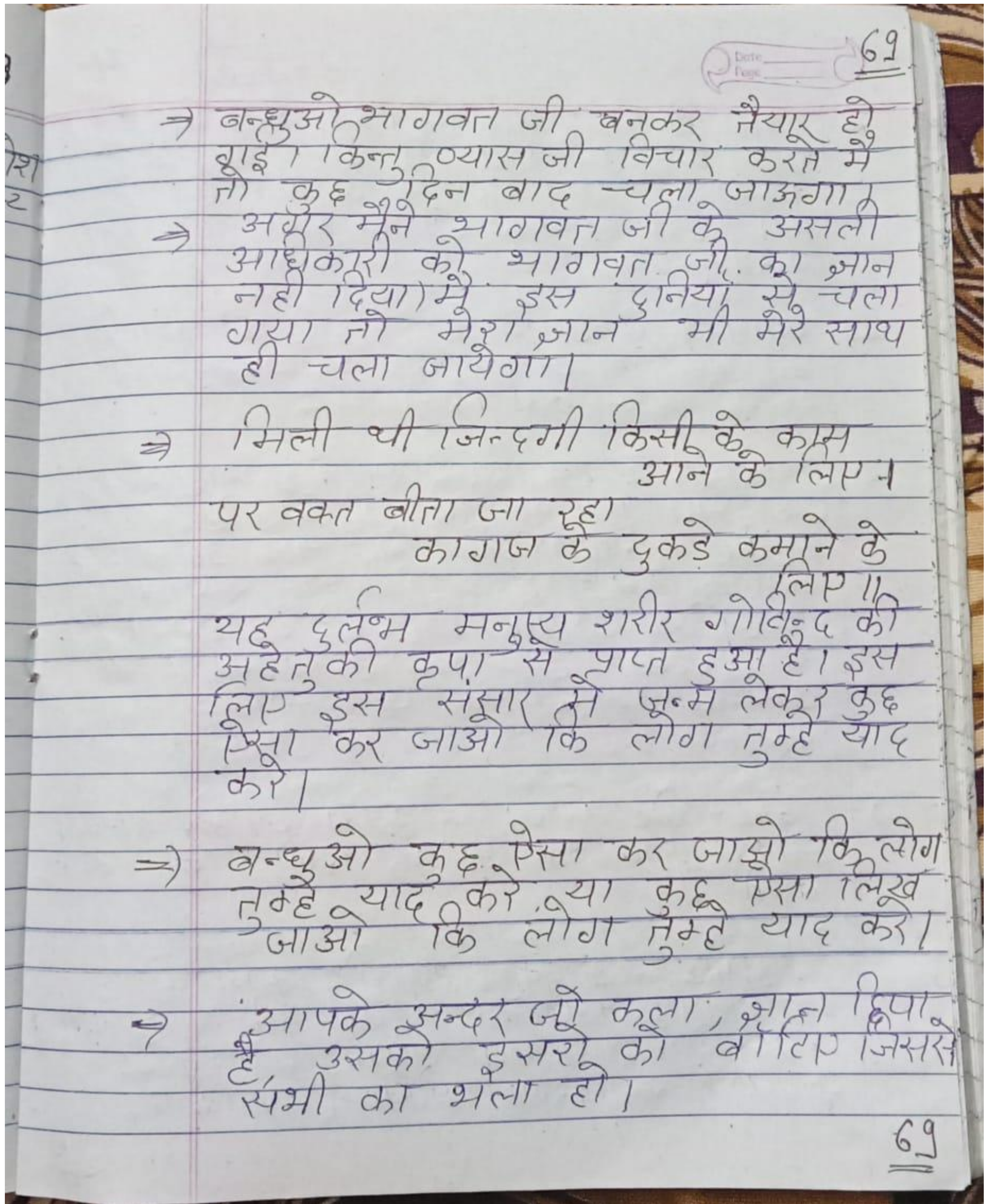
78

भजन

जे है गौरा के गणेश, जे है गौरा के गणेश
छोटे-2 हाथ पाँव है-2, मटका जैसा पेट-2
जे है गौरा के — — — —

(1) ना भावे इन्हे माखन मिश्री
न है कोई मिठाई-2
उठा-उठा के लडुआ खाए-2
जे गौरा के पूत-2
जे है गौरा के — — —

(2) ना भावे इन्हे बैल नादियाँ-2
ना भावे इन्हे ऊँट-2
सैर करन चूहे पे जावे-2
जे गौरा के पूत — — —
जे है गौरा के गणेश



69

→ बन्धुओ भागवत जी बनकर तैयार हो गई। किन्तु व्यास जी विचार करते मैं तो कुछ दिन बाद चला जाऊगा।

→ अगर मैंने भागवत जी के असली अधिकारी को भागवत जी का ज्ञान नही दिया। मै इस दुनियां से चला गया तो मेरा ज्ञान भी मेरे साथ ही चला जायेगा।

→ मिली थी जिन्दगी किसी के काम आने के लिए।
पर वक्त बीता जा रहा कागज के टुकडे कमाने के लिए॥

यह दुर्लभ मनुष्य शरीर गोविन्द की अहेतुकी कृपा से प्राप्त हुआ है। इस लिए इस संसार मे जन्म लेकर कुछ ऐसा कर जाओ कि लोग तुम्हे याद करे।

⇒ बन्धुओ कुछ ऐसा कर जाओ कि लोग तुम्हे याद करे, या कुछ ऐसा लिख जाओ कि लोग तुम्हे याद करे।

→ आपके अन्दर जो कला, ज्ञान छिपा है उसको दूसरो को बाँटिए जिससे सभी का भला हो।

69

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ

70

⇒ व्यास जी विचार करते है। कि भागवत कृपा श्रवण का अधिकारी तो मेरा पुत्र ही है किन्तु वो तो समाधि मे बैठा है। तो हम उसे भागवत जी का श्रवणपान कैसे कराए।

⇒ व्यास जी ने अपने छोटे - छोटे दो शिष्यो को बुलाया। और उन्हे भागवत जी के कुछ श्लोक याद करा दिए।

⇒ व्यास जी ने उन शिष्यो से कहा यह श्लोक जहा मेरा पुत्र समाधि मे बैठा है, वहा जाकर सुनाओ। मेरा बेटा यदि अपने नेत्र खोलकर कहे कि आगे भी सुनाओ तो कह देना आपके पिता जी ने इतना ही याद कराया है। ज्यादा सुनना है तो अपने पिता जी के पास चलिए वही सुनाएगे।

⇒ छोटे- छोटे शिष्य शुकदेव जी के समीप आकर भागवत जी के श्लोक का गान करते है।

श्लोक-

बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं
बिभ्रद् वासः कनक कपिशं वैजयन्तीं च मालाम्।
रन्ध्रान वेणोरधरसुधया पूरयन गोपवृन्दैः
वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीतकीर्तिः॥

70

71

यह श्लोक गाकर उन छोटे-छोटे बटुकोने भगवान के श्रृंगार का वर्णन किया।

⇒ शुकदेव जी ने जब भगवान के श्रृंगार का इतना सुन्दर वर्णन श्रवण किया तो शुकदेव जी की समाधि टूट गई और उनका मन हुआ कि इनके समीप जाकर भगवान के श्रृंगार रस का और वर्णन सुनू किन्तु फिर मन मे यह भाव आया कि छोडो मै तो यहा भगवान के भजन के लिए आया। शुकदेव जी पुनः समाधि मे चले गए।

⇒ छोटे-छोटे शिस्यो ने जाकर के कहा गुरु जी कार्य नही बना। व्यास जी बोले कोई बात नही दुबारा प्रयास करो।

⇒ अबकी बार पुनः वो बटुक शुकदेव जी के समीप आकर के भगवान के स्वभाव का वर्णन करने लगे।

श्लोक- अहो बकीयं स्तनकाल कूटं।
जिघांसयापाय यदप्य साध्वी।
लेभे गतिं धात्र्युचितां ततोन्यं
कं वा दयालुं शरणं व्रजेम॥

छोटे-छोटे बटुक भगवान का स्वभाव बता रहे। बकासुर की बहन बकी कालकूट विष लगाकर भगवान को मारने आई

71

72

किन्तु मेरे भगवान ने उसे भी माता की गति देदी। इतना दयालु और कौन होगा।

=> शुकदेव जी ने जब स्वभाव का वर्णन सुना, गद्गद हो गए। समाधि खुल गई और उन छोटे-2 बटुकों से आकर बोले, आगे भी सुनाओ भगवान के स्वभाव के विषय मे -

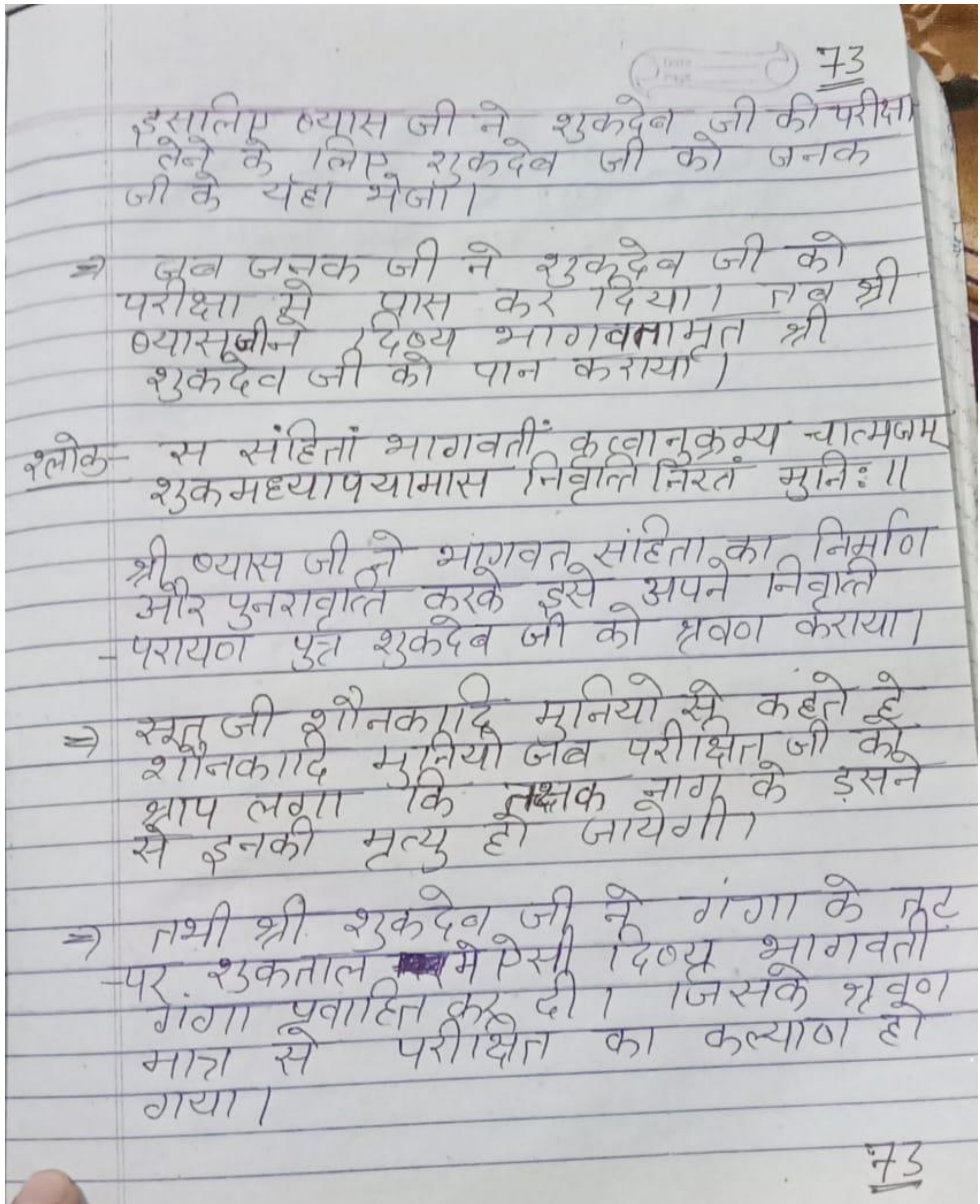
=> छोटे-छोटे बटुक बोले हमें तो इतना ही आता, अधिक सुनना है तो अपने पिता जी के पास चलो।

=> श्री शुकदेव जी दौड़े-दौड़े अपने पिता के समीप आए और उनके चरणो मे गिर गए।

=> शुकदेव जी अपने पिता जी से कहते पिता जी आगे और सुनाओ ना भगवान कृष्ण के स्वभाव का वर्णन मुझे सुनना है।

=> व्यास जी मन से विचार करने लगे कि मेरा बेटा निर्मत्सर है यह मुझे उसके जन्म लेते ही ज्ञात हो गया था किंतु अपने मुख से कभी अपने बच्चो की तारीफ नही करनी चाहिए।

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



73

इसलिए व्यास जी ने शुकदेव जी की परीक्षा लेने के लिए शुकदेव जी को जनक जी के यहा भेजा।

⇒ जब जनक जी ने शुकदेव जी को परीक्षा से पास कर दिया। तब श्री व्यास जी ने दिव्य भागवतामृत श्री शुकदेव जी को पान कराया।

श्लोक- स संहितां भागवतीं कृत्वानुक्रम्य चात्मजम्।
शुकमध्यापयामास निवृत्तिनिरतं मुनिः॥

श्री व्यास जी ने भागवत संहिता का निर्माण और पुनरावृत्ति करके इसे अपने निवृत्ति परायण पुत्र शुकदेव जी को श्रवण कराया।

⇒ सूत जी शौनकादि मुनियो से कहते हे शौनकादि मुनियो जब परीक्षित जी को श्राप लगा कि तक्षक नाग के डसने से इनकी मृत्यु हो जायेगी।

⇒ तभी श्री शुकदेव जी ने गंगा के तट पर शुकताल मे ऐसी दिव्य भागवती गंगा प्रवाहित कर दी। जिसके श्रवण मात्र से परीक्षित का कल्याण हो गया।

73

74

⇒ परीक्षित के श्राप के विषय मे श्रवण करके शौनकादि मुनियो ने श्री सूत जी से पूछा ये परीक्षित कौन थे? और इन्हे श्राप क्यो लगा?

⇒ श्री सूत भगवान शौनकादि मुनियो से कहते-

श्लोक- यदा मृधे कौरवसृन्जयानां
वीरेष्वथो वीरगतिं गतेषु।
वृकोदराविद्ध गदाभिमर्श-
भग्नोरुदण्डे धृतराष्ट्र पुत्रे ॥

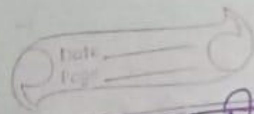
अर्थ- महाभारत का युद्ध चल रहा था सारे कौरव मारे गए दुर्योधन बचा था उसकी भी जंघा पर भीमसेन गदा का प्रहार करके उसे मृत्यु के घाट उतार रहे थे।

⇒ इतने मे अपनी यात्रा को पूर्ण करके श्री बलराम जी महाराज वहाँ पधारे। मित्रो जब बलराम जी महाराज से महाभारत युद्ध के प्रारम्भ मे पूछा गया था कि युद्ध प्रारम्भ होने वाला है आप किसकी तरफ से युद्ध करेंगे। तब बलराम जी महाराज

75

बोले दुर्योधन मेरा चेला है। पाण्डव भी मेरे अपने भाई है। इसलिए मैं युद्ध मे सम्मिलित नही रहूँगा। मैं यात्रा करने चला जाऊँगा। तो महाराज वही बलराम जी महाराज आ यात्रा पूर्ण करके हस्तिनापुर पधारे उन्होंने देखा एक निहत्थे व्यक्ति पर (दुर्योधन) भीमसेन युद्ध के नियमो का उल्लंघन करते हुए प्रहार कर रहे है बन्धुओ युद्ध ग्राम मे एक नियम होता कि किसी भी व्यक्ति के कटिभाग से नीचे के अंगो पर प्रहार नही कर सकते। किन्तु बलराम जी ने देखा कि भीमसेन दुर्योधन के जंघो पर गदा का प्रहार कर रहे है दुर्योधन असहाय भूमि पर पड़ा है। बलराम जी को बड़ा क्रोध आया उन्होंने अपना हल उठाया और भीमसेन की ओर दौड पड़े। ठाकुर जी ने देखा दाऊ दादा तो भीमसेन की ओर ही बढ़ते जा रहे है। ठाकुर जी तुरन्त दौड़कर आए और दाऊ दादा के चरण पकड़ लिए। अब दाऊ दादा भीमसेन को तो भूल गए और ठाकुर जी को भूमि से उठाने लगे। दाऊ दादा कहते कन्हैया ये अचानक से क्या हो गया कन्हैया कहते कुछ नही दाऊ दादा बड़े दिनो बाद आप मिले इसलिए ज्यादा

सूत उवाच श्रीसतजी
आरामाश्च मुनयो निर्ग्रन्था



76

प्रेम उमड़ रहा है। जब बलराम जी को क्रोध शांत हो गया तब ठाकुर जी दाऊ दादा से बोले, दाऊ दादा आज आपको लग रहा है भीमसेन दुर्योधन के साथ अन्याय कर रहा है। अरे उस दिन आप कहा थे जब पाण्डवो के साथ अन्याय किया जा रहा था उन्हे लाक्षागृह मे जलाया गया। उन्हे विष दिया गया, उन्हे द्यूत क्रीड़ा मे छल से हराया गया, एक स्त्री को भरे दरबार मे नग्न करने की कोशिश की गई तब यह सब अन्याय नही था क्या? बलराम जी को लगा कृष्ण सही कह रहे है। बलराम जी वहा से चले गए। भीमसेन ने गदे के प्रहार से दुर्योधन की जंघा को तोड़ दिया। दुर्योधन पृथ्वी पर पड़ा-पड़ा अपनी अंतिम सासे गिन रहा था।

→ इतने मे अश्वत्थामा वहा आया और दुर्योधन से कहने लगा मित्र ऐसी दशा तुम्हारी मुझसे देखी नही जाती। बताओ अन्त समय मे ये तुम्हारा मित्र तुम्हारे लिए क्या कर सकता है

→ दुर्योधन बोला अपने जीवन मे अपने हाथ से तो पाण्डवो को नही मार पाया

76

77

किंतु मरते समय मेरी यही इच्छा है कि पाण्डवो की मृत्यु देखकर ही मेरे प्राण निकले।

⇒ दुस्ट मरते - मरते भी दुस्टता नही छोड़ता।

उदाहरण - एक सन्त नदी के किनारे बैठकर भजन कर रहे थे तभी उनकी द्रास्टि एक बिच्छू पर पड़ी जो जल मे डूबा जा रहा था। सन्त को दया आ गई। और उन्होने उस बिच्छू को अपने हाथ पर रखकर बाहर निकाला।

संत ने जैसे ही बिच्छू को बाहर निकाला बिच्छू का तो स्वभाव है डंक मारने का उसने महात्मा जी के हाथ मे काट लिया हाथ डगमगाया और बिच्छू पुनः जल मे गिर गया। संत ने पुनः उसे जल से बाहर निकाला उसने पुनः संत को डस लिया। पीछे खड़ा एक व्यक्ति यह सब देख रहा था उसने महात्मा से कहा महाराज मरने की क्या जल्दी है। संत ने उत्तर दिया भइया ये बार बार काट रहा है, ये उसका स्वभाव है। किन्तु मै एक साधु हूँ जीवो की रक्षा करना हमारा धर्म है। संत कहते दुस्ट अपनी दुस्टता नही छोड़ सकता। सज्जन को अपनी सज्जनता नही छोड़नी चाहिए।

सूत उवाच

78

⇒ अश्वत्थामा ने दुर्योधन से कहा मित्र मैंने तुम्हारा नमक खाया है। मै तुम्हारी अंतिम इच्छा अवश्य पूरी करूंगा।

→ अश्वत्थामा दुर्योधन को वचन देकर पाण्डवो के शिविर की ओर चल पड़ा रास्ते मे विचार करते जा रहा कि क्या करू, कैसे पाण्डवो का बध करू।

→ तभी अश्वत्थामा ने एक दृश्य देखा-

उदाहरण- कुछ कौआ रात्रि मे अपने घोसले मे सो रहे थे तभी एक उल्लू वहा आया और सोते हुए कौओ को मार दिया।

अश्वत्थामा को समझ आ गया कि मुझे क्या करना है।

→ अश्वत्थामा पाण्डवो की शिविर की ओर बढ़ा।

→ श्री ठाकुर जी को यह ज्ञात हो गया कि कुछ अनहोनी होने वाली है। श्री ठाकुर जी रात्रि मे ही पाण्डवो की चिन्ता करते हुए पाण्डवो की शिविर की ओर जाने लगे। रास्ते मे ठाकुर जी विचार करते हुए जा रहे कि मै जाऊगा तो पाण्डव भी जाग रहे होगे, उनको मै वहा से लेकर भ्रमण पर जाऊगा।

79

→ किंतु जैसे ही ठाकुर जी पाण्डवो के शिविर मे प्रवेश किए देखा पाँचो पाण्डव चादर तान कर सो रहे है

⇒ श्री ठाकुर जी ने पाँचो पाण्डवो को जगाया और उनसे कहा अभी तो महाभारत का युद्ध पूर्ण भी नही हुआ है और तुम लोग निश्चिन्त होकर सो रहे हो ऐसा प्रतीत होता कि तुम्हे किसी की चिन्ता ही नही है।

→ अर्जुन हाथ जोड़कर ठाकुर जी से बोले-

(1) हमे चिन्ता नही उनकी, उन्हे चिन्ता हमारी है।
हमारे प्राण के रक्षक, श्री वृन्दावन बाँके बिहारी है।

(2) मुझे इसका गम नही कि बदल गया जमाना।
मेरे जिन्दगी के मालिक, कही तुम बदल न जाना।

:भजन:

मै हूँ तेरा तू मेरा ही है सांवरे-2
जी रहा हूँ कृपा पे तेरी सांवरे -2

(1) दो जहा का तू मालिक, दयावान है।
अपने भक्तो पे तू तो, मेहरबान है।

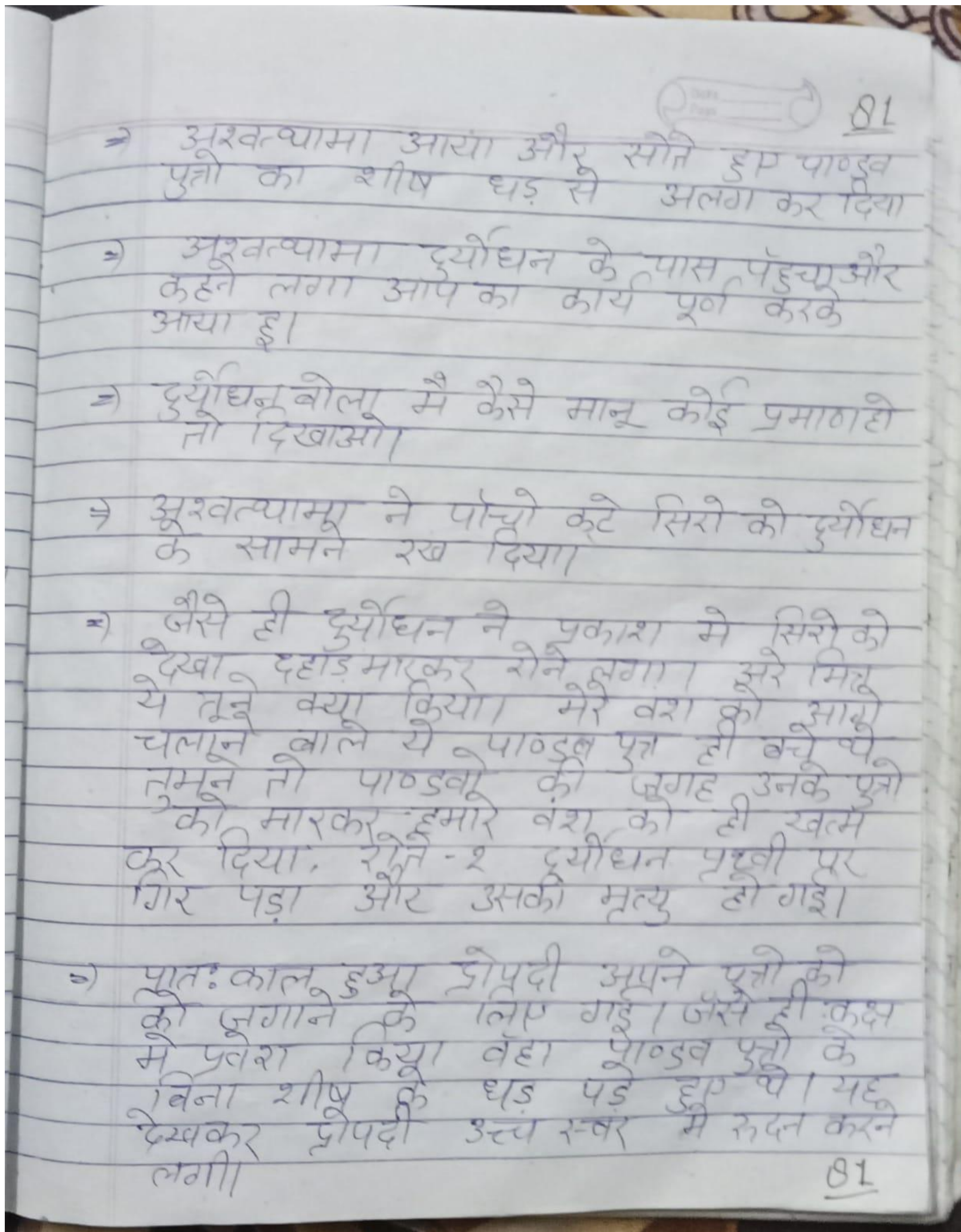
तू ही साहिल, तू कश्ती मेरी सांवरे
जी रहा हू कृपा पे तेरी सांवरे - - - -
तू है मेरा - - - -

(2) तुझसे मिलने की चाहत
इस दिल में लगी
प्यास दर्शन की मेरे
इस मन मे जगी
मान लो अब तो अरजी
मेरी सांवरे
जी रहा हू कृपा पे - - - -

⇒ अर्जुन कहते गोविन्द जिसने अपने जीवन की बागडोर गोविन्द के हाथो मे सौप दी हो उसे भला चिन्ता करने की क्या आवश्यकता।

⇒ श्री ठाकुर जी पाण्डवो से बोले इस समय यहा पर रुकना उचित नही है। श्री ठाकुर जी पाण्डवो को वहा से दूसरे स्थान पर ले गए।

⇒ पाण्डवो के पुत्रो ने देखा पिता जी के बिस्तर खाली पड़े है। पाण्डव पुत्र अपने पिता के आसन पर आकर चादर तान के सो गए।



81

⇒ अश्वत्थामा आया और सोते हुए पाण्डव पुत्रो का शीष धड़ से अलग कर दिया

⇒ अश्वत्थामा दुर्योधन के पास पहुंचा और कहने लगा आप का कार्य पूर्ण करके आया हूं।

⇒ दुर्योधन बोला मै कैसे मानू कोई प्रमाण हो तो दिखाओ।

⇒ अश्वत्थामा ने पांचो कटे सिरो को दुर्योधन के सामने रख दिया।

⇒ जैसे ही दुर्योधन ने प्रकाश मे सिरो को देखा दहाड़ मारकर रोने लगा। अरे मित्र ये तूने क्या किया। मेरे वंश को आगे चलाने वाले ये पाण्डव पुत्र ही बचे थे तुमने तो पाण्डवो की जगह उनके पुत्रो को मारकर हमारे वंश को ही खत्म कर दिया, रोते-2 दुर्योधन पृथ्वी पर गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई।

⇒ प्रातःकाल हुआ द्रौपदी अपने पुत्रो को जगाने के लिए गई। जैसे ही कक्ष मे प्रवेश किया वहा पाण्डव पुत्रो के बिना शीष के धड़ पड़े हुए थे। यह देखकर द्रौपदी उच्च स्वर मे रुदन करने लगी।

81

श्लोक- माता शिशूनां निधनं सुतानां
निशम्य घोरं परितप्यमाना।
तदारुदद्वाष्पकलाकलाक्षी
तां सान्त्वयन्नाह किरीटमाली ॥

अर्थ- द्रोपदी के आँखो मे आँसू छलक आए। वह रोने लगी। अर्जुन ने द्रोपदी को सान्त्वना देते हुए कहा- देवि तुम चिन्ता मत करो। हमारे बच्चो को मारने वाला दुष्ट चाहे पाताल मे छिपा हो उसे हम खोज कर उचित दण्ड देगे।

=) अर्जुन श्री कृष्ण को साथ लेकर शत्रु को ढूँनें निकले। अर्जुन गोविंद से कहते प्रभु सभी शत्रु तो युद्ध भूमि मे मार दिए गए। किंतु अभी केवल दो ही शत्रु बचे है। (1) अश्वत्थामा (2) बर्बरीक

=) बर्बरीक ऐसा घृणित कर्म कर नही सकता हो न हो यह कार्य दुष्ट अश्वत्थामा का ही हो सकता है।

→ कृष्ण और अर्जुन दोनो अश्वत्थामा के आश्रम की ओर बढ़े। अर्जुन को अपनी ओर आता देख अश्वत्थामा समझ गया यह मुझे मार देगा।

83

=> अश्वत्थामा ने ब्रह्मास्त्र चला दिया अर्जुन पर, ब्रह्मास्त्र को अपनी ओर आता देख अर्जुन तुरन्त कृष्ण के चरणो मे गिर पड़ा और कहने लगा मेरी रक्षा करो।

श्लोक- ① कृष्ण कृष्ण महाबाहो, भक्तानामभयङ्कर।
त्वमेको दह्यमानानामपवर्गोऽसि संसृतेः ॥

② त्वमाद्यः पुरुषः साक्षाद ईश्वरः प्रकृते परः॥

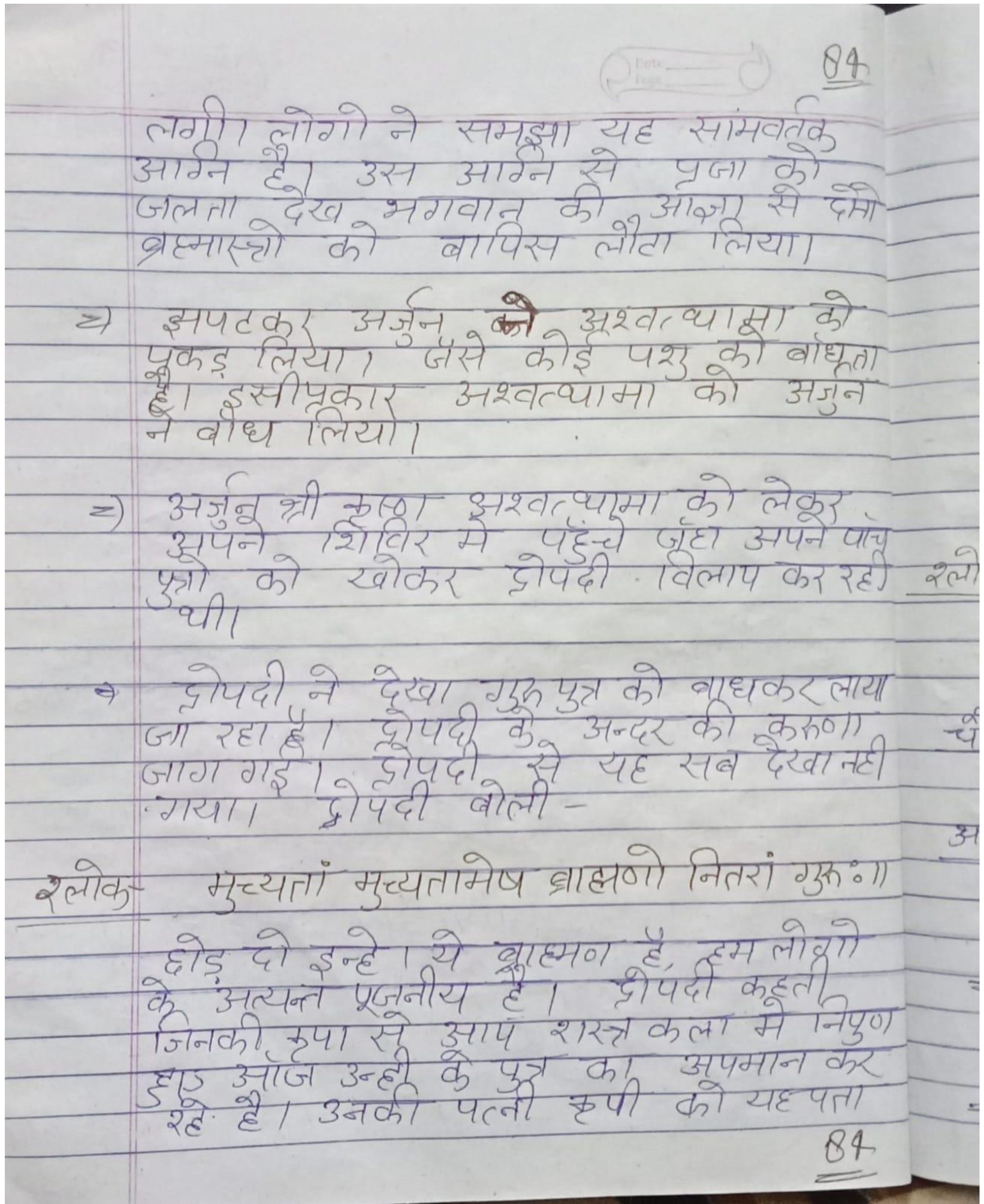
=> अर्जुन कहता तुम प्रकृति परे रहने वाले आदिपुरुष साक्षात् परमेश्वर हो। मेरी रक्षा करो।

=> भगवान अर्जुन से कहते अश्वत्थामा ने ब्रह्मास्त्र चला तो दिया किन्तु उसे इसको वापस लौटाना नही आता।

=> भगवान अर्जुन से कहते पांपी विष की औषधि विष, कांटे को निकालने के लिए कांटे का ही प्रयोग करते है।

=> अर्जुन समझ गया और अर्जुन ने आचमन करके गोविंद की परिक्रमा की और मन्त्र पढ़कर इधर से भी ब्रह्मास्त्र छोड़ दिया दोनो ब्रह्मास्त्र आपस मे टकराए भयङ्कर आग्न प्रकट हो गयी और धीरे-2 फैलने लगी। धीरे-2 इस आग्नि मे प्रजा जलने

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



84

लगी। लोगो ने समझा यह सांमवर्तक अग्नि है। उस अग्नि से प्रजा को जलता देख भगवान की आज्ञा से दोनो ब्रह्मास्त्रो को वापिस लौटा लिया।

→ झपटकर अर्जुन ने अश्वत्थामा को पकड़ लिया। जैसे कोई पशु को बांधता है। इसीप्रकार अश्वत्थामा को अर्जुन ने बांध लिया।

→ अर्जुन श्री कृष्ण अश्वत्थामा को लेकर अपने शिविर मे पहुंचे जहां अपने पांच पुत्रो को खोकर द्रौपदी विलाप कर रही थी।

→ द्रौपदी ने देखा गुरु पुत्र को बांधकर लाया जा रहा है। द्रौपदी के अन्दर की करुणा जाग गई। द्रौपदी से यह सब देखा नही गया। द्रौपदी बोली –

श्लोक– मुच्यतां मुच्यतामेष ब्राह्मणो नितरां गुरुः॥

छोड़ दो इन्हे। ये ब्राह्मण है, हम लोगो के अत्यन्त पूजनीय है। द्रौपदी कहती जिनकी कृपा से आप शस्त्र कला मे निपुण हुए आज उन्ही के पुत्र का अपमान कर रहे है। उनकी पत्नी कृपी को यह पता

84

चलेगा कि आपने उन्हे मृत्यु दण्ड दिया तो उनपर क्या बीतेगी। द्रोपदी कहती जैसे मै अपने पाँच पुत्रों के चले जाने पर विलाप करके रो रही हूँ। मै नही चाहती ऐसे ही हमारी गुरुमाता गौतमी भी रोए।

=> द्रोपदी कहती जो उच्छृंखल राजा अपने कुकृत्यों से ब्राह्मण कुल को कुपित कर देते है वह कुपित ब्राह्मणकुल उन राजाओ को सपरिवार शोकाग्नि मे डालकर शीघ्र ही भस्म कर देते है।

श्लोक- यैः कोपितं ब्रह्मकुलं राजन्यैरजितात्मभिः
तत् कुलं प्रदहत्याशु सानुबन्धं शुचार्पितम्॥

गोस्वामी जी कहते-

चौ० हरि हर निंदा सुनइ जो काना।
होइ पाप गो घात समाना॥

अर्थ भगवान, विष्णु, शिव, गुरु, ब्राह्मण इनकी जो भी निन्दा करता या सुनता है। उसे गौ हत्या का पाप लगता है।

=> तो भईया निन्दा करने से गौहत्या का पाप लगता है तो ब्राह्मण का बध करने से क्या दण्ड मिलेगा विचार किए।

=> ब्राह्मण को तेजहीन कर देना, अपने स्थान से निकाल देना यही उसका बध

86

है। ब्राह्मण के लिए कही भी मृत्युदण्ड का प्रावधान नही है।

⇒ द्रौपदी कहती आप लोग इन्हे दण्ड न दे ये गुरु पुत्र (ब्राह्मण) है।

⇒ बन्धुओ द्रौपदी भी ब्राह्मणो का इतना सम्मान करती किन्तु बहुत भारी विडम्बना आज हम समाज मे देख रहे जिन ब्राह्मणो को देवतातुल्य समझकर पूजा जाता था उनका भी अपमान हो रहा है। बड़े-बड़े सेठ पूजा करवाने के लिए भूदेव को बुलाते। महाराज दस मिनट भूदेव आने मे विलम्ब कर दिए तो महाराज ऐसी खरी खोटी सुनाते जैसे इन्होने किसी ब्राह्मण को नही नौकर को बुलाया हो। मजबूर ब्राह्मण उस सेठ से कुछ कह भी नही पाते। जो मन्त्र ब्राह्मण के आधीन है। उन मन्त्रो के जानकर योग्य भूदेव भी आज उचित सम्मान नही पा रहे है। यह चिन्तन का विषय है।

शास्त्रो मे लिखा -

श्लोक - देवाधीना जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः।
ते मन्त्राः ब्राह्मणाधीनाः तस्माद् ब्राह्मण देवता॥

86

87

अर्थ सारा संसार देवताओ के अधीन है। और वे देवता मन्त्रो के अधीन है। जिन मन्त्रो के अधीन देवता हैं वे मन्त्र ब्राह्मण के अधीन है। इसलिए ब्राह्मण भी देव है इन्हे (भू) पृथ्वी का देवता कहते हैं। इसलिए बन्धुओ हमे यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि ब्राह्मण को कभी हम अपमानित न करे। अगर ब्राह्मण कुछ गलत करता है उसका ठेकेदार वो स्वयं है। आपको उसके विषय मे चिन्ता करने की आवश्यकता नही है। ब्राह्मणो का अपमान करने बालो का वंश ही नस्ट हो जाता है।

=> अर्जुन ने भगवान से पूछा कृष्ण आपही बताओ क्या करना चाहिए?

श्लोक- ब्रह्मबन्धुर्न हन्तव्य आततायी वधार्हणः।
मयैवोभयमाम्नातं परिपाह्यनुशासनम ॥

अर्थ- श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते ब्राह्मण कितना भी पतित क्यो न हो वध नही करना चाहिए और आततायी को छोड़ना नही चाहिए।

=> भगवान की बात सुनकर अर्जुन बोले प्रभु आपके जैसे दो चोर न्यायाधीश और हो जाए फिर तो चले गई अदालत एक तरफ कहते मारो मत, दूसरी तरफ कहते छोड़ो भी मत।

88

⇒ अन्त मे गोविन्द की बात अर्जुन को समझ आ गई और उन्होने तलवार से अश्वत्थामा के सिर की मणि उसके बालो के साथ उतार ली। अश्वत्थामा ब्रह्मतेज से हीन हो गया। इसके बाद उसे शिविर से निकाल दिया।

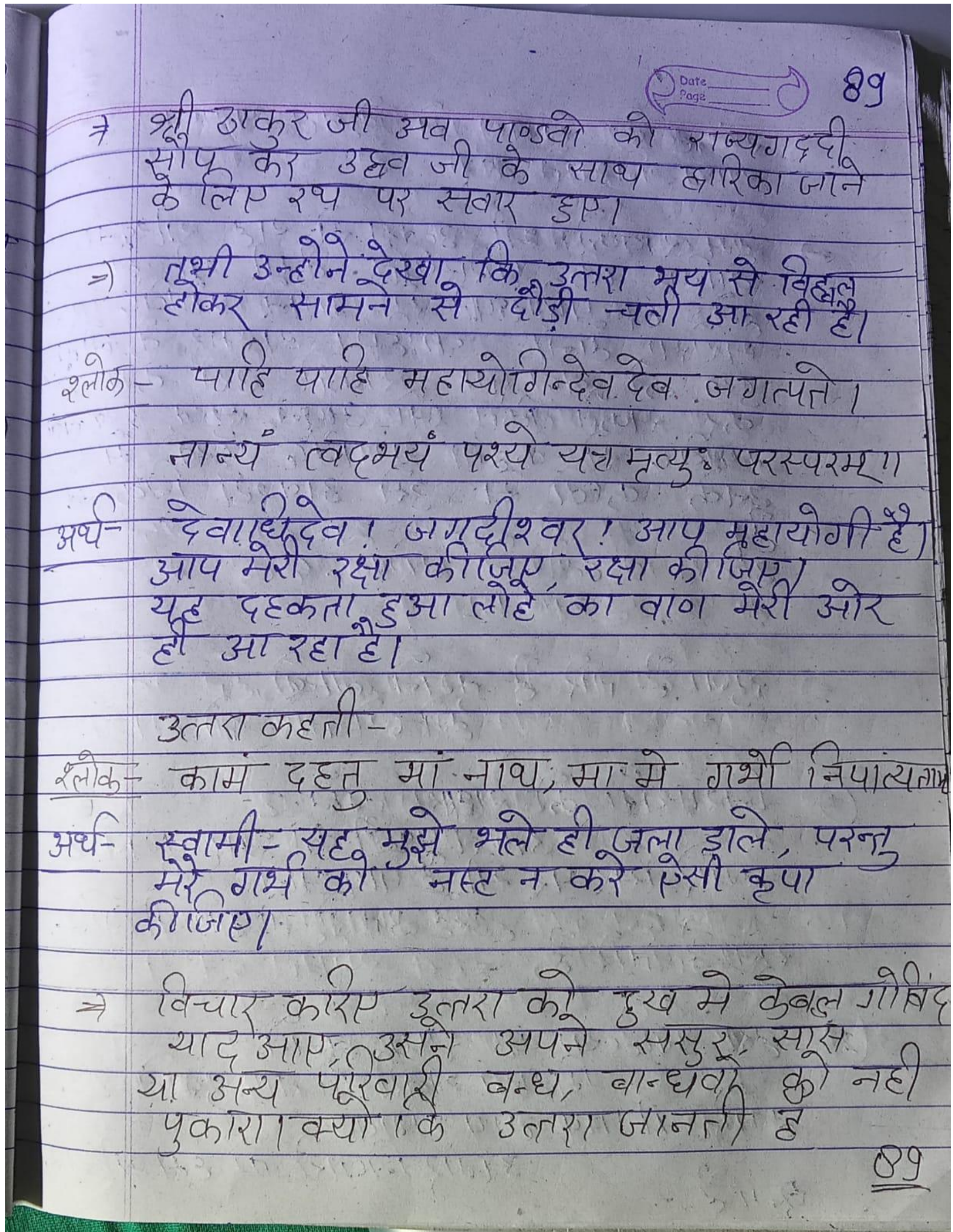
⇒ ब्रह्मतेज हीन करके स्थान से बाहर निकाल देना यही ब्राह्मणो का वध है। इसके लिए शारीरिक वध का प्रावधान नही है।

गोस्वामी जी कहते–

चौ० पूजहि विप्र सकल गुण हीना।
शूद्र न पूजहु वेद प्रवीणा।।

⇒ ब्राह्मण चाहे कितना भी ज्ञान गुण से रहित हो उसकी पूजा करनी ही चाहिए और शूद्र चाहे कितना भी गुणी ज्ञानी क्यो न हो वो सम्माननीय हो सकता किंतु पूजनीय नही।

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



89

→ श्री ठाकुर जी अब पाण्डवो को राज्यगद्दी सौंप कर उद्धव जी के साथ द्वारिका जाने के लिए रथ पर सवार हुए।

→ तभी उन्होंने देखा कि उत्तरा भय से विह्वल होकर सामने से दौड़ी चली आ रही है।

श्लोक - पाहि पाहि महायोगिन्देव देव जगत्पते।
नान्यं त्वदभयं पश्ये यत्र मृत्युः परस्परम्॥

अर्थ - देवाधिदेव! जगदीश्वर! आप महायोगी है। आप मेरी रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए। यह दहकता हुआ लोहे का बाण मेरी ओर ही आ रहा है।

उत्तरा कहती -

श्लोक - कामं दहतु मां नाथ, मा मे गर्भो निपात्यताम्

अर्थ - स्वामी - यह मुझे भले ही जला डाले, परन्तु मेरे गर्भ को नस्ट न करे ऐसी कृपा कीजिए।

→ विचार करिए उत्तरा को दुख मे केवल गोविंद याद आए, उसने अपने ससुर, सास या अन्य परिवारी बन्धु, बान्धव को नही पुकारा। क्योंकि उत्तरा जानती है

89

90

संकट के समय मे केवल भगवान ही साथ निभाते है।

→ हम सबको भी उत्तरा से यह सीखना चाहिए कि परिस्थिति कैसी भी हो हमे हर परिस्थिति मे अपने गोविंद पर भरोसा होना चाहिए। संसार के लोग दुख को बढ़ा तो सकते उसे कम नही कर सकते किंतु जो अपने सुख, दुख सब गोविंद से कहता गोविंद दुख मे उनके कष्टो से उसे अवश्य निकालते है।

उत्तरा कहती है गोविन्द —

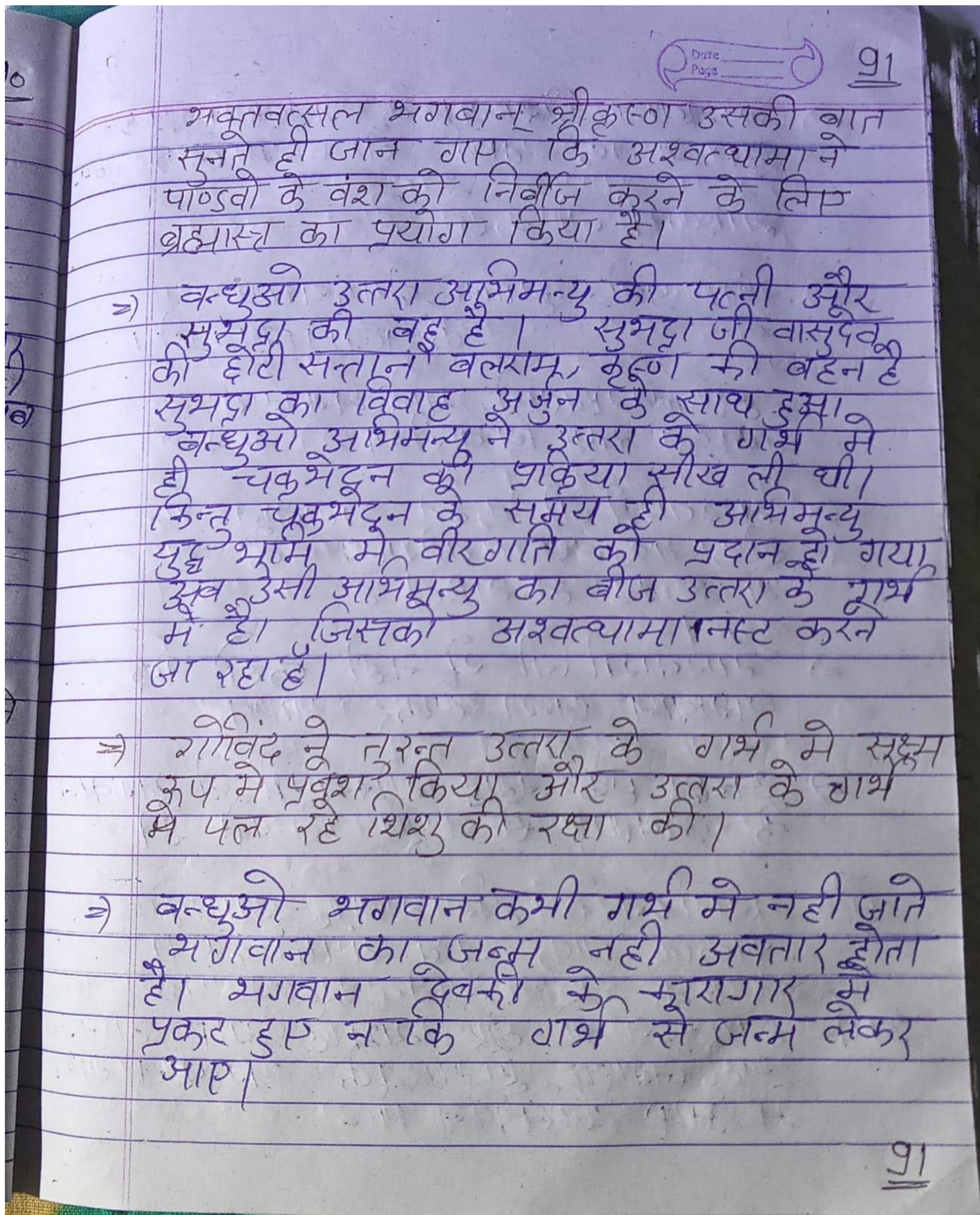
- भजन -

सुना है तारे है तुमने लाखो,
हमे जो तारो तो हम भी जाने

(1) निशाचरो को संघारा तुमने-2
उतारा पृथ्वी का भार तुमने-2
हमारे सिर पर भी है पाप भारी
उन्हे उतारो तो हम भी जाने-2
सुना है तारे है — — —

(2) हरा अहिल्या का श्राप तुमने,
मिटाया शबरी का ताप तुमने-2
हमारे भी पाप, ताप भगवन
अगर निवारो तो हम भी जाने
सुना है — — —

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



91

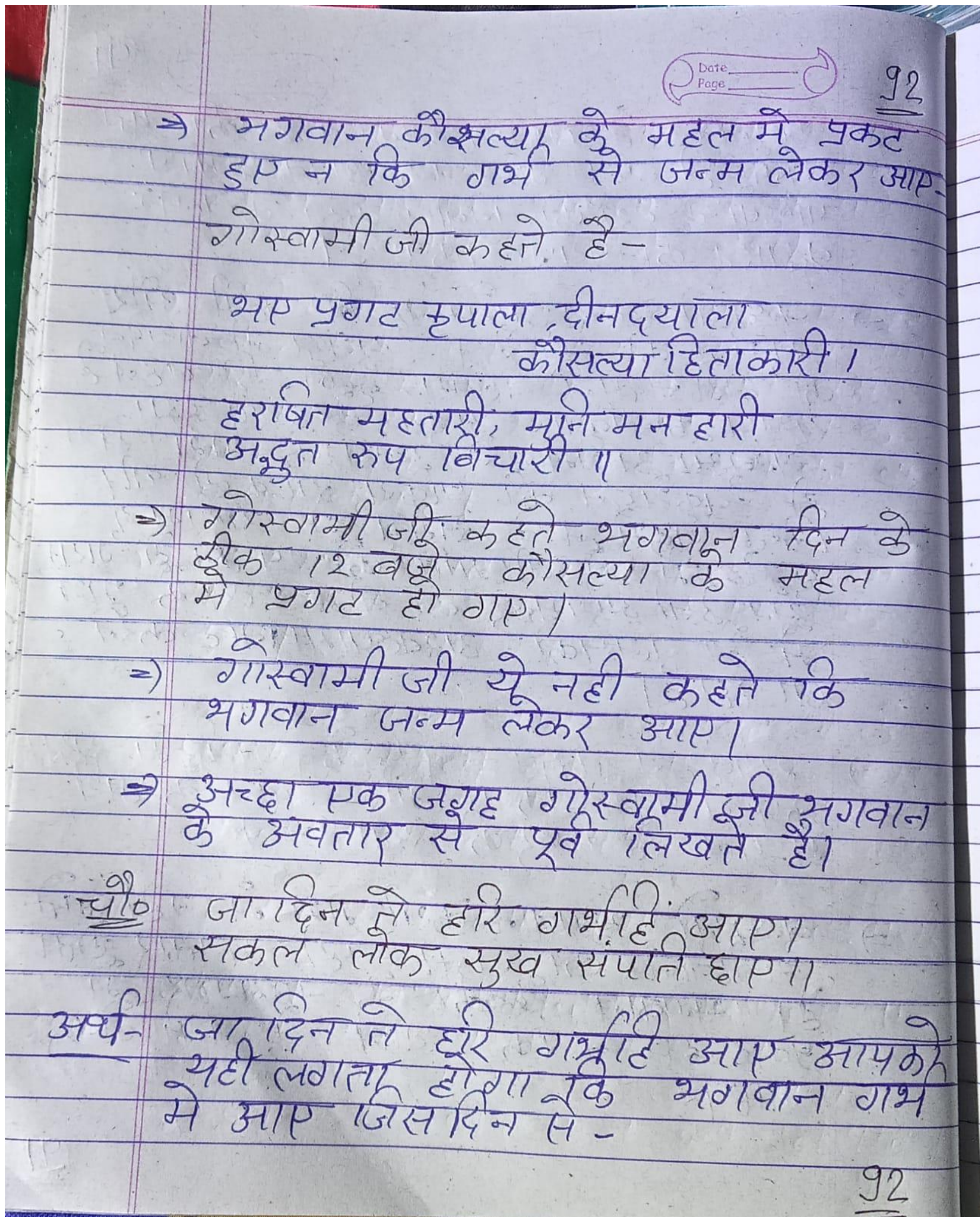
भक्तवत्सल भगवान श्रीकृष्ण उसकी बात सुनते ही जान गए कि अश्वत्थामा ने पाण्डवो के वंश को निर्बीज करने के लिए ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया है।

=) बन्धुओ उत्तरा अभिमन्यु की पत्नी और सुभद्रा की बहू है। सुभद्रा जी वासुदेव की छोटी सन्तान बलराम, कृष्ण की बहन है सुभद्रा का विवाह अर्जुन के साथ हुआ। बन्धुओ अभिमन्यु ने उत्तरा के गर्भ मे ही चक्रभेदन की प्रक्रिया सीख ली थी। किन्तु चक्रभेदन के समय ही अभिमन्यु युद्ध भूमि मे वीरगति को प्रदान हो गया। अब उसी अभिमन्यु का बीज उत्तरा के गर्भ मे है। जिसको अश्वत्थामा नस्ट करने जा रहा है।

=) गोविंद ने तुरन्त उत्तरा के गर्भ मे सूक्ष्म रूप मे प्रवेश किया और उत्तरा के गर्भ मे पल रहे शिशु की रक्षा की।

=) बन्धुओ भगवान कभी गर्भ मे नही जाते भगवान का जन्म नही अवतार होता है। भगवान देवकी के कारागार मे प्रकट हुए न कि गर्भ से जन्म लेकर आए।

91



92

⇒ भगवान कौशल्या के महल मे प्रकट हुए न कि गर्भ से जन्म लेकर आए।

गोस्वामी जी कहते है-

भए प्रगट कृपाला, दीनदयाला
कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी, मुनि मन हारी
अद्भुत रुप बिचारी॥

⇒ गोस्वामी जी कहते भगवान दिन के ठीक 12 बजे कौसल्या के महल मे प्रगट हो गए।

⇒ गोस्वामी जी ये नही कहते कि भगवान जन्म लेकर आए।

⇒ अच्छा एक जगह गोस्वामी जी भगवान के अवतार से पूर्व लिखते है।

चौ० जा दिन ते हरि गर्भहि आए।
सकल लोक सुख संपति छाए॥

अर्थ- जा दिन ते हरि गर्भहि आए आपको यही लगता होगा कि भगवान गर्भ मे आए जिस दिन से-

92

किन्तु इसका अभिप्राय यह नही है जब गोस्वामी जी स्वयं कह रहे भए प्रगट कृपाला तो जन्म तो सम्भव नही फिर इस चौपाई (जा दिन ते हरि गर्भहि आए) का वास्तविक अर्थ क्या है। बन्धुओं इसका अर्थ यह है। जिस समय शिशु माँ के गर्भ मे होता है। तो जो अनुभव माँ को होता है। वही अनुभव भगवान ने चारो माताओ को कराया।

⇒ तो भइया जो भगवान जन्म नही लेते किसी के गर्भ से केवल प्रगट होते है वो भगवान आज सूक्ष्म रूप मे उत्तरा के गर्भ मे प्रवेश करके शिशु की रक्षा करते है। विचार करिए कि उत्तरा कितनी सौभाग्यशाली है। जिसके गर्भ मे भगवान प्रवेश किए।

⇒ भगवान बालक की रक्षा करके बाहर आए उत्तरा कृष्ण के चरणो मे गिर गई किंतु भगवान से कुछ कह नही पाई,

⇒ तभी माता कुंती ने देखा बहू कुछ कह नही पा रही तो उत्तरा के तरफ से कुंती भगवान के चरणो मे गिरकर प्रार्थना करने लगी।

⇒ बुआ को चरणो मे लेटा देख कृष्ण ने

94

=> उन्हें उठाया और कहा अरे बुआ जी यह आप क्या कर रही हैं। आप मेरी बुआ हैं मैं आपका भतीजा हूँ। मैं आपको प्रणाम करूँगा। आप मुझे नहीं।

=> कुंती बोली पहले तो ये बुआ बुआ कहना बन्द करो व्यवहारिक दृष्टि से आप मेरे भतीजे और मैं आपकी बुआ हूँ। किंतु अभी-2 जिसने उत्तरा के गर्भ में पल रहे शिशु की रक्षा की वो तो पूर्ण ब्रह्म है।

=> आज एक भक्त भगवान के चरणों में प्रार्थना कर रहा है न कि एक बुआ।

=> बन्धुओ कुन्ती स्तुति भागवत जी की प्रथम स्तुति है।

कुन्ती भगवान से बोली-

(1) नमस्ये पुरुषं त्वाऽऽद्य मीश्वरं प्रकृतेः परम्।
अलक्ष्यं सर्वभूतानामन्तर्बहिरवस्थितम्॥

अर्थ- हे प्रभु आप समस्त जीवों के बाहर और भीतर स्थित हैं फिर भी जीव आपको इन्द्रियों और वृत्तियों से देख नहीं पाता।

95

क्यो कि आप प्रकृति से परे आदिपुरुष परमेश्वर है। मै आपको नमस्कार करती हूं।

(2) भगवान समस्त जीवो के अन्दर बाहर स्थित है तो दिखाई क्यो नही देते-
कुन्ती कहती है-

(2) मायाजवनिकाच्छन्नम अज्ञाधोक्षजमव्ययम्।
न लक्ष्यसे मूढदृशा नटो नाट्यधरो यथा।।

अर्थ- कुन्ती कहती जिस प्रकार से एक कठपुतली को नचाने वाला व्यक्ति पर्दे के पीछे खड़ा होकर धागो को उंगली में लपेटकर उन कठपुतलियो को नचाता है। और आप को यह प्रतीत होता कि यह कठपुतली नाच रही, बोल रही किन्तु असली जादूगर को तो देख नही पाते जो पर्दे के पीछे छिपा है।

= ठीक इसी प्रकार हम और आप भी कठपुतली है। और हम सबको नचाने वाले श्री ठाकुर जी है।

चौ० उमा दारु जोषित की नाई।
सबहि नचावत रामु गोसाई।।

सम्पूर्ण विश्व के लोगो को श्री ठाकुर जी

95

Date
Page 96

कठपुतली की भाँति नचाते है किंतु नचाने वाले हमको दिखाई नही पड़ते क्यो?

चौ० जगु पेखन तुम्ह देख निहारे।
बिधी हरि संभु नचावनिहारे॥
तेउ न जानहि मरमु तुम्हारा।
और तुम्हहि को जाननिहारा॥

अर्थ - हम सभी तो साधारण मनुष्य हैं जब भगवान शिव आपकी महिमा मरम को जान नही पाए हम आपको कैसे जान पायेगे।

=> बन्धुओ जीव और जगदीश्वर के मध्य मे माया है। माया के प्रभाव से जो जैसा दिखता वो वैसा होता नही और जो जैसा होता वो वैसा दिखाई नही देता यह सब माया का खेल है।

=> माया का अर्थ क्या है?
म = नही
या - जो
जो जैसा है वैसा दिखता नही यही माया

श्री 97

का खेल है।
कुन्ती कहती है गोविन्द -

(3) तथा परमहंसानां मुनीनाम् अमलात्मनाम्।
भक्ति योग विधानार्थं कथं पश्येम हि स्त्रियः॥

अर्थ- आपने तो बड़े-2 अमालात्मा, शुद्ध हृदय वाले विचारशील जीवनमुक्त परमहंसो के हृदय मे अपनी प्रेममयी भक्ति का सृजन करने के लिए अवतार लिया है। फिर हम अल्प बुद्धि आपको कैसे जान सकते है।

कुन्ती कहती हम तो बस आपको इतना ही जान सकते है।

(4) कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च।
नन्दगोपकुमाराय गोविन्दाय नमो नमः॥

अर्थ- आप श्री कृष्ण, वासुदेव देवकी के पुत्र नन्दगोप के लाडले लाल आपको हमारा बारम्बार प्रणाम है।

(5) नमः पङ्कजनाभाय नमः पङ्कजमालिने।
नमः पङ्कजनेत्राय नमस्ते पङ्कजाङ्घ्रये॥

Date
Page 98

अर्थ- कुन्ती कहती जिनकी नाभि से ब्रह्मा का जन्मस्थान कमल प्रकट हुआ जो सुंदर कमलो की माला धारण करते है। जिनके नेत्र कमल के समान विशाल और कोमल है। जिनके चरणकमलो मे कमल का चिन्ह है। ऐसे श्री कृष्ण को मेरा बारम्बार प्रणाम है।

कुन्ती कहती आपने देवकी से भी अधिक कृपा मुझ पर की है। ठाकुर जी कहते वो कैसे- कुन्ती कहती

(5) यथा हृषीकेश खलेन देवकी
कंसेन रुद्धातिचिरं शुचार्पिता
विमोचिताहं च सहात्मजा विभो
त्वयैव नाथेन मुहुर्विपद्गणात्

अर्थ- कुन्ती कहती आपने कृपा तो देवकी पर भी की किन्तु आपने अपने अवतार से पहले देवकी की सन्तान को नही बचाया। आपसे पूर्व जो देवकी की संतान हुई उनकी रक्षा नही की। किंतु मेरी पांच सन्ताने आपने पांच मे से किसी पर भी आंच नही आने दी
कुन्ती कहती मै कहा तक आपको बताऊ कि आपने कैसे-2 मेरे पुत्रो की रक्षा की

99

(6) विषान्महाग्नेः पुरुषाददर्शनाद
असत्सभाया वनवासकृच्छ्रतः ।
मृधे मृधेऽनेक महारथास्त्रतो
द्रौण्यस्त्रतश्चास्म हरेऽभिरक्षिताः ॥

अर्थ- कुन्ती कहती मैं आपको कहा तक गिनाऊ- सर्वप्रथम मेरे पुत्र भीम को विष दिया गया आपने उस समय मेरे पुत्र भीम की विष से रक्षा की।

⇒ क्युओ भीमसेन बचपन से ही बहुत बलशाली थे। कौरवो को ऐसी मार लगाते थे कि कौरव जाकर धृतराष्ट्र से शिकायत करते

⇒ कभी-2 सारे कौरव एक साथ भीमसेन को मारकर पेड़ पर चढ़ जाते। भीमसेन भी क्रोध से आकर पेड़ को इतना तेज हिलाते कि सारे कौरव टपक-2 कर बन्दर की भाँति नीचे गिरते।

⇒ एक दिन कौरवो ने विचार किया कि और किसी से तो हमें ज्यादा खतरा नहीं है। किंतु इस भीमसेन से

100

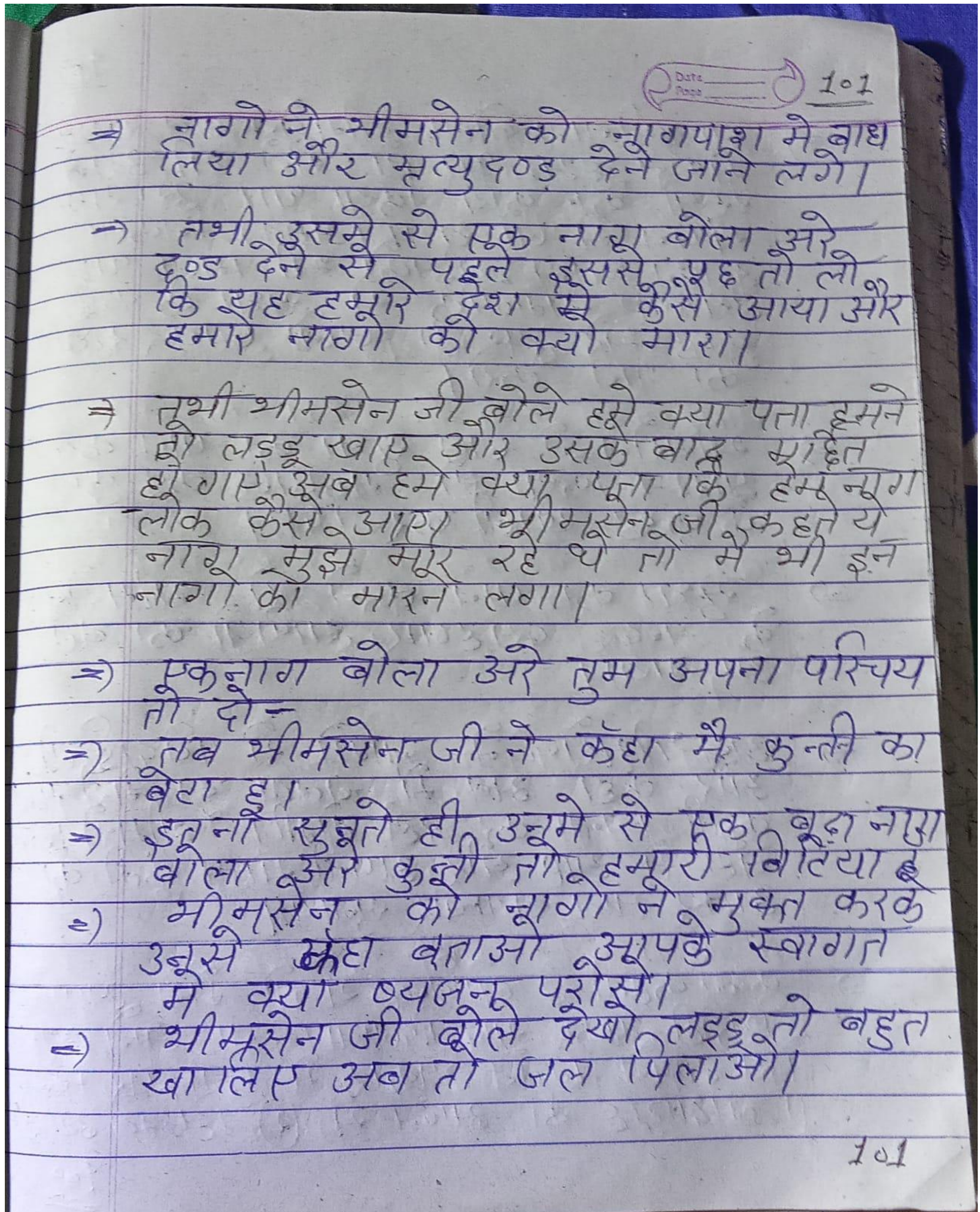
अधिक खतरा है। इसलिए इसे मार दिया जाए।

⇒ कौरवो ने लड्डू बनवाए और उनमे विष मिलवा दिया। कौरव वह लड्डू भीमसेन के सामने लेकर आए और बोले ये लो भईया माता जी ने दिए है और कहा है मिलबाट कर खा लेना।

⇒ लड्डूओ से भरा हुआ थाल भीमसेन ने देखा तुरन्त ही छीन लिया। और अकेले ही खाने लगे। कौरवो ने देखा तो प्रसन्न हो गए क्यो कि वो तो ये चाहते ही थे।

⇒ विषयुक्त लड्डू खाते ही भीमसेन तो मूर्छित होकर भूमि पर गिर पडे। कौरवो ने विचार किया। यह तो मर गया। इसको रस्सी से बाधकर यमुना मे फेक आए।

⇒ भीमसेन जी बहते-2 नागलोक मे पहुच गए। वहा उन्हे किसी नाग ने काट लिया। (विष की औषधि विष) सर्प के काटने से भीमसेन जी के शरीर का विष खत्म हो गया और वह उठ खडे हुए। एक-2 करके भीमसेन जी नागो को उठाकर पटकने लगे।



101

⇒ नागो ने भीमसेन को नागपाश मे बाध लिया और मृत्युदण्ड देने जाने लगे।

⇒ तभी इसमे से एक नाग बोला अरे दण्ड देने से पहले इससे पूछ तो लो कि यह हमारे देश मे कैसे आया और हमारे नागो को क्यो मारा।

⇒ तभी भीमसेन जी बोले हमे क्या पता हमने तो लड्डू खाए और उसके बाद मूर्छित हो गए अब हमे क्या पता कि हम नाग लोक कैसे आए भीमसेन जी कहते ये नाग मुझे मार रहे थे तो मै भी इन नागो को मारने लगा।

⇒ एक नाग बोला अरे तुम अपना परिचय तो दो-

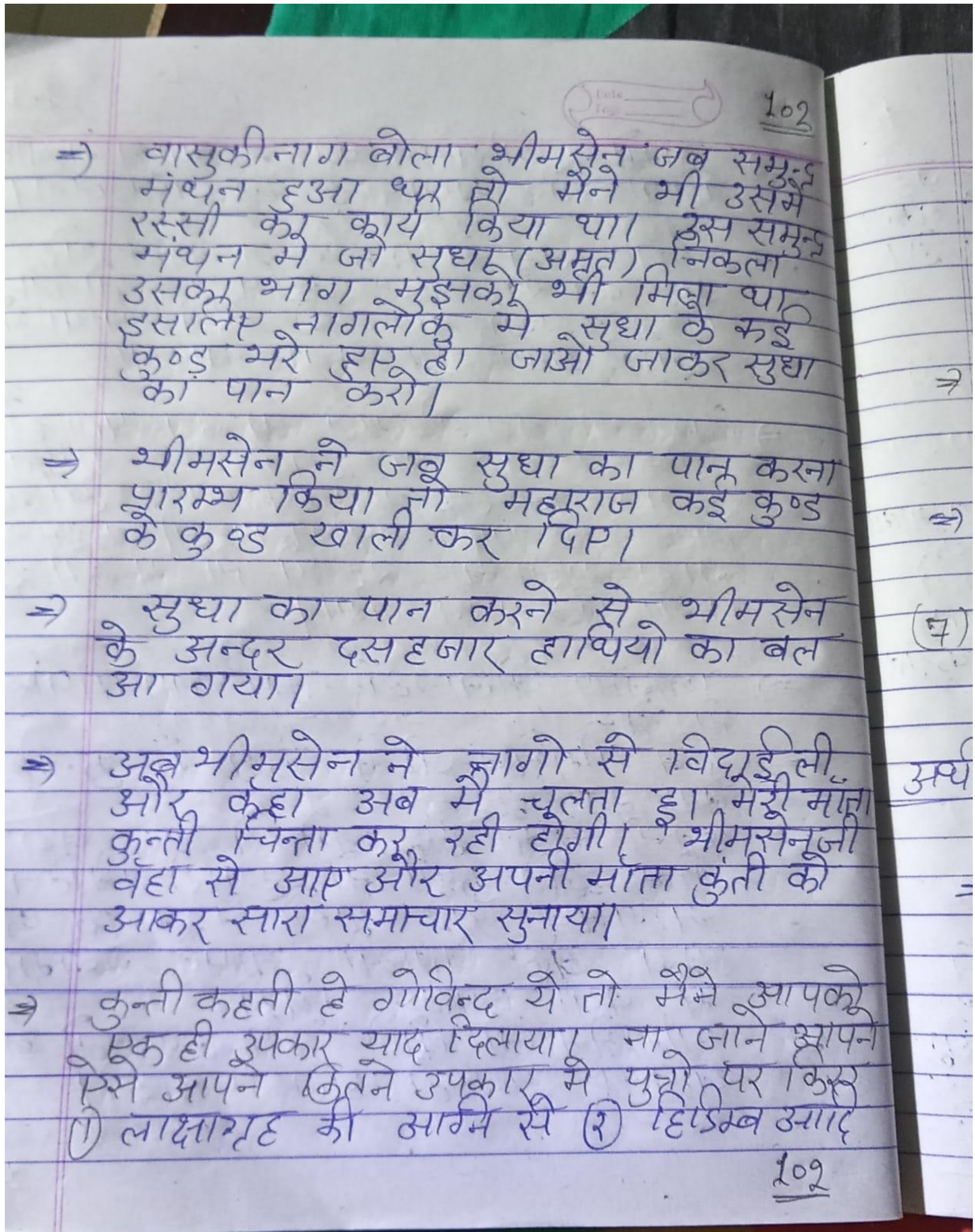
⇒ तब भीमसेन जी ने कहा मै कुन्ती का बेटा हूं।

⇒ इतना सुनते ही उनमे से एक बूढा नाग बोला अरे कुन्ती तो हमारी बिटिया है

⇒ भीमसेन को नागो ने मुक्त करके उनसे कहा बताओ आपके स्वागत मे क्या व्यजन परोसे।

⇒ भीमसेन जी बोले देखो लड्डू तो बहुत खा लिए अब तो जल पिलाओ।

101



102

⇒ वासुकी नाग बोला भीमसेन जब समुद्र मंथन हुआ था तो मैंने भी उसमे रस्सी का कार्य किया था। इस समुद्र मंथन मे जो सुधा (अमृत) निकला उसका भाग मुझको भी मिला था इसलिए नागलोक मे सुधा के कई कुण्ड भरे हुए है। जाओ जाकर सुधा का पान करो।

⇒ भीमसेन ने जब सुधा का पान करना प्रारम्भ किया तो महाराज कई कुण्ड के कुण्ड खाली कर दिए।

⇒ सुधा का पान करने से भीमसेन के अन्दर दस हजार हाथियो का बल आ गया।

⇒ अब भीमसेन ने नागो से विदाई ली, और कहा अब मै चलता हूं। मेरी माता कुन्ती चिन्ता कर रही होगी। भीमसेनजी वहा से आए और अपनी माता कुंती को आकर सारा समाचार सुनाया।

⇒ कुन्ती कहती है गोविन्द ये तो मैंने आपको एक ही उपकार याद दिलाया। ना जाने आपने ऐसे आपने कितने उपकार मे पुत्रो पर किए (1) लाक्षागृह की अग्नि से (2) हिडिम्ब आदि

102

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ

राक्षसो की दृष्टि से, दुष्टो की द्यतसभा से वनवास की विपत्तियो से और अनेको बार युद्धो मे अनेक महारथियों के शस्त्रों से, अभी-2 इस अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र से भी आपने ही हमारी रक्षा की है।

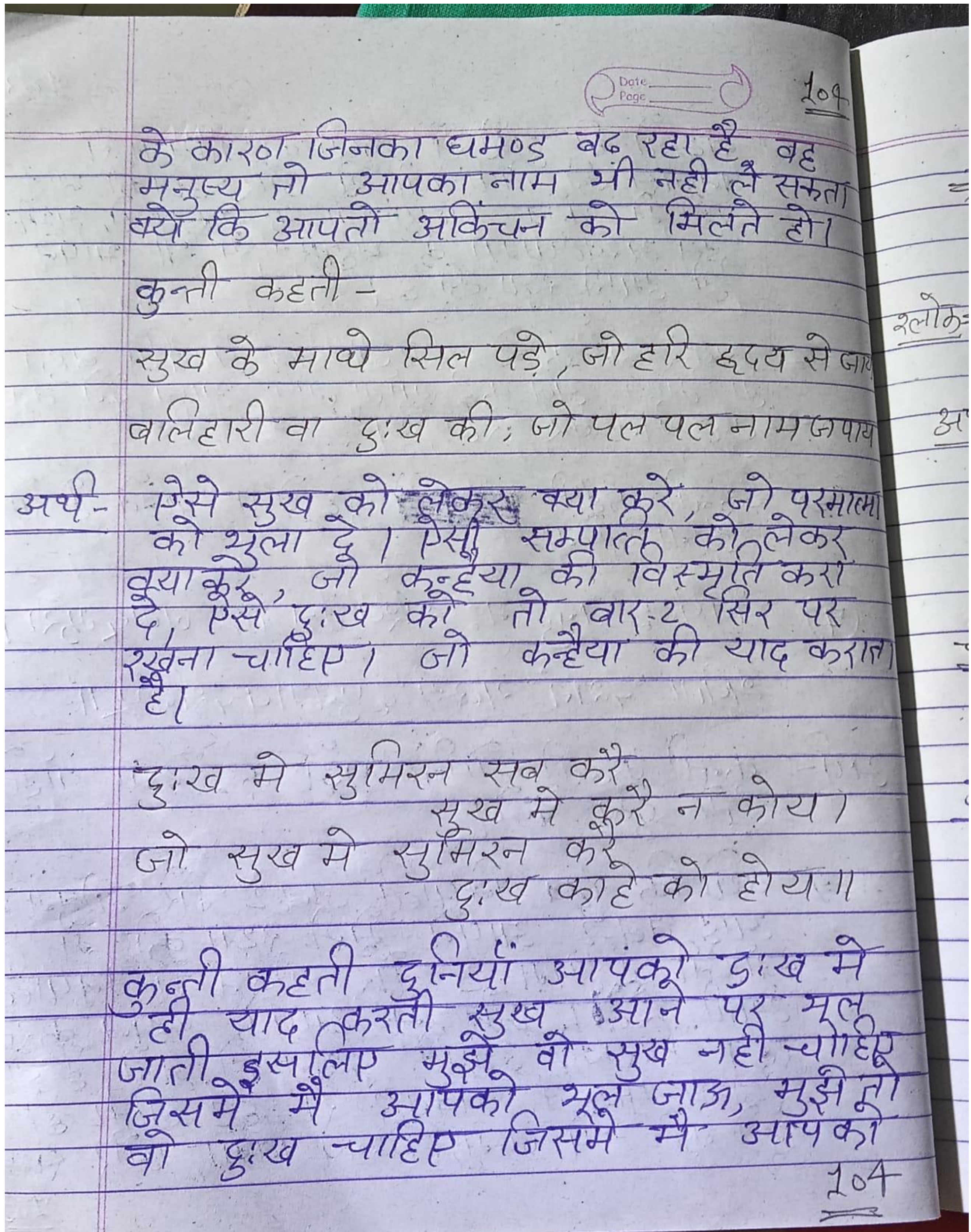
⇒ ठाकुर जी कहते बुआजी अब प्रार्थना बहुत हो गई। अब कुछ माँग लो। आज देने का कुछ मन कर रहा है।

⇒ कुन्ती कहती [illegible] कुछ देना चाहते हो तो इतना दे देना-

(7) विपदः सन्तु नः शश्वत्तत्र तत्र जगद्गुरो।
भवतो दर्शनं यत्स्यादपुनर्भवदर्शनम्॥

अर्थ- कुन्ती कहती गोविंद मुझे कुछ देना चाहते तो दुख देदो।

⇒ क्योंकि दुख, बिपत्ति जब-2 मेरे जीवन मे आई तब-2 आपने मेरी रक्षा की मै चाहती हूँ पग-2 मेरे जीवन मे बिपत्ति आती रहे और मै आपके दर्शन करती रहूं। जिसको आपके दर्शन हो जाते है वो जन्म, मृत्यु के चक्कर से छूट जाता है। ऊंचे कुल मे जन्म, ऐश्वर्य विद्या, और सम्पत्ति



104

के कारण जिनका घमण्ड बढ़ रहा है, वह
मनुष्य तो आपका नाम भी नही ले सकता
क्यो कि आपतो अकिंचन को मिलते हो।

कुन्ती कहती -

सुख के माथे सिल पड़े, जो हरि हृदय से जाय

बलिहारी वा दुःख की; जो पल पल नाम जपाय

अर्थ- ऐसे सुख को लेकर क्या करे, जो परमात्मा
को भुला दे। ऐसी सम्पत्ति को लेकर
क्या करू, जो कन्हैया की विस्मृति करा
दे, ऐसे दुःख को तो बार-2 सिर पर
रखना चाहिए। जो कन्हैया की याद कराता
है।

दुःख मे सुमिरन सब करै
सुख मे करै न कोय।
जो सुख मे सुमिरन करै
दुःख काहे को होय॥

कुन्ती कहती दुनियां आपको दुःख मे
ही याद करती सुख आने पर भूल
जाती इसलिए मुझे वो सुख नही चाहिए
जिसमें मैं आपको भूल जाऊ, मुझे तो
वो दुःख चाहिए जिसमे मै आपको

104

Date
Page 105

याद करती रहूँ।

=> बन्धुओ क्या हम लोग यह जानते हैं कि जीवन में सबसे बड़ा दुःख क्या है, और जीवन मे सबसे बड़ा सुख क्या है?

श्लोक=) विपदो नैव विपदः, सम्पदो नैव सम्पदः।
विपद् विस्मरणं विष्णोः, सम्पन्नारायणस्मृतिः।।

अर्थ- विपत्ति को विपत्ति नहीं कहते, सम्पत्ति को सम्पत्ति नहीं कहते। गोविंद को भूल जाना ही सबसे बड़ी बिपत्ति और कन्हैया को याद करते रहना ही सबसे बड़ी सम्पत्ति है।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते-

चौ० कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई।
जब तब सुमिरन भजन न होई।।

अर्थ- बिपत्ति तो तब ही आती है जब जीव सुमिरन, परमात्मा का ध्यान करना भूल जाता है।

बन्धुओ कभी विचार करके देखिए ये सुख और दुख क्या परमात्मा के दिए हुए हैं।

=> बन्धुओ सुख और दुःख हमारे कर्मों का खेल है। दोनों परमात्मा के ही बनाए हुए हैं। आप जैसा कर्म करेंगे। वैसा ही फल

आपको गोविंद देगे।

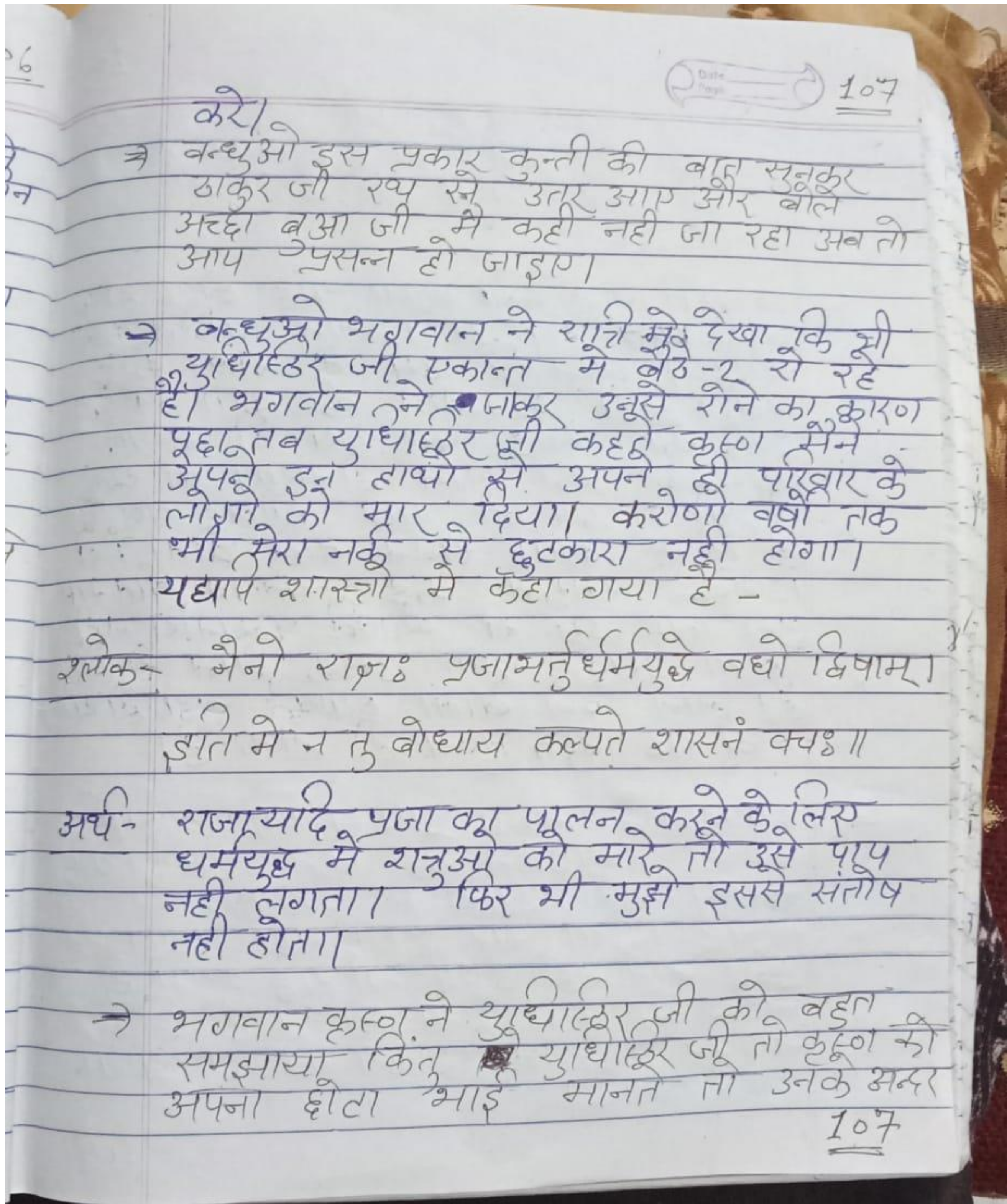
→ बन्धुओ जरा विचार करिए हमारे जीवन मे हमारे लिए अच्छा कौन होता और बुरा कौन होता।

⇒ जो हमारे लिए अच्छा करके जाता वो अच्छा होता और जो हमारे लिए बुरा करके जाता वो हमारे लिए बुरा होता।

→ तो भईया यह दुःख जब भी हमारे जीवन मे आता हमारे लिए अच्छा करके जाता तो यह बुरा कैसे हो सकता।

दोहा- दुःख ही मानव की सम्पत्ति फिर दुःख से क्यो घबराता है।
सुख देकर जाने वाले से फिर मानव क्यो घबराता है॥

अर्थ- देखिए बन्धुओ जब हमारे जीवन मे दुःख आता है तो पीछे सुख छोड़कर जाता किंतु जब सुख आता है तो पीछे दुःख को छोड़कर जाता है। हमारे लिए अच्छा कौन हुआ जो हमारे लिए अच्छा छोड़कर गया। तो दुःख तो अपने पीछे सुख छोड़कर जाता है। इसलिए इससे घबराना नही चाहिए। सुख, दुःख जीवन के दो पहिए है दुःख मे तो आप भगवान का स्मरण करते ही हो। किंतु सुख आने पर अधिक स्मरण



करो।

→ बन्धुओ इस प्रकार कुन्ती की बात सुनकर ठाकुर जी रथ से उतर आए और बोले अच्छा बुआ जी मै कहीं नही जा रहा अब तो आप प्रसन्न हो जाइए।

→ बन्धुओ भगवान ने रात्री मे देखा कि श्री युधिष्ठिर जी एकान्त मे बैठे-२ रो रहे है। भगवान ने जाकर उनसे रोने का कारण पूछा तब युधिष्ठिर जी कहते कृष्ण मैंने अपने इन हाथो से अपने ही परिवार के लोगो को मार दिया। करोणो वर्षो तक भी मेरा नर्क से छुटकारा नही होगा। यद्यपि शास्त्रो मे कहा गया है -

श्लोक - नैनो राज्ञः प्रजाभर्तुर्धर्मयुद्धे वधो द्विषाम्।
इति मे न तु बोधाय कल्पते शासनं वचः॥

अर्थ - राजा यदि प्रजा का पालन करने के लिए धर्मयुद्ध मे शत्रुओ को मारे तो उसे पाप नही लगता। फिर भी मुझे इससे संतोष नही होता।

→ भगवान कृष्ण ने युधिष्ठिर जी को बहुत समझाया किंतु युधिष्ठिर जी तो कृष्ण को अपना छोटा भाई मानते तो उनके अन्दर

107

वो भाव आता ही नही जो एक भक्त का भगवान के प्रति होता है। युधिष्ठिर जी तो कृष्ण को अभी भी छोटा बालक मानते है।

⇒ बन्धुओ ज्ञान देने वाला चाहे छोटा हो या बड़ा हमे उससे ज्ञान अर्जित करना चाहिए। ज्ञान की उम्र के साथ कोई तुलना नही भगवान की कृपा से ध्रुव जी को साढ़े चार वर्ष मे सम्पूर्ण वेद वेदान्त का ज्ञान हो गया। श्री सूत जी, श्री शुकदेव जी मात्र सोलह वर्ष के है किन्तु कथा सुनने वाले श्रोता ऐसे जिनके सामने कई चतुर्युग बीत गए इस लिए उम्र से व्यक्ति पूज्यनीय नही होता उसकी पूजा उसके ज्ञान से होती है। ज्ञान देने वाला व्यक्ति बड़ा हो या छोटा वह गुरु तुल्य ही होता है।

⇒ भगवान ने बहुत प्रयास किए युधिष्ठिर जी को समझाने के किंतु उनको कुछ समझ नही आया। भगवान ने विचार किया मेरे द्वारा नही समझ रहे कोई बात नही अभी भी युद्ध भूमि के मैदान मे एक ऐसा व्यक्ति है जिसके माध्यम से युधिष्ठिर जी को समझाया जा सकता है।

⇒ भगवान पाँचो पाण्डवो और द्रौपदी के सहित युद्ध भूमि के मैदान मे पहुँचे जहा पितामह भीष्म बाणो की शय्या पर लेटे हुए थे।

⇒ पाँचो पाण्डवो और द्रोपदी ने पितामह भीष्म को प्रणाम किया। इसके उपरान्त युधिष्ठिर जी ने धर्मो के अनेको रहस्यो के बारे मे पितामह से पूछा–

शौनक ऋषियो से सूत जी कहते पितामह भीष्म ने पाण्डवो को–

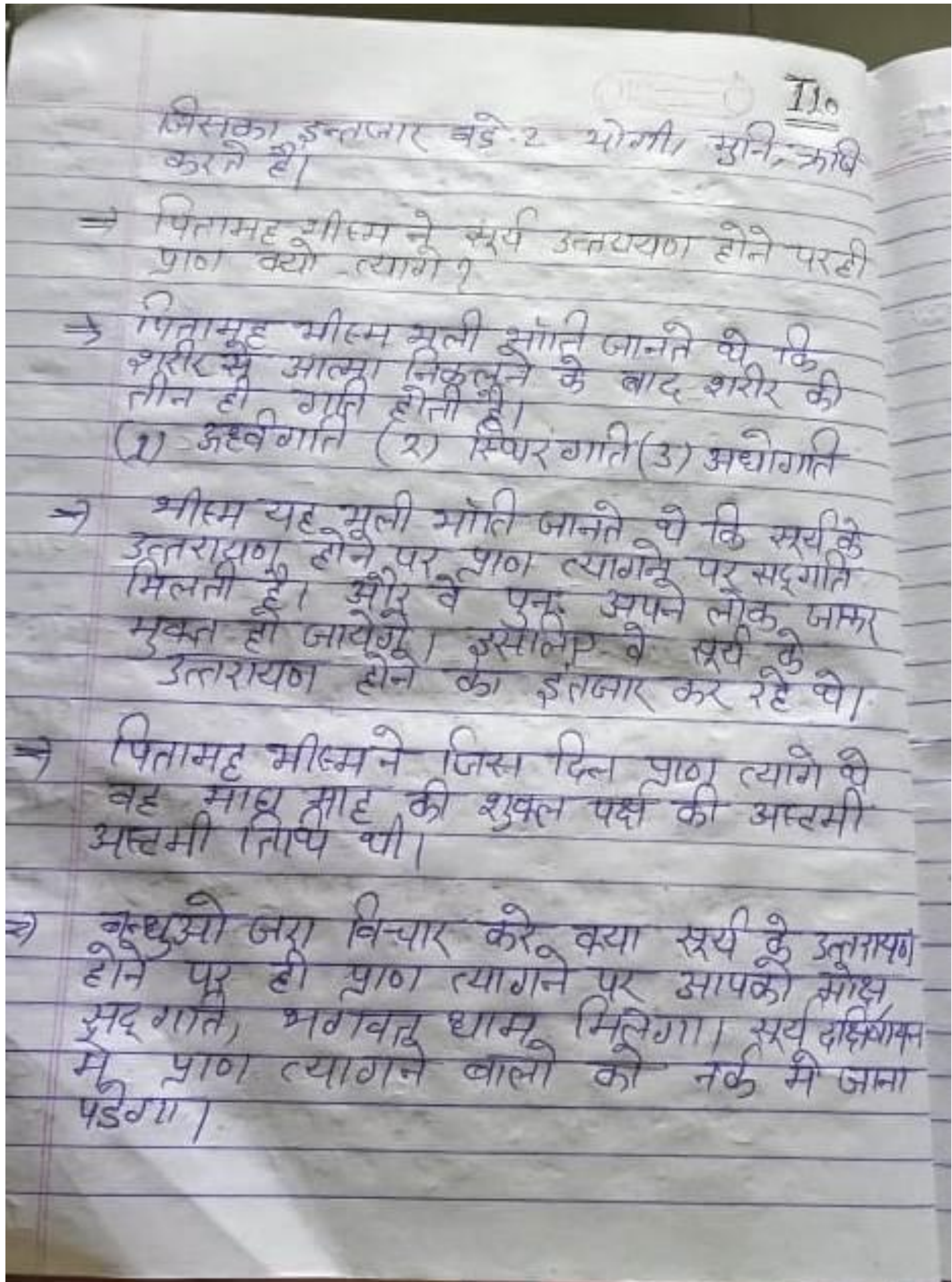
श्लोक– दानधर्मान् राजधर्मान् मोक्षधर्मान् विभागशः।
स्त्रीधर्मान् भगवद्धर्मान् समासव्यासयोगतः॥

अर्थ– दानधर्म, राजधर्म, मोक्षधर्म, स्त्रीधर्म और भगवद्धर्म इन सबका अलग-2 संक्षेप और विस्तार से वर्णन किया।

⇒ इसके उपरान्त धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारो पुरुषार्थों का विस्तार से वर्णन किया।

⇒ इस प्रकार पितामह भीष्म पाण्डवो को उपदेश कर ही रहे थे कि तभी सूर्य उत्तरायण का वह समय आ गया

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



110

जिसका इन्तजार बड़े-२ योगी, मुनि, ऋषि करते है।

⇒ पितामह भीष्म ने सूर्य उत्तरायण होने पर ही प्राण क्यो त्यागे?

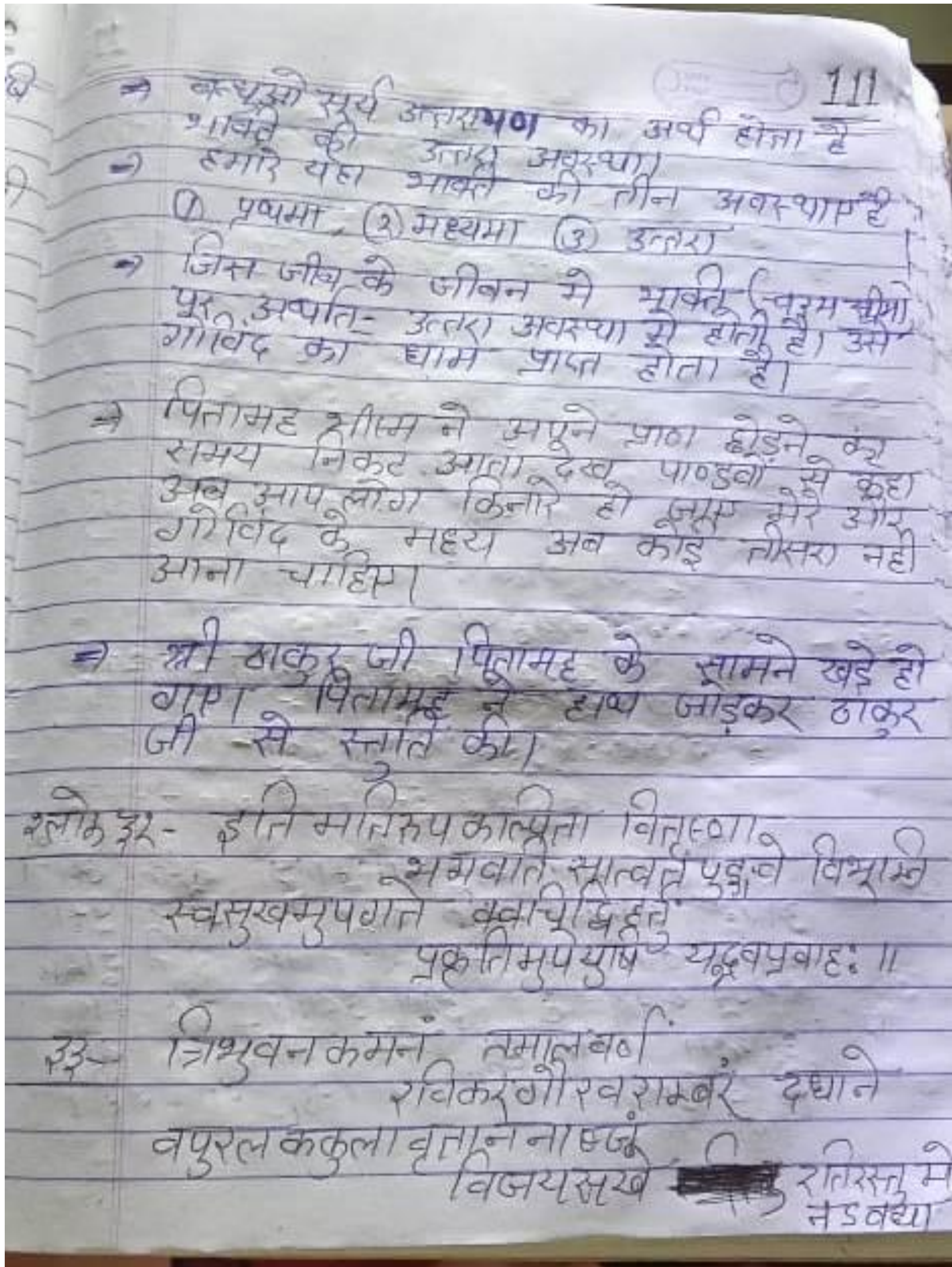
⇒ पितामह भीष्म भली भाँति जानते थे कि शरीर से आत्मा निकलने के बाद शरीर की तीन ही गति होती है।
(1) ऊर्ध्वगति (2) स्थिर गति (3) अधोगति

⇒ भीष्म यह भली भाँति जानते थे कि सूर्य के उत्तरायण होने पर प्राण त्यागने पर सद्गति मिलती है। और वे पुनः अपने लोक जन्म मुक्त हो जायेंगे। इसलिए वे सूर्य के उत्तरायण होने का इंतजार कर रहे थे।

⇒ पितामह भीष्म ने जिस दिन प्राण त्यागे थे वह माघ माह की शुक्ल पक्ष की अष्टमी अष्टमी तिथि थी।

⇒ बन्धुओ जरा विचार करे क्या सूर्य के उत्तरायण होने पर ही प्राण त्यागने पर आपको मोक्ष सद्गति, भगवत् धाम मिलेगा। सूर्य दक्षिणायन मे प्राण त्यागने वालो को नर्क मे जाना पड़ेगा।

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



111

→ कथाओ सूर्य उत्तरायण का अर्थ होता है भक्ति की उत्कृष्ट अवस्था।

→ हमारे यहा भक्ति की तीन अवस्थाएँ है
① प्रथमा, ② मध्यमा ③ उत्तरा

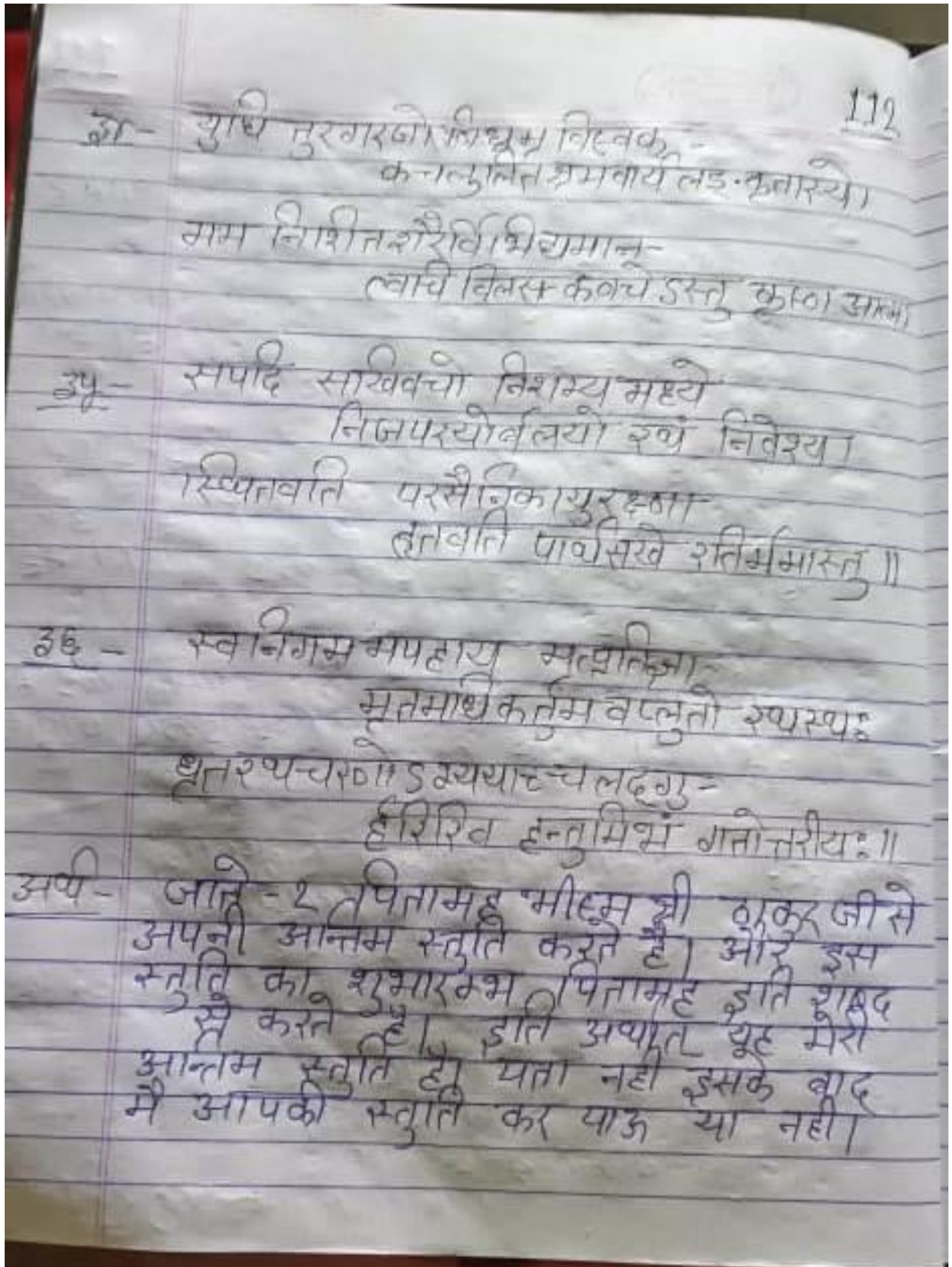
→ जिस जीव के जीवन मे भक्ति (चरम सीमा) पर अर्थात् उत्तरा अवस्था मे होती है। उसे गोविंद का धाम प्राप्त होता है।

→ पितामह भीष्म ने अपने प्राण छोड़ने का समय निकट आता देख पाण्डवों से कहा अब आप लोग किनारे हो जाए मेरे और गोविंद के मध्य अब कोई तीसरा नही आना चाहिए।

→ श्री ठाकुर जी पितामह के सामने खड़े हो गए। पितामह ने हाथ जोड़कर ठाकुर जी से स्तुति की।

श्लोक 32- इति मतिरुपकल्पिता वितृष्णा
भगवति सात्वतपुङ्गवे विभूम्नि
स्वसुखमुपगते क्वचिद्विहर्तुं
प्रकृतिमुपेयुषि यद्भवप्रवाहः ॥

33- त्रिभुवनकमनं तमालवर्णं
रविकरगौरवराम्बरं दधाने
वपुरलककुलावृताननाब्जं
विजयसखे रतिरस्तु मे
नडवद्या

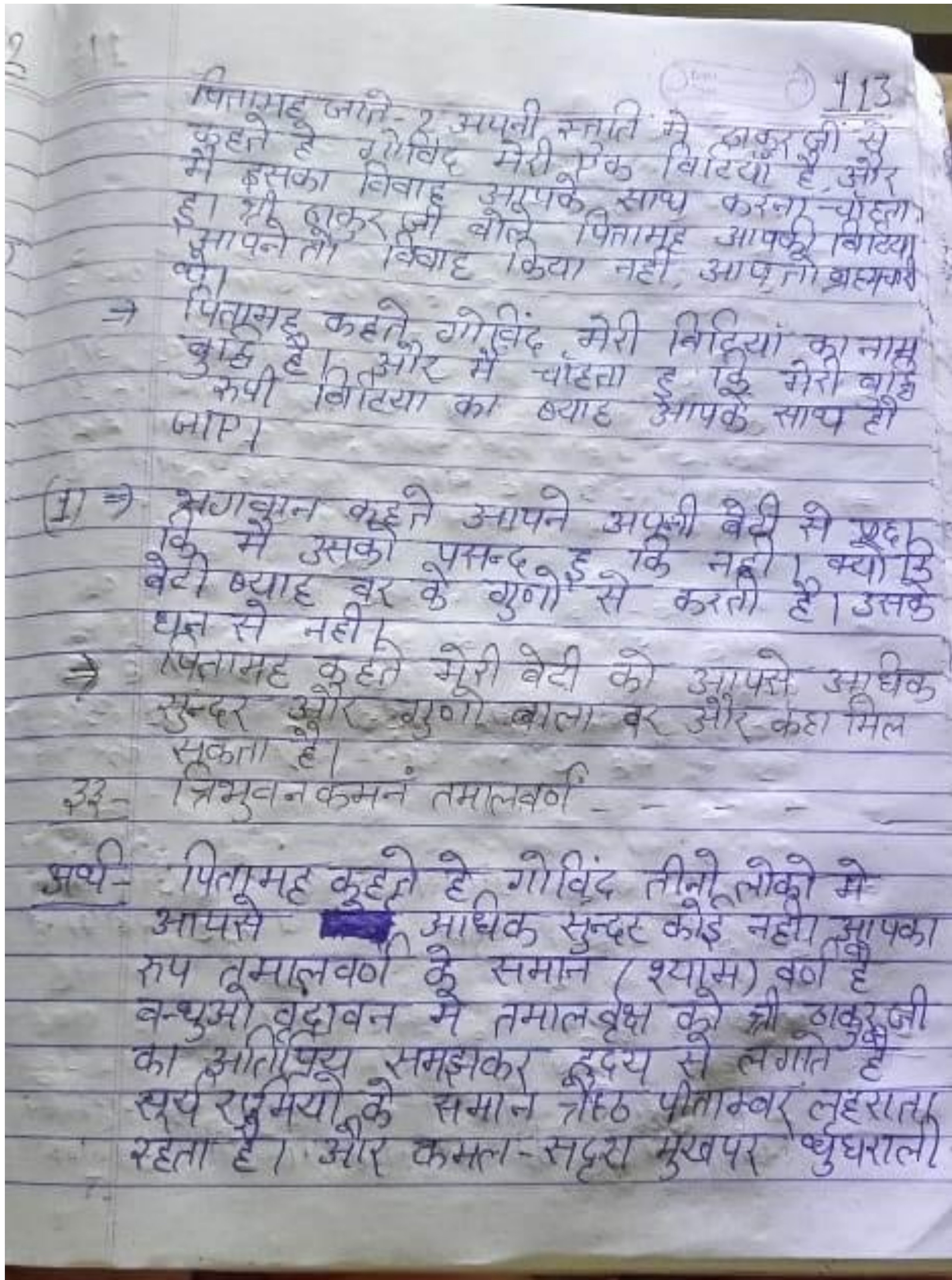

112

३३- युधि तुरगरजोविधूम्रविष्वक्-
कचलुलितश्रमवार्यलङ्कृतास्ये।
मम निशितशरैर्विभिद्यमान-
त्वचि विलसत्कवचेऽस्तु कृष्ण आत्मा।

३४- सपदि सखिवचो निशम्य मध्ये
निजपरयोर्बलयो रथं निवेश्य।
स्थितवति परसैनिकायुरक्ष्णा
हृतवति पार्थसखे रतिर्ममास्तु॥

३६ - स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञा-
मृतमधिकर्तुमवप्लुतो रथस्थः।
धृतरथचरणोऽभ्ययाच्चलद्गु-
र्हरिरिव हन्तुमिभं गतोत्तरीयः॥

अर्थ- जाते-२ पितामह भीष्म जी ठाकुर जी से अपनी अन्तिम स्तुति करते हैं। और इस स्तुति का शुभारम्भ पितामह इति शब्द से करते हैं। इति अर्थात यह मेरी अन्तिम स्तुति है। पता नहीं इसके बाद मैं आपकी स्तुति कर पाऊं या नहीं।



113

पितामह जाते-2 अपनी स्तुति मे ठाकुरजी से कहते है गोविंद मेरी एक बिटिया है और मै इसका विवाह आपके साथ करना चाहता हूं। श्री ठाकुर जी बोले पितामह आपकी बिटिया आपने तो विवाह किया नहीं, आप तो ब्रह्मचारी थे।

⇒ पितामह कहते गोविंद मेरी बिटिया का नाम बुद्धि है। और मैं चाहता हूं कि मेरी बुद्धि रूपी बिटिया का ब्याह आपके साथ हो जाए।

(1) ⇒ भगवान कहते आपने अपनी बेटी से पूछा कि मै उसको पसन्द हूं कि नहीं। क्योंकि बेटी ब्याह वर के गुणो से करती है। उसके धन से नहीं।

⇒ पितामह कहते मेरी बेटी को आपसे अधिक सुन्दर और गुणो वाला वर और कहा मिल सकता है।

33- त्रिभुवनकमनं तमालवर्णं - - - -

अर्थ- पितामह कहते है गोविंद तीनो लोको मे आपसे ▬ अधिक सुन्दर कोई नहीं आपका रूप तमालवर्ण के समान (श्याम) वर्ण है बन्धुओ वृंदावन मे तमाल वृक्ष को श्री ठाकुरजी का अतिप्रिय समझकर हृदय से लगाते है सूर्य रश्मियो के समान जो पीताम्बर लहराता रहता है। और कमल-सदृश मुखपर घुंघराली

114

अलके लटकती रहती हैं। जो भी आपके स्वरूप को एकबार देखता है वो देखकर ही रह जाता पितामह कहते –

→ हे कृष्ण लाला तुम होते लली
तो गले कट जाते करोड़न के॥

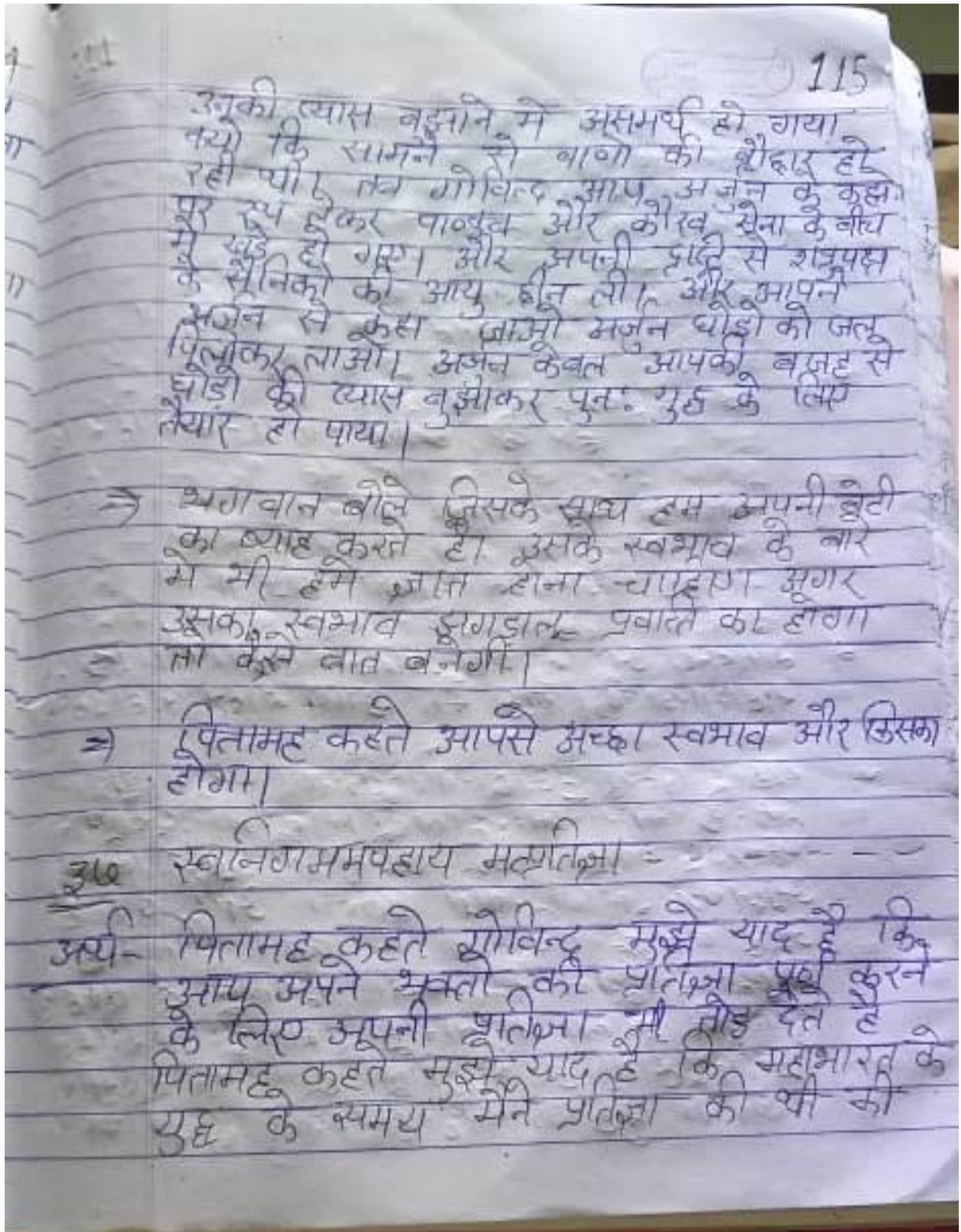
अर्थ– गोविन्द अभी तो आप लाला बनकर आए हो तो सारी दुनिया आपकी दीवानी है और कहीं आप लाली बनकर आते तो क्या होता।
→ इसलिए अब यह बात तो पूछिए मत कि मेरी बेटी को आप पसन्द हो कि नहीं।

(2) पितामह से भगवान कहते हम बेटी का ब्याह जिसके साथ करते हैं, उस वर के अन्दर यह तो देखते हैं वीरता है कि नहीं। आवश्यकता पड़ने पर संकट की घड़ी में वह अपनी पत्नी की रक्षा कर सकेगा या नहीं।

→ पितामह कहते आपसे अच्छा वीर और कौन हो सकता है। मुझे याद है रणभूमि के मैदान में –

श्लो– सपदि सखिवचो निशम्य मध्ये,
निजपरयोर्बलयो रथं निवेश्य

अर्थ– जब युद्ध के मैदान में अर्जुन के रथ में लगी घोड़ो को प्यास लगी और अर्जुन



115

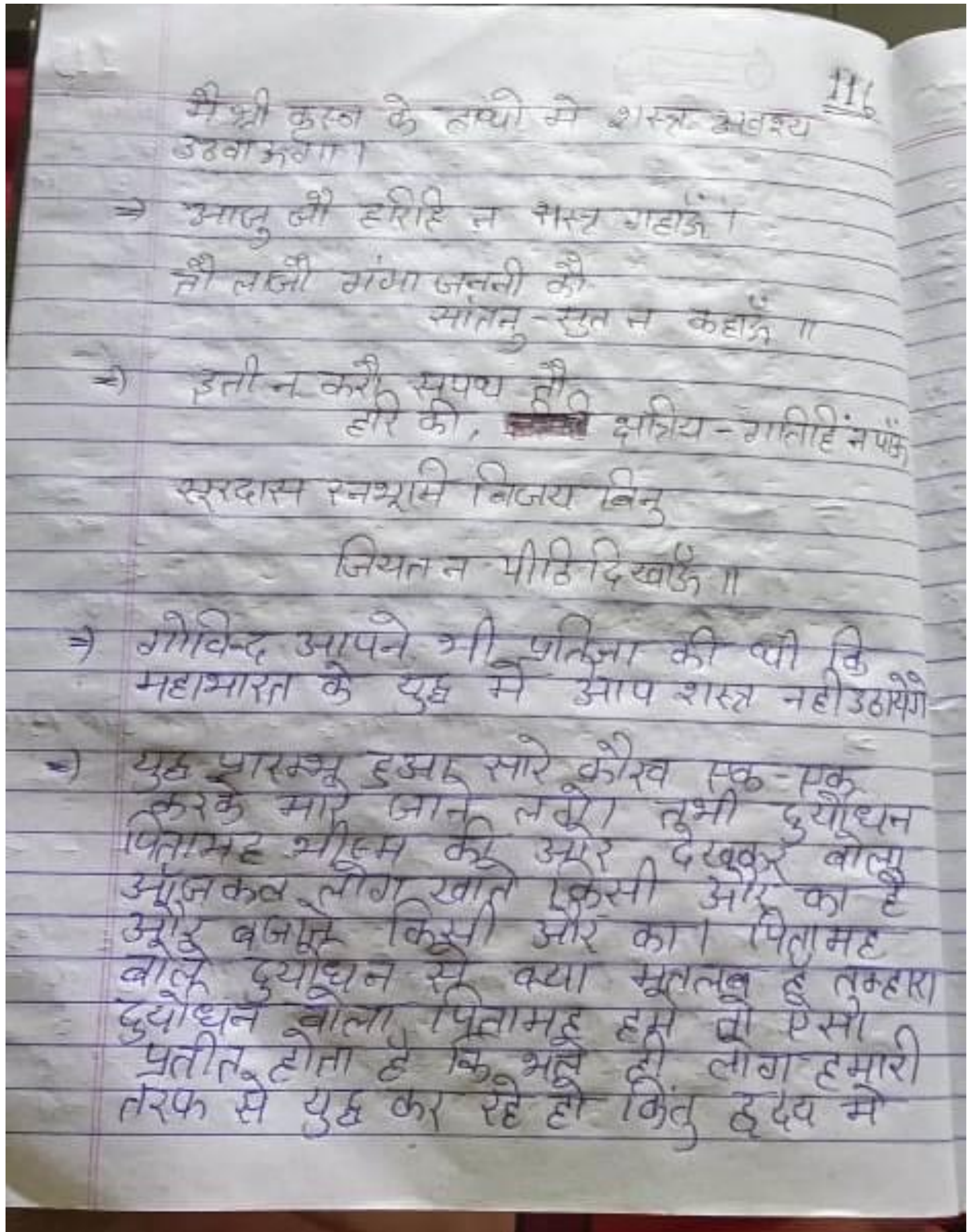
उनकी प्यास बुझाने मे असमर्थ हो गया क्यो कि सामने से बाणो की बौछार हो रही थी। तब गोविन्द आप अर्जुन के कक्षा पर रुष्ट होकर पाण्डव और कौरव सेना के बीच मे खडे हो गए। और अपनी दृष्टि से शत्रुपक्ष के सैनिको की आयु छीन ली। और आपने अर्जुन से कहा जाओ अर्जुन घोडो को जल पिलाकर लाओ। अर्जुन केवल आपकी वजह से घोडो की प्यास बुझाकर पुनः युद्ध के लिए तैयार हो पाया।

⇒ भगवान बोले जिसके साथ हम अपनी बेटी का ब्याह करते है उसके स्वभाव के बारे मे भी हमे ज्ञात होना चाहिए। अगर उसका स्वभाव झगडालू प्रवृत्ति का होगा तो कैसे बात बनेगी।

⇒ पितामह कहते आपसे अच्छा स्वभाव और किसका होगा।

श्लो स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञा -

अर्थ- पितामह कहते गोविन्द मुझे याद है कि आप अपने भक्तो की प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए अपनी प्रतिज्ञा भी तोड देते है पितामह कहते मुझे याद है कि महाभारत के युद्ध के समय मैने प्रतिज्ञा की थी की



116

मैं श्री कृष्ण के हाथों मे शस्त्र अवश्य उठवाऊंगा।

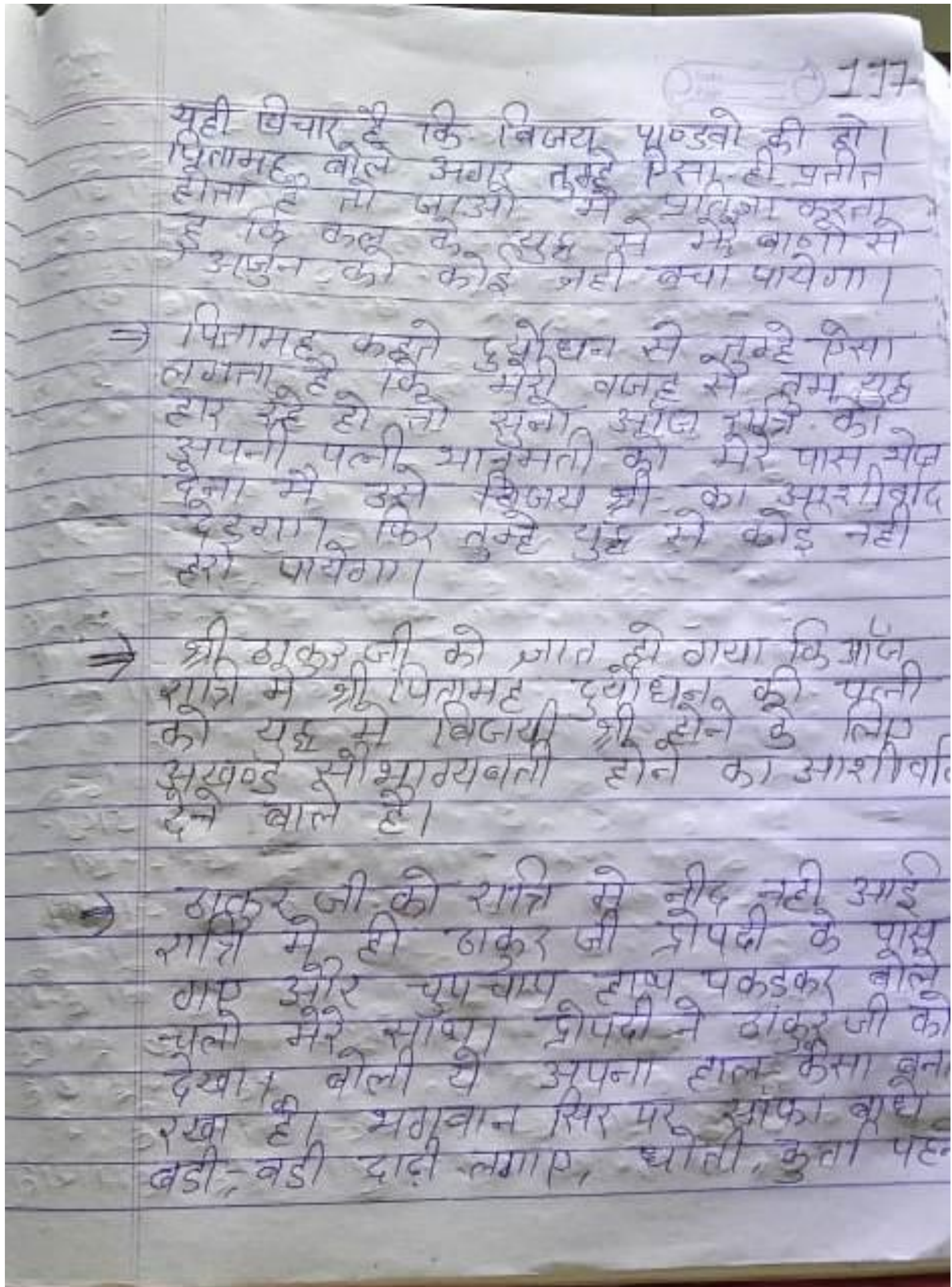
⇒ आजु जौ हरिहि न शस्त्र गहाऊं।
तौ लाजौं गंगा जननी कौ
सांतनु-सुत न कहाऊं॥

⇒ इती न करौं सपथ तौ हरि की, क्षत्रिय-गतिहिं न पाऊं
सूरदास रनभूमि बिजय बिनु
जियत न पीठि दिखाऊं॥

⇒ गोविन्द आपने भी प्रतिज्ञा की थी कि महाभारत के युद्ध मे आप शस्त्र नहीउठायेंगे

⇒ युद्ध प्रारम्भ हुआ सारे कौरव एक-एक करके मारे जाने लगे। तभी दुर्योधन पितामह भीष्म की ओर देखकर बोला आजकल लोग खाते किसी और का है और बजाते किसी और का। पितामह बोले दुर्योधन से क्या मतलब है तुम्हारा दुर्योधन बोला पितामह हमे तो ऐसा प्रतीत होता है कि भले ही लोग हमारी तरफ से युद्ध कर रहे हो किंतु हृदय मे

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



117

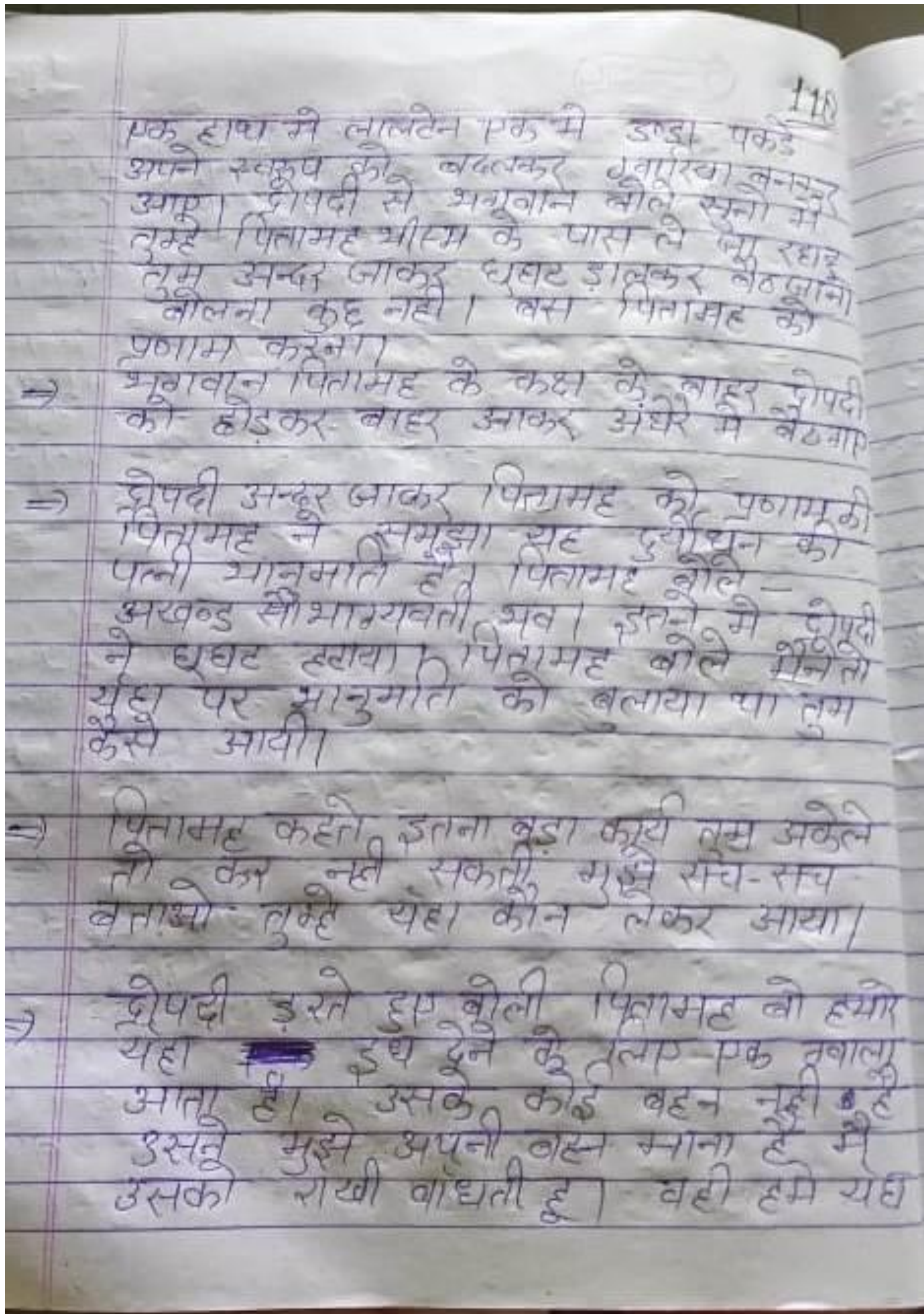
यही विचार है कि विजय पाण्डवो की हो। पितामह बोले अगर तुम्हे ऐसा ही प्रतीत होता है तो जाओ मै प्रतिज्ञा करता हूँ कि कल के युद्ध मे मैं बाणो से अर्जुन को कोई नही बचा पायेगा।

⇒ पितामह कहते दुर्योधन से तुम्हे ऐसा लगता है कि मेरी वजह से तुम युद्ध हार रहे हो तो सुनो आज रात्रि को अपनी पत्नी भानुमती को मेरे पास भेज देना मै उसे विजय श्री का आशीर्वाद दे दूंगा फिर तुम्हे युद्ध मे कोई नही हरा पायेगा।

⇒ श्री ठाकुर जी को ज्ञात हो गया कि आज रात्रि मे श्री पितामह दुर्योधन की पत्नी को युद्ध मे विजयी श्री होने के लिए अखण्ड सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद देने वाले है।

⇒ ठाकुर जी को रात्रि मे नींद नही आई रात्रि मे ही ठाकुर जी द्रौपदी के पास गए और चुपचाप हाथ पकडकर बोले चलो मेरे साथ। द्रौपदी ने ठाकुर जी को देखा, बोली ये अपना हाल कैसा बना रखा है। भगवान सिर पर झाँपा बाँधे बडी-बडी दाढ़ी लगाए, धोती, कुर्ता पहन

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



118

एक हाथ मे लालटेन एक मे डण्डा पकड़े अपने स्वरूप को बदलकर ग्वारिया बनकर आए। द्रौपदी से भगवान बोले सुनो मै तुम्हे पितामह भीष्म के पास ले जा रहा तुम अन्दर जाकर घूंघट डालकर बैठ जाना बोलना कुछ नही। बस पितामह को प्रणाम करना।

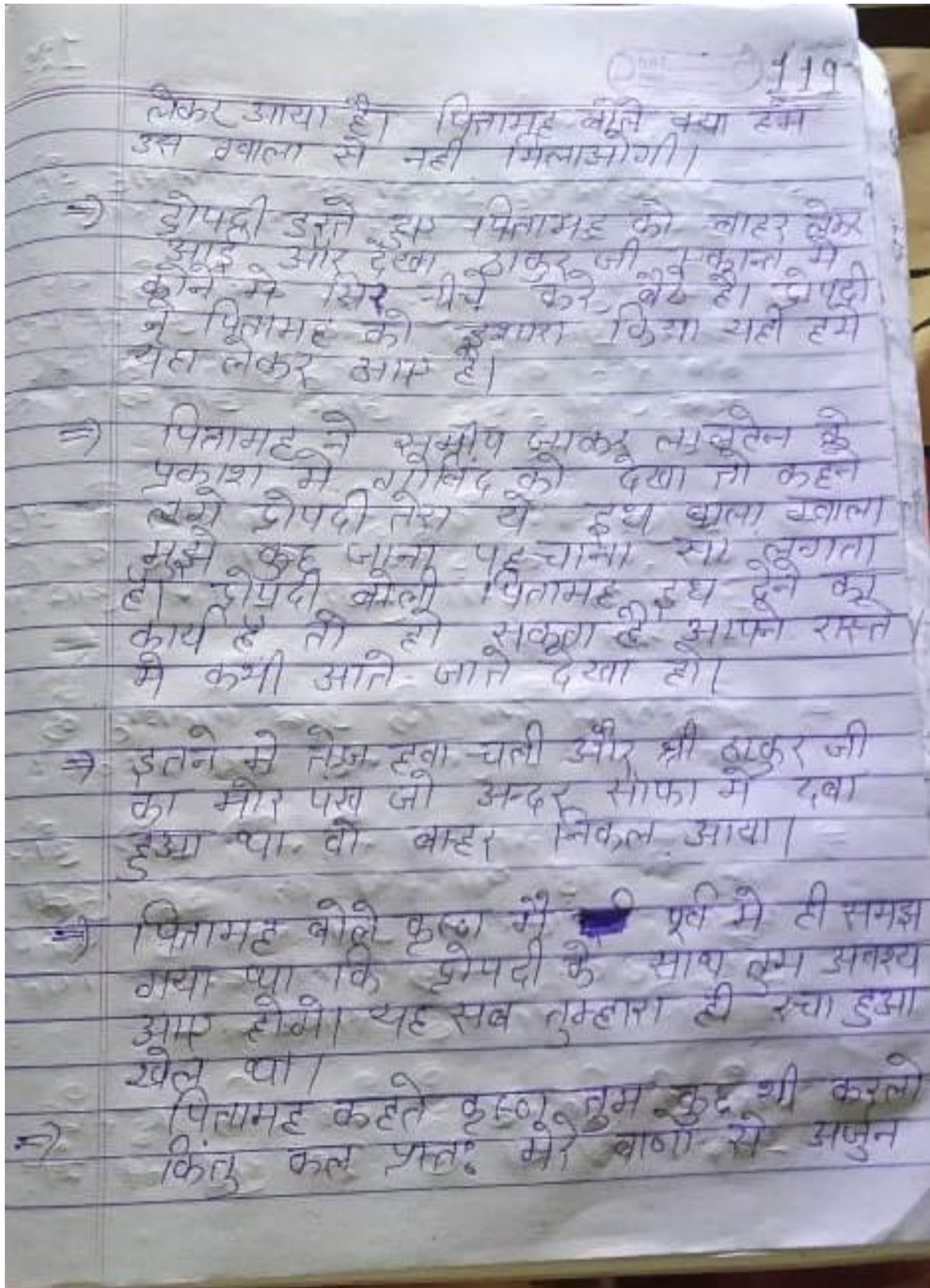
⇒ भगवान पितामह के कक्ष के बाहर द्रौपदी को छोड़कर बाहर आकर अंधेरे मे बैठ गए

⇒ द्रौपदी अन्दर जाकर पितामह को प्रणाम की पितामह ने समझा यह दुर्योधन की पत्नी भानुमति है। पितामह बोले— अखण्ड सौभाग्यवती भव। इतने मे द्रौपदी ने घूंघट हटाया। पितामह बोले मैने तो युद्ध पर भानुमति को बुलाया था तुम कैसे आयी।

⇒ पितामह कहते इतना बड़ा कार्य तुम अकेले तो कर नही सकती, मुझे सच-सच बताओ तुम्हे यहा कौन लेकर आया।

⇒ द्रौपदी डरते हुए बोली पितामह वो हमारे यहा दूध देने के लिए एक ग्वाला आता है। उसके कोई बहन नही है उसने मुझे अपनी बहन माना है मै उसको राखी बांधती हू। वही हमे यहा

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



119

लेकर आया है। पितामह बोले क्या हमें उस ग्वाला से नहीं मिलाओगी।

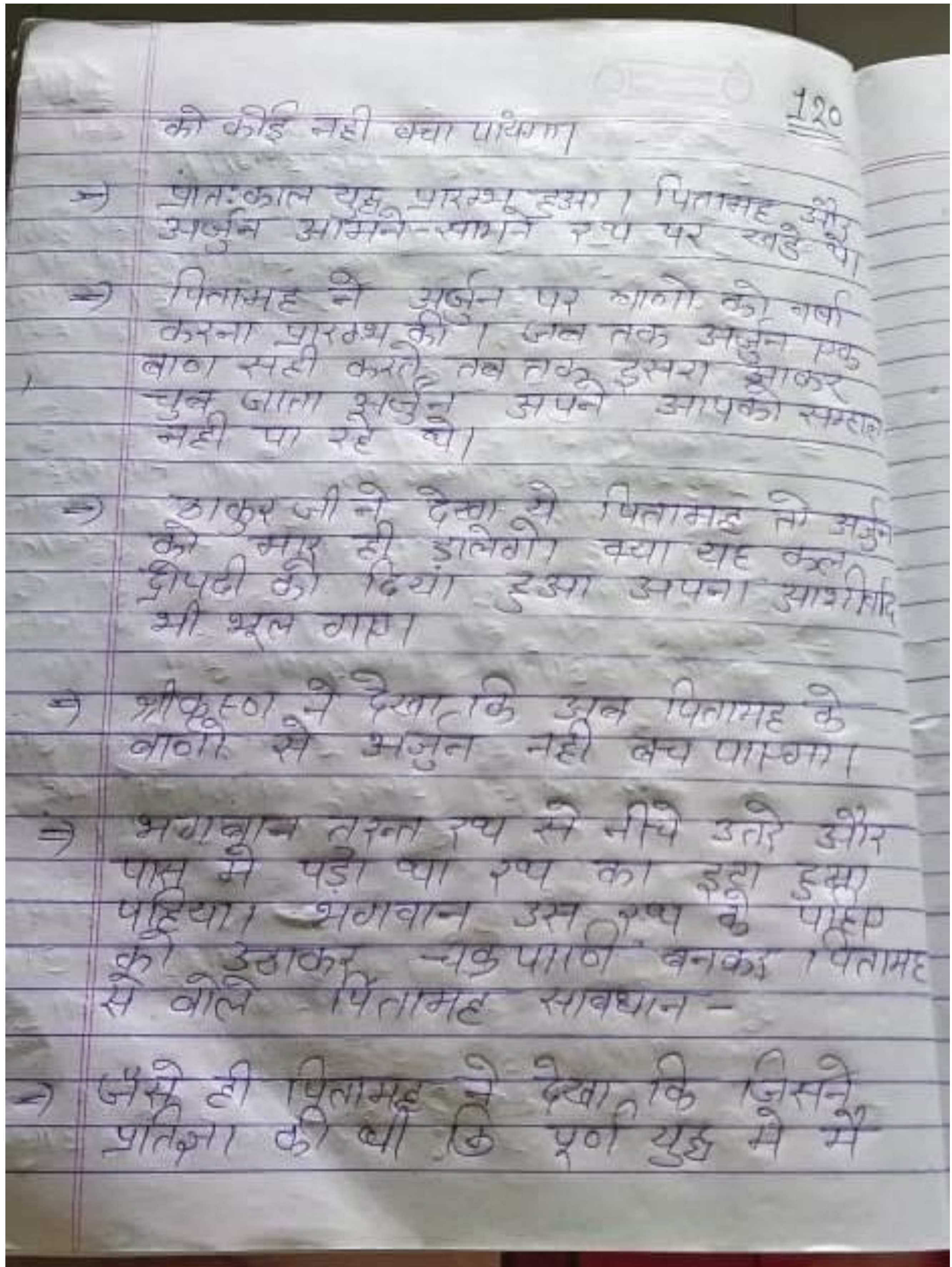
⇒ द्रौपदी डरते हुए पितामह को बाहर लेकर आई और देखा ठाकुर जी एकान्त मे कोने मे सिर नीचे करे बैठे है। द्रौपदी ने पितामह को इशारा किया यही हमें यहां लेकर आए है।

⇒ पितामह ने समीप जाकर लालटेन के प्रकाश मे गोविंद को देखा तो कहने लगे द्रौपदी तेरा ये दूध वाला ग्वाला मुझे कुछ जाना पहचाना सा लगता है। द्रौपदी बोली पितामह दूध देने का कार्य है तो हो सकता है आपने रास्ते मे कभी आते जाते देखा हो।

⇒ इतने मे तेज हवा चली और श्री ठाकुर जी का मोर पंख जो अन्दर साफा मे दबा हुआ था वो बाहर निकल आया।

⇒ पितामह बोले कृष्ण मैं पहले ही समझ गया था कि द्रौपदी के साथ तुम अवश्य आए होगे। यह सब तुम्हारा ही रचा हुआ खेल था।

⇒ पितामह कहते कृष्ण तुम कुछ भी करलो किंतु कल प्रातः मेरे बाणों से अर्जुन



120

को कोई नहीं बचा पायेगा।

→ प्रातःकाल युद्ध प्रारम्भ हुआ। पितामह और अर्जुन आमने-सामने रथ पर खड़े थे।

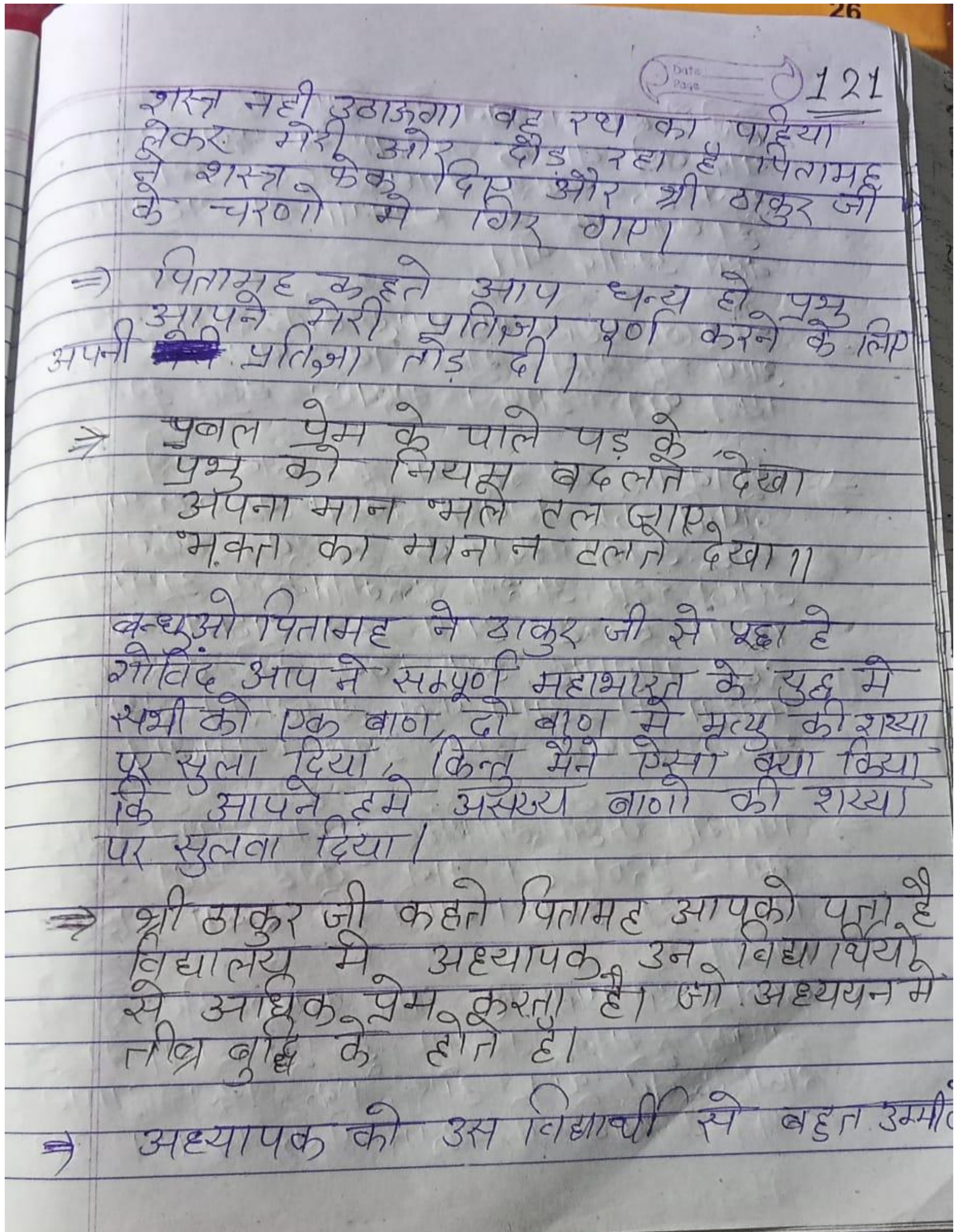
→ पितामह ने अर्जुन पर बाणो की वर्षा करना प्रारम्भ की। जब तक अर्जुन एक बाण सही करते तब तक दूसरा आकर चुभ जाता अर्जुन अपने आपको सम्हाल नहीं पा रहे थे।

→ ठाकुर जी ने देखा ये पितामह तो अर्जुन को मार ही डालेगे। क्या यह कल द्रौपदी को दिया हुआ अपना आशीर्वाद भी भूल गये।

→ श्रीकृष्ण ने देखा कि अब पितामह के बाणो से अर्जुन नहीं बच पायेगा।

→ भगवान तुरन्त रथ से नीचे उतरे और पास में पड़ा था रथ का टूटा हुआ पहिया। भगवान उस रथ के पहिए को उठाकर चक्रपाणि बनकर पितामह से बोले पितामह सावधान -

→ जैसे ही पितामह ने देखा कि जिसने प्रतिज्ञा की थी कि पूर्ण युद्ध में मैं



121

शस्त्र नही उठाऊंगा वह रथ का पहिया लेकर मेरी ओर दौड रहा है पितामह ने शस्त्र फेंक दिए और श्री ठाकुर जी के चरणो मे गिर गए।

⇒ पितामह कहते आप धन्य हो प्रभु आपने मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी।

⇒ प्रबल प्रेम के पाले पड़ के
प्रभु को नियम बदलते देखा
अपना मान भले टल जाए
भक्त का मान न टलते देखा ॥

बन्धुओ पितामह ने ठाकुर जी से पूछा हे गोविंद आपने सम्पूर्ण महाभारत के युद्ध मे सभी को एक बाण, दो बाण मे मृत्यु की शय्या पर सुला दिया, किन्तु मैने ऐसा क्या किया कि आपने हमे असंख्य बाणो की शय्या पर सुलवा दिया।

⇒ श्री ठाकुर जी कहते पितामह आपको पता है विद्यालय मे अध्यापक उन विद्यार्थियो से अधिक प्रेम करता है जो अध्ययन मे तीव्र बुद्धि के होते है।

⇒ अध्यापक को उस विद्यार्थी से बहुत उम्मीद

होती है जो अध्ययन मे होशियार होता। किन्तु यदि वही बालक परीक्षा मे फेल हो जाए तो अध्यापक सबसे अधिक दण्ड उसे ही देता है। क्यों कि उस विद्यार्थी से अध्यापक को बहुत उम्मीद थी।

⇒ श्री कृष्ण कहते- पितामह ठीक इसी भाँति आप भी मुझे मेरे सब भक्तो मे अधिक प्रिय थे। आपसे मुझको बहुत उम्मीद थी।

⇒ मै विचार कर रहा था कि जब भरी सभा मे द्रोपदी को निर्वस्त्र किया जा रहा था। तब कोई उसकी रक्षा करे न करे किंतु आप उसकी रक्षा अवश्य करेगे किन्तु आपने क्या किया बैठे-2 आप उस अधर्म को देखते रहे। पितामह उस दिन मेरे द्वारा ली जा रही परीक्षा मे आप फेल हो गए। इसलिए सबसे अधिक दण्ड आपको मिला।

⇒ पितामह कहते गोविंद मुझे अपने पूर्व जन्मो का स्मरण है। मैने कोई पाप नही किया फिर मुझे असख्य बाणो की सय्या मुझे क्यो मिली।

⇒ कृष्ण कहते पितामह याद करिए ठीक से मै आपको स्मरण कराता हू पूर्व जन्म मे आप राजा के बेटे थे। और एक दिन आपने एक सर्प को काटो के ऊपर फेक दिया। उस

123

सर्प के शरीर मे असंख्य कांटे लग गए और उसकी मृत्यु हो गई। पितामह यह सब कर्मो का खेल है। आपने सर्प को कांटो की सेज पर फेका। आज आपको बाणो की शय्या प्राप्त हो गई।

⇒ श्री राधे-राधे करमन की गति न्यारी-2

(1) कर्म से राजा राज्य करत है -2
करमन बनत भिखारी -2
श्री राधे-राधे करमन की गति - - -

⇒ भगवान कृष्ण ने पितामह भीष्म से कहा आपने इतना सब हमसे पूछा अब हम भी आपसे कुछ पूछना चाहते है।

⇒ पितामह आप जानते थे कि कौरव अन्याय-कारी है। फिर भी आप उनकी तरफ से ही युद्ध क्यो लड़े। आप पाण्डवो की तरफ से युद्ध कर सकते थे।

⇒ पितामह बोले गोविंद यदि मै पाण्डवो की तरफ से युद्ध करता तो मै आपका सामने से दीदार कैसे कर पाता क्योकि तब तो मै आपके सामने न होकर बगल मे खड़ा होता और आपको ठीक से देख भी न पाता कौरवो की ओर से युद्ध

करके जो सामने से आपकी छवि का दर्शन मैने युद्ध भूमि के मैदान मे किया है उसको बखान मै इस मुख से नही कर सकता।

⇒ पितामह कहते गोविंद अब मेरे पास अधिक समय नही है। इसलिए वसु मेरी प्रार्थना स्वीकार कीजिए और मुझे निज चरणो मे स्थान दीजिए।

⇒ पितामह कहते – भजन –

● मुरली बजाने वाले, गिरिवर उठाने वाले,
मैं दास हूँ तुम्हारा, मैं दास हूँ तुम्हारा

(1) ढूंढ लिया जग सारा मैंने
दर्शन तेरा पाया
जब मन को एकाग्र किया तो
तू दिल बीच समाया
भवपार करने वाले, बांके बिहारी हमारे
मै दास हू तुम्हारा — — — — — —

(2) तेरी माया ने प्रभु मुझको
जग मे खूब नचाया
दीनबंधु भवतारण प्रभु जी
नाम तुम्हारा गाया
सर्वत्र रहने वाले, श्री राधारमन हमारे
मै दास हू — — — ——

125

⇒ इस प्रकार-2 स्तुति करते-करते पितामह के अन्दर से एक दिव्य ज्योति निकली और वह ठाकुर जी के अन्दर जाकर समाहित हो गई। देखते-देखते पितामह का शरीर शान्त हो गया। श्री युधिष्ठिर जी ने उनके शरीर की अन्त्येष्टि क्रिया करायी।

⇒ इसके उपरान्त धृतराष्ट्र की आज्ञा और भगवान श्री कृष्ण के अनुमति से युधिष्ठिर जी को राजा बनाया गया।

⇒ भगवान श्री कृष्ण बोले पाण्डवों से अब युद्ध भी पूर्ण हो गया। आपलोगों को विजयश्री भी मिल गई। अब मुझे चलना चाहिए। मुझे हस्तिनापुर (मेरठ) आए हुए बहुत दिन हो गए। अब मुझे द्वारिका चलना चाहिए।

⇒ उन्होंने युधिष्ठिर जी से द्वारिका जाने की अनुमति मांगी-

श्लोक- आरुरोह रथं कैश्चित्परिष्वक्तोऽभिवादितः।
सुभद्रा द्रौपदी कुन्ती विराटतनया तथा॥

अर्थ- राजा ने उन्हें अपने गले से लगाकर स्वीकृति दे दी। भगवान की बिदाई पर सुभद्रा, द्रौपदी, कुन्ती, उत्तरा, गान्धारी, सभी मोहित से हो गए।

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ

126

=> भगवान श्री कृष्ण द्वारिका पहुंचकर सर्वप्रथम अपने माता पिता को प्रणाम करते है।

श्लोक – प्रविष्टस्तु गृहं पित्रोः परिष्वक्तः स्वमातृभिः
ववन्दे शिरसा सप्त देवकीप्रमुखा मुदा॥

अर्थ – भगवान सर्वप्रथम अपनी देवकी आदि साती माताओ को प्रणाम करते है।

=> बन्धुओ भगवान से हमको सीखना चाहिए कि हम अपने माता, पिता, गुरु, बड़ो का सम्मान कैसे करे।

=> आज कल तो हमने अपने बच्चो को संस्कार देना ही बंद कर दिया। आज कल के बच्चो को तो चरणस्पर्श करने मे भी शर्म आती है। और यदि प्रणाम करेगे भी तो घुटनो को स्पर्श करते है।

=> बन्धुओ बाल्यावस्था संस्कारो की नीव रखने की अवस्था होती है। माता-पिता को चाहिए कि वह अपने बच्चो को बचपन से ही सुंदर संस्कार दे।

श्लोक – माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।

127

अर्थ - माता शत्रु है, पिता बैरी है जो अपने बालको को अच्छा ज्ञान और संस्कार नही दे सकतो। अज्ञान से युक्त ब्यक्ती ज्ञानियो के सभा मे बैठने के योग्य नही है। जिस प्रकार हंसो के मध्य बगुला शोभा नही देता ठीक इसी भांति अज्ञानी भी ज्ञानियो के मध्य मे शोभा नही देता।

⇒ शास्त्र कहते संस्कार हीन ब्यक्ती किसी के सामने झुक नही सकता नष्ट हो सकता है।

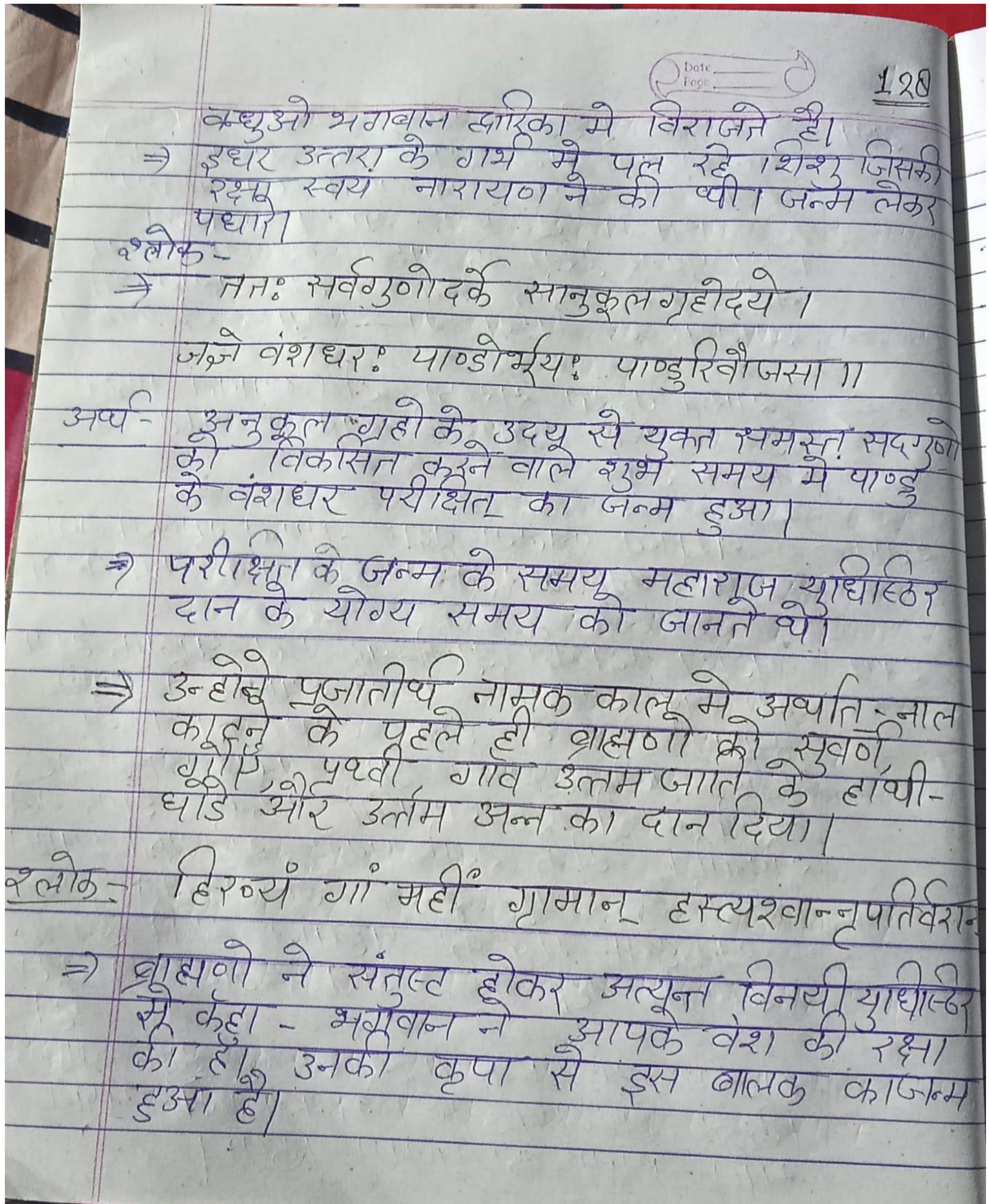
श्लोक - नमन्ति फलिनो वृक्षा, नमन्ति गुणिनो जनाः।
शुष्क काष्ठश्च मूर्खश्च, न नमन्ति कदाचन॥

अर्थ - जिस वृक्ष की डाली पर फल अधिक होगे वो झुक जाएगी, जिस ब्यक्ती मे गुण अधिक होगे वो झुक जाएगा। किन्तु जिस डाली पर पत्ते और फल नही है वह सूखी लकड़ी टूट जायेगी किन्तु झुक नही सकती। ठीक इसी प्रकार अवगुणी ब्यक्ती किसी के सामने झुक नही सकता।

⇒ अकड़ना मुर्दे की पहचान होती है झुकता वही है. जिसके अन्दर जान होती है।

भईया गुणी ब्यक्ती हर जगह झुक जाता किन्तु अवगुणी नही भगवान ने अपने माता पिता को प्रणाम किया।

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



128

बन्धुओ भगवान द्वारिका मे विराजते है।

⇒ इधर उत्तरा के गर्भ मे पल रहे शिशु जिसकी रक्षा स्वयं नारायण ने की थी। जन्म लेकर पधारे।

श्लोक -

⇒ ततः सर्वगुणोदर्के सानुकूलग्रहोदये।

जज्ञे वंशधरः पाण्डोर्भूयः पाण्डुरिवौजसा॥

अर्थ - अनुकूल ग्रहो के उदय से युक्त समस्त सद्गुणो को विकसित करने वाले शुभ समय मे पाण्डु के वंशधर परीक्षित का जन्म हुआ।

⇒ परीक्षित के जन्म के समय महाराज युधिष्ठिर दान के योग्य समय को जानते थे।

⇒ उन्होंने प्रजातीर्थ नामक काल मे अर्थात नाल काटने के पहले ही ब्राह्मणो को सुवर्ण, गौए, पृथ्वी, गाँव उत्तम जाति के हाथी-घोड़े और उत्तम अन्न का दान दिया।

श्लोक - हिरण्यं गां महीं ग्रामान् हस्त्यश्वान्नृपतिर्वरान्

⇒ ब्राह्मणो ने संतुष्ट होकर अत्यन्त विनयी युधिष्ठिर से कहा - भगवान ने आपके वंश की रक्षा की है। उनकी कृपा से इस बालक का जन्म हुआ है।

129

श्लोक तस्मान्नाम्ना विष्णुरात इति लोके बृहच्छ्रवाः।
भविष्यति न संदेहो महाभागवतो महान् ॥

अर्थ- इसलिए इसका नाम विष्णुरात होगा निश्चय ही यह बालक संसार मे बड़ा यशस्वी, भगवान का परम भक्त और महापुरुष होगा।

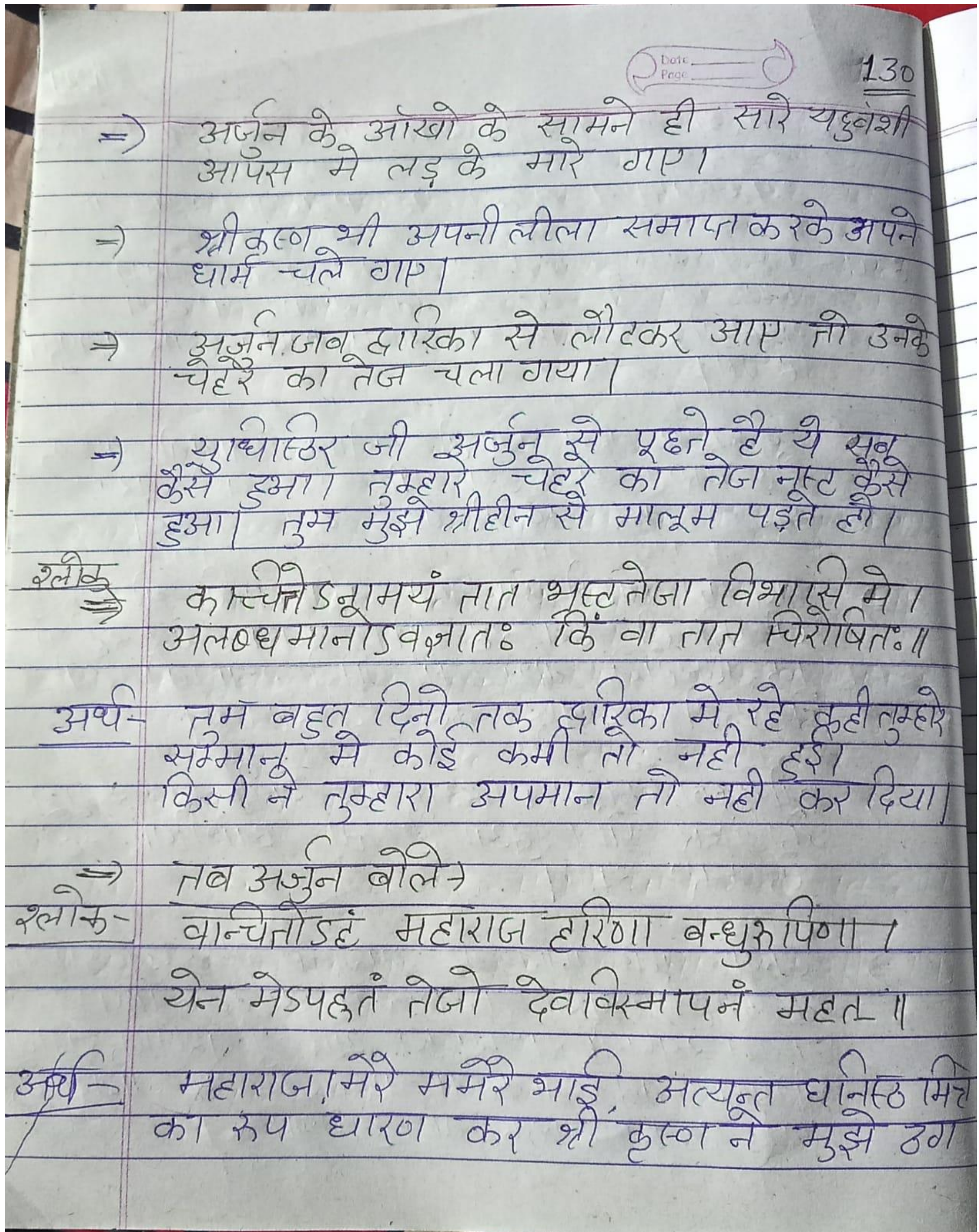
⇒ बन्धुओ जन्म लेते ही परीक्षित पालती मार के बैठ गए। और उस भीड़ मे चारो तरफ घूम-2 कर किसी को ढून रहे है।

⇒ परीक्षित किसी और को नही बल्कि श्री ठाकुर जी को ही ढून रहे थे। विचार कर रहे थे कि जिन्होने गर्भ मे मेरी रक्षा की थी। वे कही दिखाई नही दे रहे है।

⇒ श्री कृष्ण को ज्ञात हुआ कि मेरी बहन सुभद्रा के घर पौत्र हुआ है तो आशीर्वाद देने के लिए आए।

⇒ जन्मउत्सव मनाने के उपरान्त श्री कृष्ण द्वारिका के लिए प्रस्थान किए तो उनके साथ अर्जुन स्वजनो से मिलने और पुण्यश्लोक भगवान श्री कृष्ण अब क्या करना चाहते है- यह जानने के लिए अर्जुन द्वारका गए हुए थे।

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



130

⇒ अर्जुन के आँखो के सामने ही सारे यदुवंशी आपस मे लड़ के मारे गए।

⇒ श्रीकृष्ण भी अपनी लीला समाप्त करके अपने धाम चले गए।

⇒ अर्जुन जब द्वारिका से लौटकर आए तो उनके चेहरे का तेज चला गया।

⇒ युधिष्ठिर जी अर्जुन से पूछते है ये सब कैसे हुआ। तुम्हारे चेहरे का तेज नष्ट कैसे हुआ। तुम मुझे श्रीहीन से मालूम पड़ते हो।

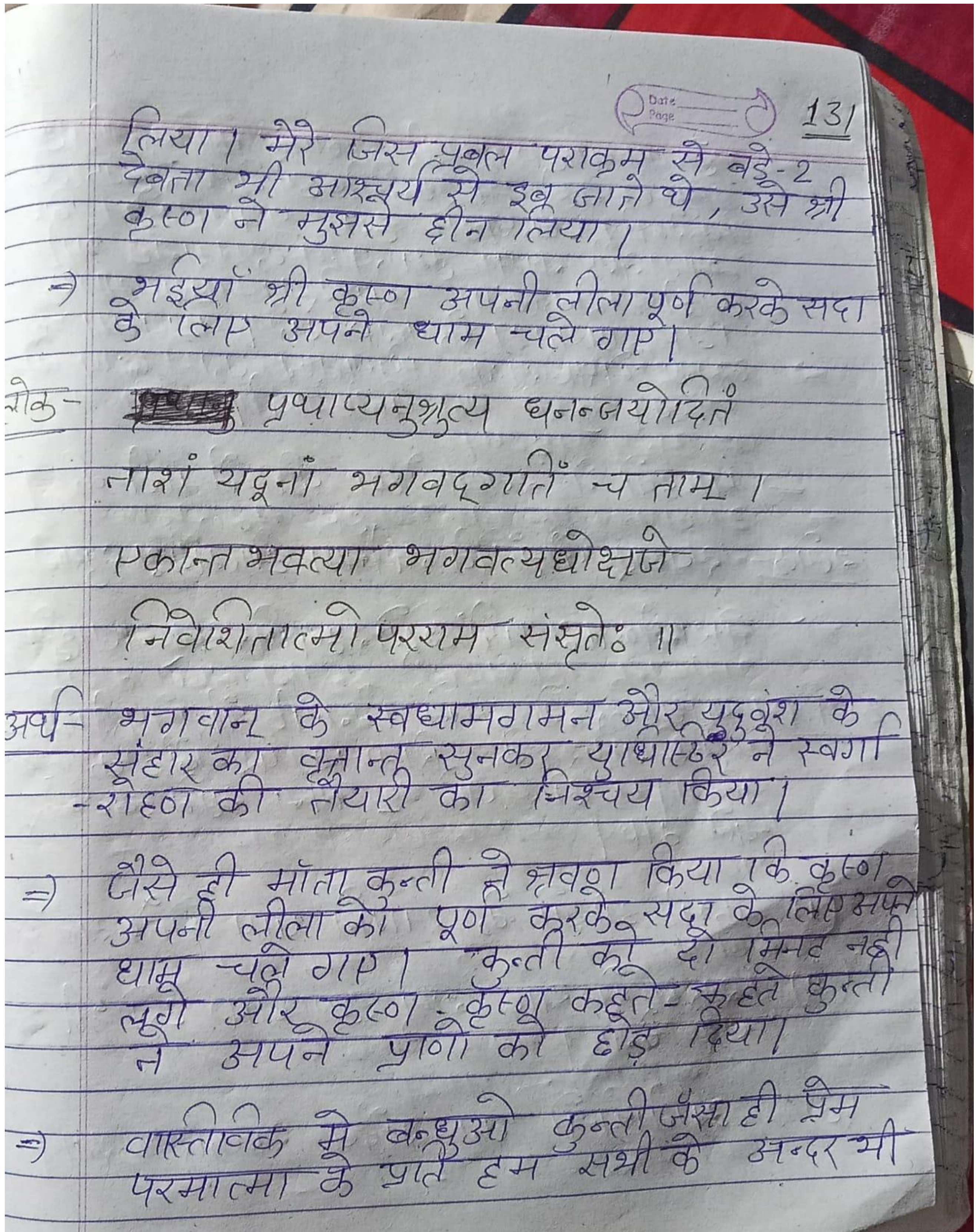
श्लोक ⇒ कच्चित्तोऽनामयं तात भ्रष्टतेजा विभासि मे।
अलब्धमानोऽवज्ञातः किं वा तात चिरोषितः॥

अर्थ- तुम बहुत दिनों तक द्वारिका मे रहे कहीं तुम्हारे सम्मान मे कोई कमी तो नहीं हुई। किसी ने तुम्हारा अपमान तो नहीं कर दिया।

⇒ तब अर्जुन बोले

श्लोक- वान्चितोऽहं महाराज हरिणा बन्धुरूपिणा।
येन मेऽपहृतं तेजो देवविस्मापनं महत॥

अर्थ- महाराज! मेरे ममेरे भाई, अत्यन्त घनिष्ठ मित्र का रूप धारण कर श्री कृष्ण ने मुझे ठगा


131

लिया। मेरे जिस प्रबल पराक्रम से बड़े-2 देवता भी आश्चर्य से डूब जाते थे, उसे श्री कृष्ण ने मुझसे छीन लिया।

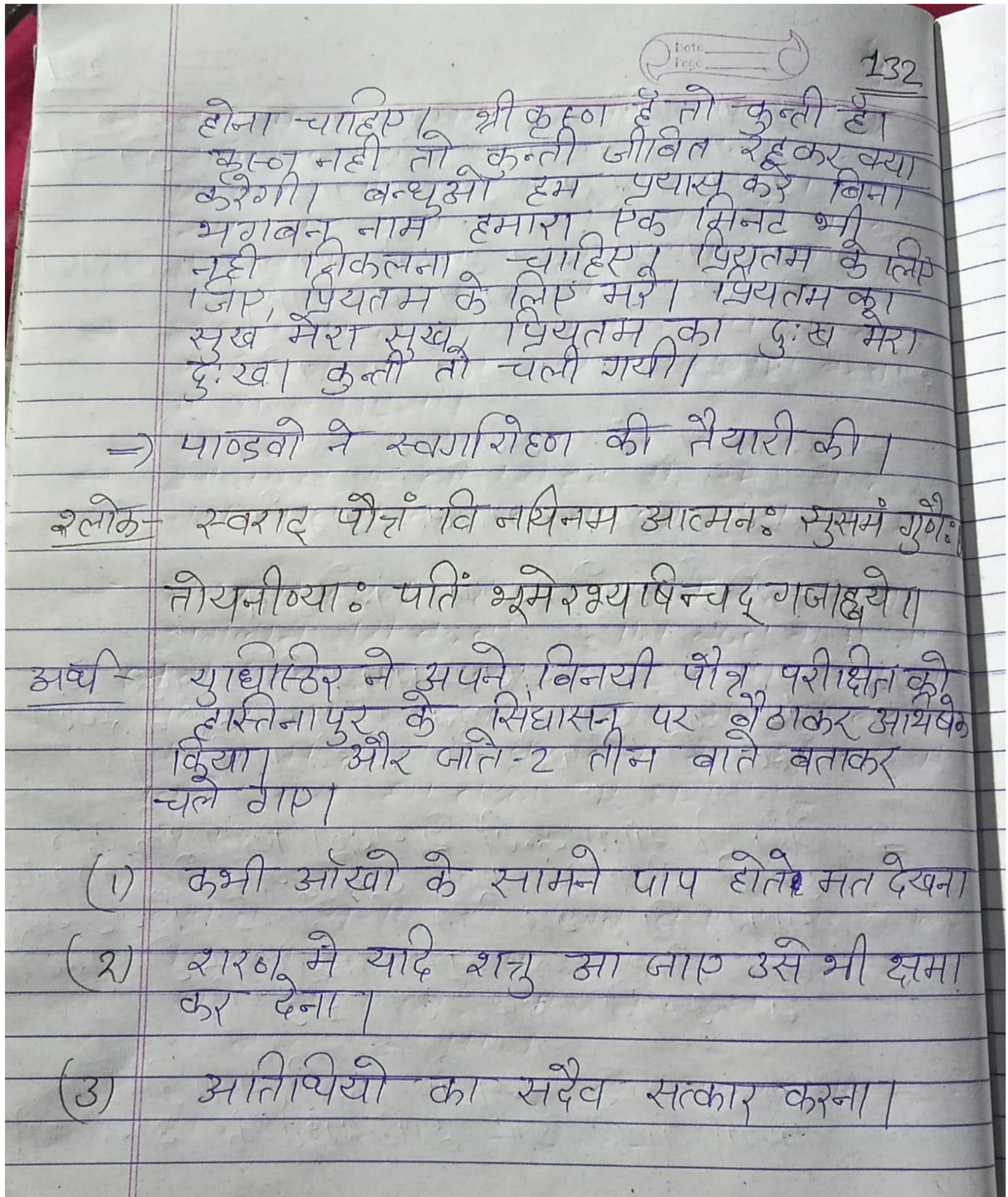
=> भईया श्री कृष्ण अपनी लीला पूर्ण करके सदा के लिए अपने धाम चले गए।

श्लोक- प्रपाप्यनुश्रुत्य धनन्जयोदितं
नाशं यदूनां भगवद्गतिं च ताम्।
एकान्त भक्त्या भगवत्यधोक्षजे
निवेशितात्मो परराम संसृतेः॥

अर्थ- भगवान के स्वधामगमन और यदुवंश के संहार का वृत्तान्त सुनकर युधिष्ठिर ने स्वर्गारोहण की तैयारी का निश्चय किया।

=> जैसे ही माता कुन्ती ने श्रवण किया कि कृष्ण अपनी लीला को पूर्ण करके सदा के लिए अपने धाम चले गए। कुन्ती को दो मिनट नहीं लगे और कृष्ण-कृष्ण कहते-कहते कुन्ती ने अपने प्राणों को छोड़ दिया।

=> वास्तविक में बन्धुओ कुन्ती जैसा ही प्रेम परमात्मा के प्रति हम सभी के अन्दर भी



132

होना चाहिए। श्रीकृष्ण हैं तो कुन्ती है। कृष्ण नही तो कुन्ती जीवित रहकर क्या करेगी। बन्धुओ हम प्रयास करे बिना भगवन् नाम हमारा एक मिनट भी नही निकलना चाहिए। प्रियतम के लिए जिए, प्रियतम के लिए मरे। प्रियतम का सुख मेरा सुख, प्रियतम का दुःख मेरा दुःख। कुन्ती तो चली गयी।

=) पाण्डवो ने स्वर्गारोहण की तैयारी की।

श्लोक- स्वराट् पौत्रं विनयिनम आत्मनः सुसमं गुणैः।
तोयनीव्याः पतिं भूमेरभ्यषिन्चद् गजाह्वये॥

अर्थ- युधिष्ठिर ने अपने विनयी पौत्र परीक्षित को हस्तिनापुर के सिंघासन पर बैठाकर अभिषेक किया। और जाते-2 तीन बाते बताकर चले गए।

(1) कभी आँखो के सामने पाप होते मत देखना।

(2) शरण मे यदि शत्रु आ जाए उसे भी क्षमा कर देना।

(3) अतिथियो का सदैव सत्कार करना।

=> युधिष्ठिर जी ने मथुरा मे शूरसेनाधिपति के रूप मे अनिरुद्ध के पुत्र वज्र का अभिषेक किया।

=> इसके उपरान्त पाण्डवो ने गृहस्थ धर्म से मुक्त होकर सन्यास ग्रहण किया। और वन की ओर
=> चल पड़े।

=> चारो भाईयो का प्राणान्त बीच मे हो गया द्रौपदी का पतन भी बीच मे हो गया।

=> शरीर सहित केवल युधिष्ठिर जी स्वर्ग गए किन्तु उन्होने युद्ध भूमि के मैदान मे केवल एकबार झूठ बोला था। इसलिए उन्हे एक मिनट के लिए नर्क जाना पड़ा।

=> युधिष्ठिर ने एक झूठ क्या बोला था?
=> युद्ध के मैदान मे जब अश्वथामा हाथी को मारा गया तब युधिष्ठिर जी बोले–
अश्वत्थामा हतः नरो व कुंजरो
= इतने मे श्री कृष्ण ने चतुरता पूर्वक बहुत जोर से शंख बजाने करवा दी। जिससे कोई कुंजरो शब्द सुन ही नही पाया। बस यही एक झूठ के कारण युधिष्ठिर जी को नर्क से गुजरना पड़ा।

Date
Page
134

=> बन्धुओ जरा विचार करे कि अश्वत्थामा मारा गया नर या हाथी। बस इतने मे ही युधिष्ठिर जी को नर्क जाना पड़ा। तो हम और आप न जाने पूरे दिन मे कितने झूठ बोलते होगे। हमारा क्या होगा?

=> बन्धुओ पहले के लोग कहते थे झूठ बोलकर अपने बच्चो को नही पालूगा। बच्चो पर असर पड़ेगा।

=> आजकल के लोग कहते महाराज यदि झूठ नही बोलेगे तो बच्चो को कैसे पालेगे।

=> बन्धुओ लोग कहते भगवान बदल गया भगवान नही बदला, इन्सान बदल गया जो लोग पहले झूठ बोलने से डरते थे आज वही पल-2 मे झूठ बोलते है। महाराज बैठे काशी मे है बता वृन्दाबन रहे है बन्धुओ विचार करो हम बदले या भगवान -

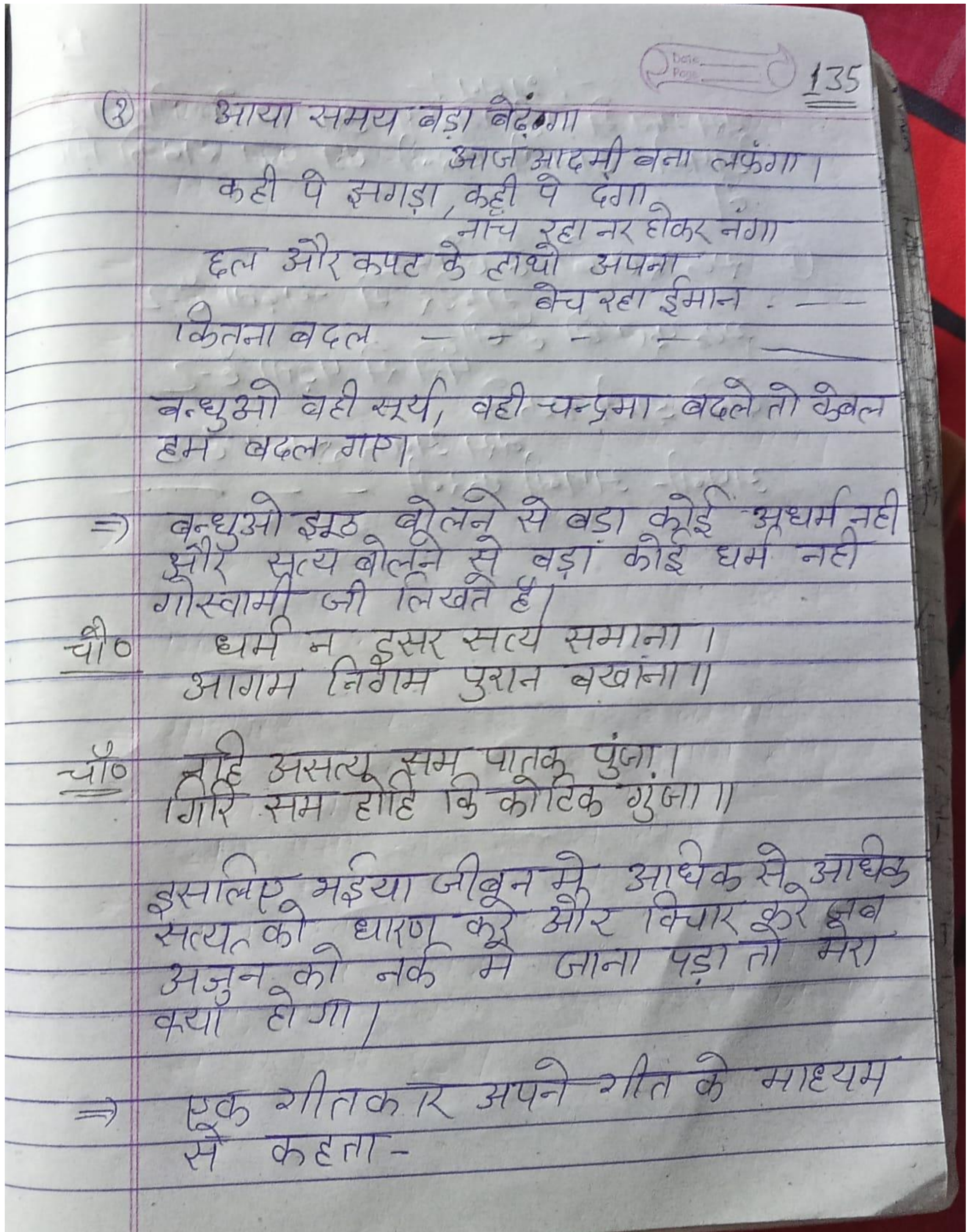
भजन -

देख तेरे संसार की हालत क्या होगई भगवान कितना बदल गया इन्सान - - -

(1) सूरज न बदला, चाँद न बदला न बदला आसमान, कितना बदल गया - -

देख तेरे - ———

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



135

(3) आया समय बड़ा बेढंगा
आज आदमी बना लफंगा।
कही पे झगड़ा, कही पे दंगा
नाच रहा नर होकर नंगा
छल और कपट के हाथो अपना
बेच रहा ईमान — —
कितना बदल — — — —

बन्धुओ वही सूर्य, वही चन्द्रमा बदले तो केवल हम बदल गए।

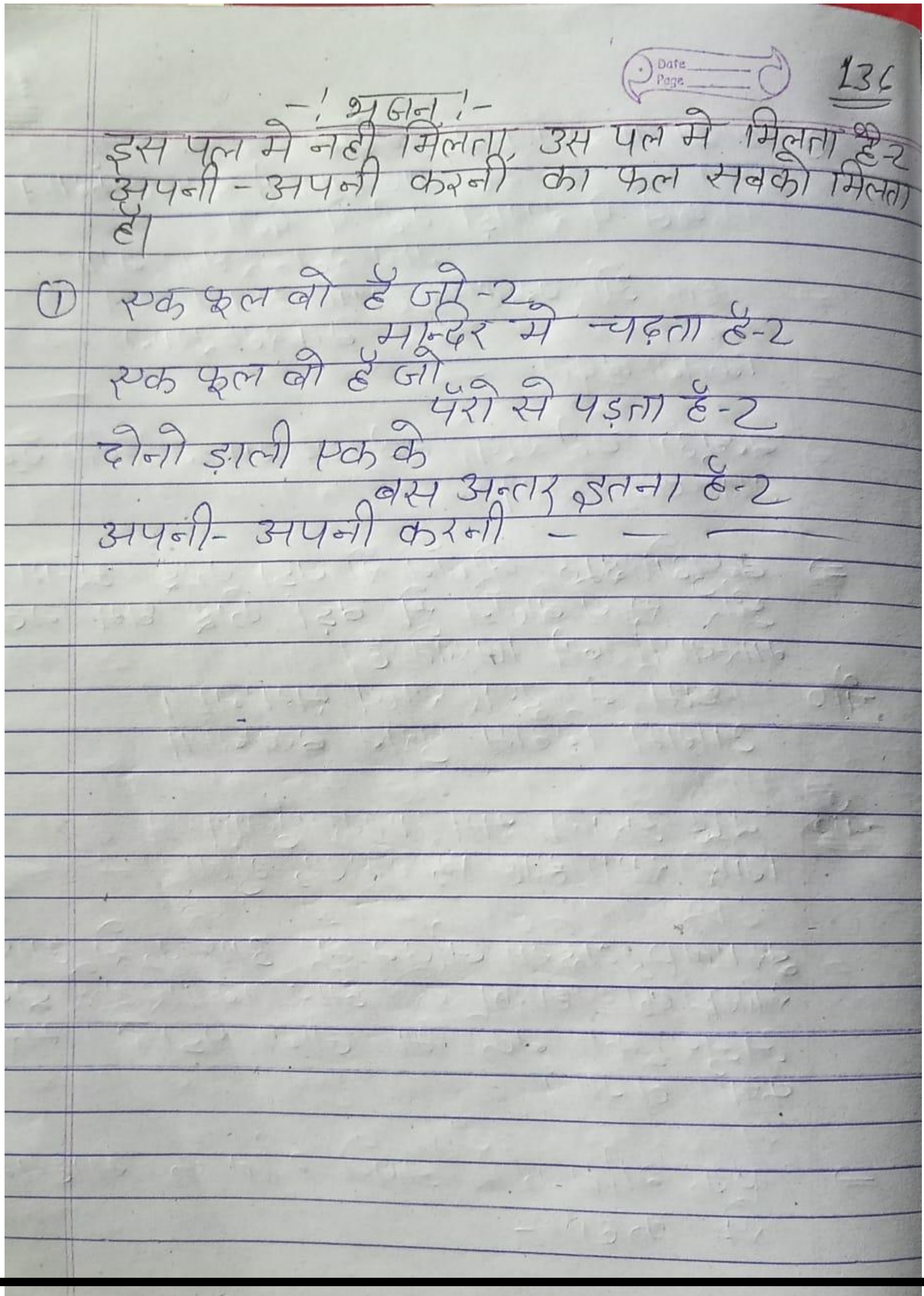
⇒ बन्धुओ झूठ बोलने से बड़ा कोई अधर्म नही और सत्य बोलने से बड़ा कोई धर्म नही गोस्वामी जी लिखते है।

चौ० धर्म न दूसर सत्य समाना।
आगम निगम पुरान बखाना॥

चौ० नहि असत्य सम पातक पुंजा।
गिरि सम होहि कि कोटिक गुंजा॥

इसलिए भईया जीवन मे अधिक से अधिक सत्य को धारण करे और विचार करे जब अर्जुन को नर्क मे जाना पड़ा तो मेरा क्या होगा।

⇒ एक गीतकार अपने गीत के माध्यम से कहता -


Date
Page
136
-! भजन !-
इस पल मे नही मिलता, उस पल मे मिलता है-2
अपनी - अपनी करनी का फल सबको मिलता है।
(1) एक फूल वो है जो-2
मन्दिर मे चढ़ता है-2
एक फूल वो है जो
पैरो से पड़ता है-2
दोनो डाली एक के
बस अन्तर इतना है-2
अपनी- अपनी करनी - -

⇒ बन्धुओ पाण्डवो के महाप्रयाण के पश्चात भगवान के परम भक्त राजा परीक्षित श्रेष्ठ ब्राह्मणो की शिक्षा के अनुसार पृथ्वी पर शासन करने।

⇒ समय आने पर परीक्षित जी का विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ।

श्लोक- स उत्तरस्य तनयामुपयेम इरावतीम्।
जनमेजयादींश्चतुरस्तस्यामुत्पादयत् सुतान्॥

अर्थ- परीक्षित का विवाह उत्तर की पुत्री इरावती से सम्पन्न हुआ।

⇒ परीक्षित और इरावती से जनमेजय आदि चार पुत्र उत्पन्न हुए।

⇒ श्री परीक्षित जी अपने चारो पुत्रो से बड़ा प्रेम करते उन्हे सुन्दर संस्कार देते-

⇒ शास्त्र का एक श्लोक बड़ी सुन्दर बात कहता-

श्लोक- लालयेत् पञ्च वर्षाणि दश वर्षाणि ताडयेत्।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत्॥

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ

138

अर्थ- पाँच वर्ष तक बालक से प्यार करना चाहिए इसके उपरान्त 10 वर्ष तक उसकी ताड़ना की जा सकती है। परन्तु 16 वर्ष की आयु मे पहुँचने पर उससे मित्र के समान व्यवहार करना चाहिए।

=> परीक्षित ने देखा अब उनका बड़ा पुत्र जनमेजय बड़ा हो गया। राजगद्दी का कार्यभार सम्हालने लगा है।

=> एकदिन परीक्षित जी अपने बाबा पाण्डवो के खजाने मे प्रवेश किए। उनकी दृष्टि एक चमचमाते स्वर्ण के मुकुट पर पड़ी। उन्होने उस मुकुट को पहन लिया।

= श्री परीक्षित जी महाराज मुकुट को पहनकर अश्व पर सवार होकर जंगल की ओर गए।

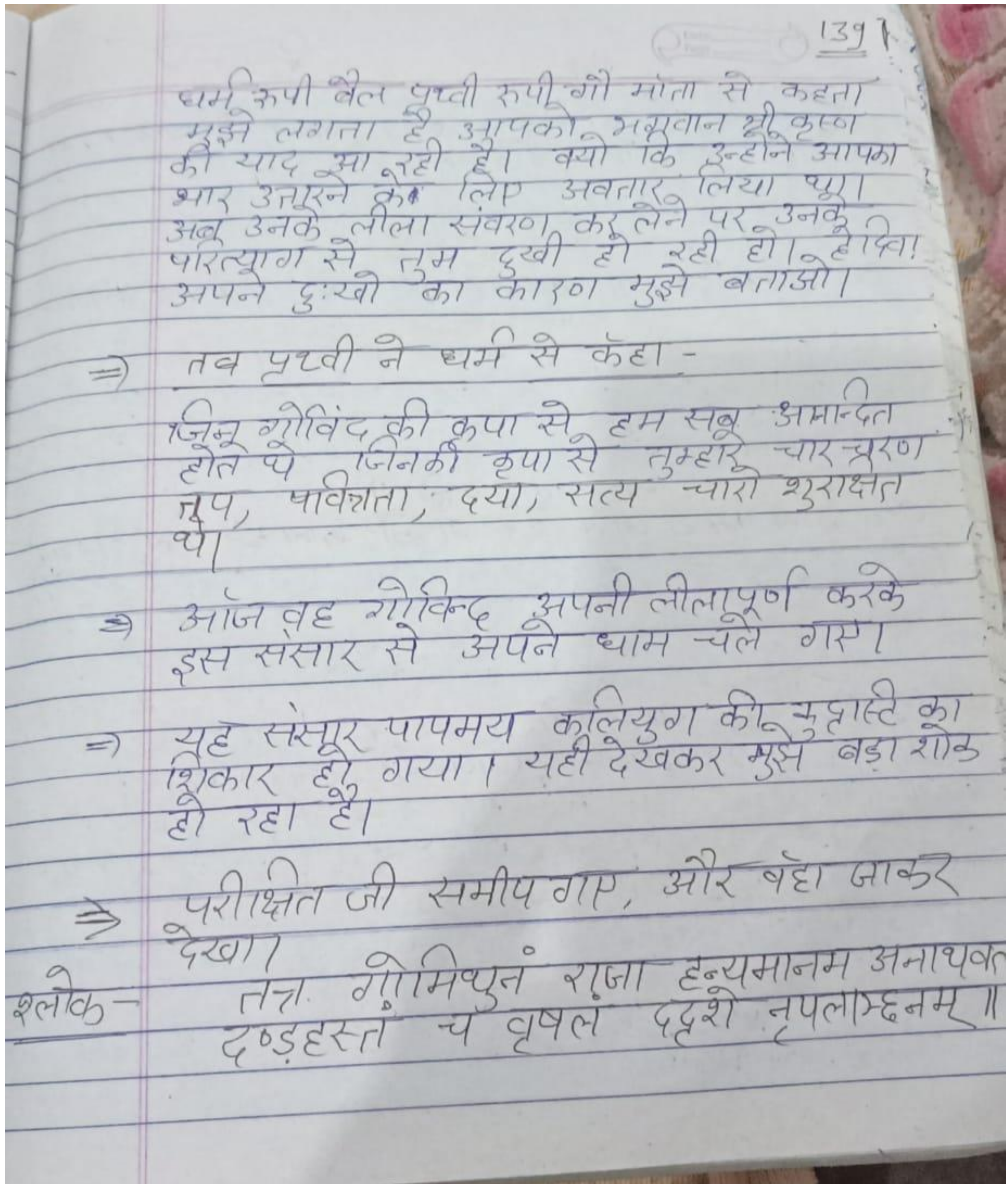
=> उन्होने वहा पर देखा कि एक पैर पर एक बैल खड़ा है। बैल के सामने गाय रुदन कर रही है।

=> धर्म रूपी बैल गाय को समझा रहा है। धर्म रूपी बैल कहता -

श्लोक

यद्वाम्ब ते भूरिभरावतार
कृतावतारस्य हरेर्धरित्रि
अन्तर्हितस्य स्मरती विसृष्टा
कर्माणि निर्वाणविलम्बितानि ॥

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



139।

धर्म रूपी बैल पृथ्वी रूपी गौ माता से कहता
मुझे लगता है आपको भगवान श्री कृष्ण
की याद आ रही है। क्यो कि उन्होंने आपका
भार उतारने के लिए अवतार लिया था।
अब उनके लीला संवरण कर लेने पर उनके
परित्याग से तुम दुखी हो रही हो। देवि!
अपने दुःखो का कारण मुझे बताओ।

=> तब पृथ्वी ने धर्म से कहा -

जिन गोविंद की कृपा से हम सब आनन्दित
होते थे जिनकी कृपा से तुम्हारे चार चरण
तप, पवित्रता, दया, सत्य चारो सुरक्षित
थे।

=> आज वह गोविन्द अपनी लीला पूर्ण करके
इस संसार से अपने धाम चले गये।

=> यह संसार पापमय कलियुग की कुदृष्टि का
शिकार हो गया। यही देखकर मुझे बड़ा शोक
हो रहा है।

=> परीक्षित जी समीप गए, और वहां जाकर
देखा।

श्लोक - तत्र गोमिथुनं राजा हन्यमानम अनाथवत
दण्डहस्तं च वृषलं ददृशे नृपलाम्छनम् ॥

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ

-: द्वितीय दिवस कथा :-

140

परीक्षित ने समीप जाकर देखा कि राजवेषधारी शूद्र हाथ में डंडा लिए हुए है और गाय बैल के जोड़े को इस तरह पीट रहा है जैसे इनका कोई स्वामी नहीं है।

⇒ राजा परीक्षित ने उस वृषभ से पूछा तुम कौन हो ? और तुम्हारे यह तीन पैर किसने काट दिए ?

⇒ वृषभ (धर्म) बोला, जो लोग किसी द्वैत को स्वीकार नहीं करते, वे अपने आप को ही अपने दुःख का कारण बतलाते है। कोई प्रारब्ध को कारण बतलाते है, तो कोई कर्म को। कुछ लोग स्वभाव को, तो कुछ लोग ईश्वर को दुःख का कारण मानते है। राजर्षे! अब इनमें कौन सा मत ठीक है, यह आप अपनी बुद्धि से विचार कीजिए। मुझे तो यही लगता है।

गोस्वामी जी कहते -

चौ॰ कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करहि सो तस फल चाखा॥

चौ॰ काहु न कोउ सुख दुख कर दाता।
निज कृत कर्म भोग सबु भ्राता॥

अर्थ - जो जैसा कर्मों का बीज बोता है उसे वैसी ही फसल काटनी पड़ती है। ना कोई किसी को सुख देता न कोई किसी को दुःख देता हम जैसा कर्म करते है। हमे वैसा ही फल प्राप्त होता है।

141

⇒ बन्धुओ कर्म भी तीन प्रकार के होते है।
(1) संचित कर्म
(2) प्रारब्ध कर्म
(3) क्रियमाण कर्म

(1) संचितकर्म-(एकत्रित) जो कर्म हमने संचित या एकत्रित किए है। अपने पूर्व जन्म मे या वर्तमान मे वह अनन्त है। हमने अनन्त बार जन्म लिया। और उनमे जो हमने कर्म किए वह सभी संचित (एकत्रित) होकर हमको प्राप्त होते है।

(2) प्रारब्धकर्म:- (भाग्य) संचित कर्म मे से थोड़ा सा भाग निकालकर हमारा भाग्य तय होता है। जिसके माध्यम से हमे सुख, दुःख प्राप्त होता है।

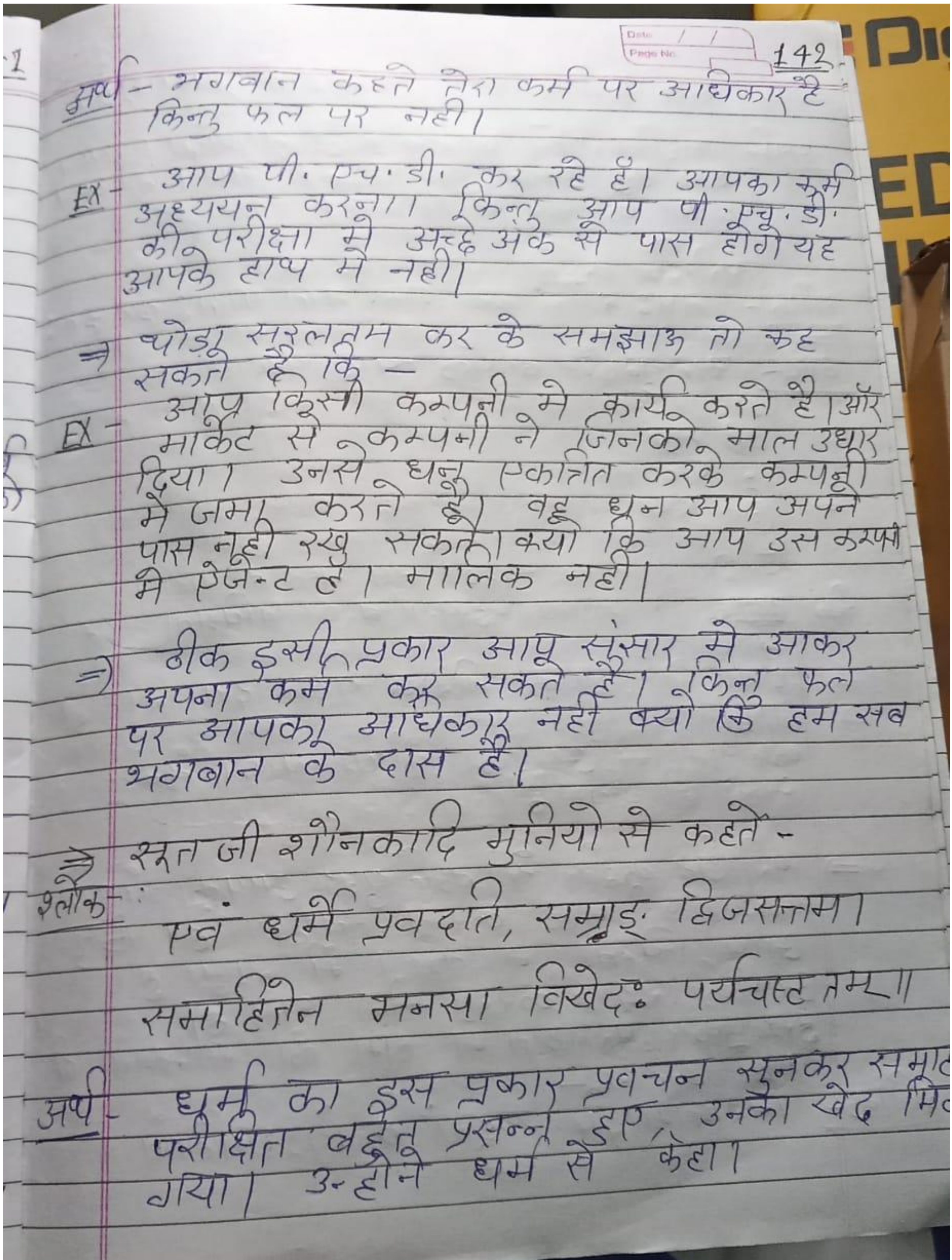
(3) क्रियमाण कर्म:- जो बर्तमान मे किया जा रहा हैं। उनको क्रियमाण कर्म कहते है। कर्म के बिना भाग्य तय होता है। कर्म बीज है। और भाग्य उसका फल।

⇒ गीता मे भगवान अर्जुन से कहते-

श्लोक- कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥
अध्याय-16-1

सर्व-
EX-
⇒
EX-

श्रीमद् भागवत द्वितीय दिवस कथा पीडीएफ



142

अर्थ - भगवान कहते तेरा कर्म पर अधिकार है किन्तु फल पर नहीं।

EX - आप पी. एच. डी. कर रहे हैं। आपका कर्म अध्ययन करना। किन्तु आप पी. एच. डी. की परीक्षा मे अच्छे अंक से पास होंगे यह आपके हाथ मे नहीं।

⇒ थोड़ा सरलतम कर के समझाऊ तो कह सकते है कि -

EX - आप किसी कम्पनी मे कार्य करते है। और मार्केट से कम्पनी ने जिनको माल उधार दिया। उनसे धन एकत्रित करके कम्पनी मे जमा करते हैं। वह धन आप अपने पास नहीं रख सकते। क्यो कि आप उस कम्पनी मे एजेन्ट है। मालिक नहीं।

⇒ ठीक इसी प्रकार आप संसार मे आकर अपना कर्म कर सकते हैं। किन्तु फल पर आपका अधिकार नहीं क्यो कि हम सब भगवान के दास हैं।

⇒ सूत जी शौनकादि मुनियो से कहते -

श्लोक - एवं धर्मे प्रवदति, सम्राड् द्विजसत्तम।
समाहितेन मनसा विखेदः पर्यचष्ट तम्॥

अर्थ - धर्म का इस प्रकार प्रवचन सुनकर सम्राट परीक्षित बहुत प्रसन्न हुए, उनका खेद मिट गया। उन्होने धर्म से कहा।

श्लोक- धर्मं ब्रवीषि धर्मज्ञ, धर्मोऽसि वृषरूपधृक्।

अर्थ- धर्मतत्व को जानने वाले वृषभदेव! आप धर्म का उपदेश कर रहे हो। अवश्य ही आप वृषभ के रूप मे धर्म है।

परीक्षित कहते -

श्लोक- तपः शौचं दया सत्यमिति पादाः कृते कृताः

अर्थ- सतयुग मे आपके चार चरण

1. तप
2. पवित्रता
3. दया
4. सत्य

मे से एक चरण तप नस्ट हो गया। त्रेता मे आपका दूसरा चरण पवित्रता नस्ट हो गया।
द्वापर मे आपका तीसरा चरण दया नस्ट हो गया।
कलियुग मे आपका चौथा चरण केवल सत्य ही बचा है।

⇒ परीक्षित कहते ये कलियुग आपका चौथा चरण भी नस्ट करना चाहता है। किंतु आप चिन्ता न करे। मै राजा हूं। आपकी रक्षा करना मेरा धर्म है। इस प्रकार परीक्षित ने धर्म को सान्त्वना दी फिर उन्होने -

श्लोक- निशातमाददे खड्गं कलयेऽधर्महेतवे ॥

Date / /
Page No 144

अर्थ- कलियुग को मारने के लिए लिए तलवार उठायी।

⇒ कलियुग ने देखा अब तो महाराज मुझे मार ही डालेंगे -

श्लोक- तत्पादमूलं शिरसा समगाद् भयविह्वलः ॥

अर्थ- कलियुग तुरन्त भयविह्वल होकर उनके चरणों मे अपना सिर रख दिया।
परीक्षित कहते -

श्लोक- न ते गुडाकेशयशोधराणां
बद्धाञ्जलेर्वै भयमास्ति किञ्चित्
न वर्तितव्यं भवता कथञ्चन
क्षेत्रे मदीये त्वमधर्मबन्धुः ॥

अर्थ- जब तू हाथ जोडकर शरण आ गया, तब अर्जुन के यशस्वी वंश मे उत्पन्न हुए किसी भी वीर से तुझे कोई भय नही है। परन्तु तू अधर्म का सहायक है, इसलिए तुझे मेरे राज्य मे बिल्कुल नही रहना चाहिए।

कलियुग बोला -
⇒ महाराज मेरे पास रहने को कोई स्थान नही यदि आप मुझे रहने के लिए कुछ स्थान देदेते तो मै आपको परेशान नही करता।

⇒ कलियुग की प्रार्थना स्वीकार करते हुए परीक्षित ने उन्हे 4 स्थान दिए।

145

श्लोक- द्यूतं पानं स्त्रियः सूना यत्राधर्मश्चतुर्विधः॥

अर्थ- परीक्षित ने (1) द्यूत क्रीडा (जुआ) (2) मद्यपान (शराब) (3) स्त्रियः (वेश्यागमन) (4) सूना (हिंसा) इन चार जगहो पर कलियुग को रहने के लिए स्थान दिया।

⇒ कलियुग बोला महाराज सारे खराब स्थान आपने मुझे दे दिए। एक आधा कोई अच्छा स्थान दे देते तो बडी कृपा होती आपकी।

⇒ महाराज परीक्षित ने कहा कलि आज से स्वर्ण मे भी तुम्हारा बास होगा।

⇒ बन्धुओ हमारे यहा कहा जाता -

⇒ धातुनां आस्मि कांचनम ॥

⇒ सोना धातुओ मे प्रभु का रूप है, स्वर्ण मे जब गोबिन्द का बास है। तो उसमे कलि कहा से आ सकता है।

⇒ बन्धुओ ध्यान से समझिए -

(1) मेहनत, ईमानदारी से कमाए धन मे स्वर्ण का वास है।

(2) चोरी, डकैती, दूसरे के धन को हरण करके जो धन कमाते उसमे कलियुग का वास है।

Date / /
Page No. 146

बन्धुओ इसलिए कहते है कि अनीति के द्वारा कमाए हुए धन से हमारा सर्वनाश ही जाता है

उदाहरण - बन्धुओ एक बार एक राजा के कोई सन्तान नही थी। किंतु बड़ा जप, अनुष्ठान करने के पश्चात उन्हे सन्तान की प्राप्ती हुई। उनके यहा एक कन्या जन्म लेकर आई। राजा ने पण्डित जी से पूछा मेरी बेटी का भाग्य कैसा होगा। कृपया करके बताइए। पाण्डित जी ने विचार किया इसबार इस राजा को कुछ ऐसा बताए जिससे इससे दक्षिणा के अलावा भी अधिक धन प्राप्त कर सकू। पाण्डित जी बोले महाराज आपकी बेटी की कुण्डली बता रही है कि ये यदि इस राज्य मे रहेगी तो आपका पूर्ण राज्य नष्ट हो जाएगा। अबतो राजा को बड़ी चिंता हो गई। उसने ब्राह्मण से पूछा महाराज कोई उपाय बताए। तब पाण्डित जी ने कहा- इस बेटी के विवाह मे आप जितना धन खर्च करेगे उतना इस बेटी के साथ रखकर इसको एक बक्से मे बन्द करके नदी मे प्रवाहित कर दो। इधर पाण्डित जी अपने घर गए और अपने बच्चो से जाकर बता आए कि आज नदी मे एक बक्सा बहता हुआ आयेगा। उसको निकालकर चुपचाप लाकर मेरे कमरे मे रख देना। मै आकर उस बक्से को खोलूगा। पाण्डित जी राजा के पास गए। बक्से मे कन्या को बन्द करके खूब सारा धन रखकर उसे नदी मे

147

उस कन्या को प्रवाहित कर दिया।
⇒ इधर पण्डित जी के पुत्र उस बक्से के आने का इन्तजार कर रहे थे।
⇒ बीच मार्ग में एक घटना घटित हो गई। नदी मे एक राजकुमार स्नान कर रहा था और उसके पास एक सिंह का बच्चा था। राजकुमार ने देखा एक बक्सा बहता हुआ नदी में आ रहा है। उन्होंने तुरन्त उस बक्से को नदी से बाहर निकाला। खोलकर देखा उसमे हीरा, स्वर्ण के साथ एक कन्या लेटी है। राजकुमार ने धन, स्वर्ण तो गरीबो को दे दिया। और उस कन्या को अपने पास रख लिया। राजकुमार ने विचार किया इस बक्से को आगे खाली क्यों जाने दूं। उन्होंने उस बक्से मे सिंह के बच्चे को बन्द कर दिया। महाराज बक्सा बहता - बहता आगे आया। पण्डित जी के बच्चे इन्तजार कर रहे थे। उन्होंने तुरन्त उस बक्से को बाहर निकालकर पिता जी के कक्ष मे ले जाकर रख दिया। पण्डित जी आप विचार कर रहे थे आज तो अच्छी लाटरी लग गई। अब आज के बाद राजा के दरबार मे नौकरी नहीं करनी पड़ेगी।
पण्डित जी ने हर्षित होकर वह बक्सा खोला किन्तु जैसे ही उन्होंने बक्सा खोला उसमे तो सिंह का बच्चा बन्द था। बाहर निकलकर आया और अपने नुकीले नाखूनो से पण्डित जी के सम्पूर्ण शरीर को चीर दिया। पण्डित जी की

140

मृत्यु हो गई।

⇒ बन्धुओ यह दृष्टान्त हमे यह शिक्षा देता है कि पण्डित जी गलत नियत से धन अर्जन करने की योजना बनाई उनका नाश हो गया। यदि हम और आप भी अनीति या नम्बर दो से धन अर्जन करेगे तो उसमे कलि का वास है। वह आपको नष्ट कर देगा।

⇒ आपके पास जो धन आता है। न जाने वो कैसे कमाया गया हो।

⇒ इसलिए धन की शुद्धि कैसे करे?

पूज्यपाद गोस्वामी जी कहते -

चौ० तुम्हहि निवेदित भोजन करही।
प्रभु प्रसाद पट भूषन धरही॥

अर्थ भोजन भगवान को अर्पित कर के पाए तो वह प्रसाद बन जाता है। इसी प्रकार जिन वस्तुओ का हम उपभोग करते है वह सभी वस्तुए पहले ठाकुर जी को अर्पण करनी चाहिए। ताकि उनका शुद्धिकरण हो जाए।

सूत जी शौनकादि मुनियो से कहते है -

⇒ राजन परीक्षित धनुष लेकर वन मे शिकार खेलने के लिए गए। हरिणो के पीछे

दौड़ते, दौड़ते थक गए। उन्हे बड़े जोर की भूख लगी, साथ ही प्यास भी लगने लगी। उन्हे पास मे कोई जलाशय नही मिला। वे समीप मे बने एक ऋषि के आश्रम मे चले गए। उन्होने अन्दर जाकर देखा। एक ऋषि नेत्र बन्द करके बैठे है। परीक्षित जी को लगा कि हमे आता देखकर भी इन ऋषि ने अपने नेत्र बन्द कर लिए। राजन को लगा न मेरा किसी ने सम्मान किया और न ही आसन पर बैठने के लिए कहा। राजन परीक्षित को क्रोध आ गया।

⇒ महाराज परीक्षित ने क्रोधवश धनुष की नोक से एक मरा साप उठाकर ऋषि के गले मे डाल दिया और अपनी राजधानी चले आए।

⇒ बन्धुओ परीक्षित ने जिन ऋषि के गले मे मरा सर्प डाला उनका नाम शमीक मुनि था। इनके बेटे का नाम शृंगी ऋषि था।

⇒ शमीक मुनि का पुत्र शृंगी समीप मे ही बालको के साथ खेल रहा था। जब उसे यह ज्ञात हुआ कि राजा ने मेरे पिता जी के साथ दुर्व्यवहार किया है। उसकी आँखे क्रोध से लाल हो गई।

⇒ शृंगी ऋषि ने कौशिकी नदी के जल मे आचमन किया।

श्लोक :- इत्युक्त्वा रोषताम्राक्षो वयस्यानृषिबालकः

कौशिक्याप उपस्पृश्य वाग्वज्रं विससर्ज ह।

Date / /
Page No 150

इसके उपरान्त मे कौशिकी नदी के जलको हाथ मे लेकर अपने वाणी-रुपी वज्र का प्रयोग कर दिया।

⇒ श्रृंगी ऋषि ने परीक्षित को श्राप दे दिया।

श्लोक — इति लङ्घितमर्यादं तक्षकः सप्तमेऽहनि॥

अर्थ — परीक्षित्त ने मेरे पिता का अपमान किया है। इसलिए मै श्राप देता हूं कि आज से सातवे दिन उसे तक्षक सर्प डस लेगा। और उनकी मृत्यु हो जायेगी।

⇒ इसके उपरान्त श्रृंगी ऋषि अपने पिता के आश्रम मे आए और पिता के गले मे मरा हुआ सर्प देखकर दहाड़ मारकर रोने लगे।

⇒ रुदन की ध्वनि सुनकर शमीक ऋषि के नेत्र खुल गए।

⇒ बन्धुओ विचार करने की बात है। परीक्षित ने शमीक मुनि के गले मे मरा हुआ सर्प डाला तो शमीक मुनि के नेत्र नहीं खुले किंतु श्रृंगी ऋषि ने रोना प्रारम्भ किया तो नेत्र खुल गए।

⇒ बन्धुओ इसका यही अर्थ है कि जो भगवान चाहते है वही होता है। भगवान का रचा ही यह खेल है। यदि शमीक मुनि के नेत्र पहले मे ही खुल जाते तो परीक्षित को श्राप कैसे मिलता। परीक्षित शुकदेव

151

जी के मुख से कथा का रसपान कैसे करते। अगर परीक्षित जी कथा का रसास्वादन नही करते तो हम सबको भागवत कथा श्रवण का लाभ कैसे मिलता।

⇒ बन्धुओ श्रृंगी ऋषि ने रोते-2 सारी बात अपने पिता को बताई। जैसे ही शमीक ऋषि ने श्रवण किया कि श्रृंगी ने परीक्षित को श्राप दे दिया है तो वह श्रृंगी पर बहुत क्रोधित हुए।

⇒ शमीक मुनि कहते तूने थोड़ी सी गलती के लिए राजा को इतना बड़ा दण्ड दे दिया। तेरी बुद्धि अभी कच्ची है। तू जानता भी है परीक्षित कौन है। अरे वो कोई साधारण व्यक्ति नही है। परीक्षित को भगवान ने गर्भ से ही दर्शन दिए थे तूने ऐसे व्यक्ति को श्राप दे दिया।

⇒ सूत जी शौनकादि मुनियो से कहते-

⇒ परीक्षित जब अपनी राजधानी पहुचे तो उन्हे उस निन्दनीय कर्म के लिए बड़ा बड़ा पश्चाताप हुआ। वे अत्यन्त उदास हो गए।

⇒ परीक्षित जी विचार करने लगे -

श्लोक- अद्यैव राज्यं बलमृद्ध कोशं
प्रकोपित ब्रह्म कुलानलो मे।
दहत्व भद्रस्य पुनर न मेऽभूत
पापीयसी धीर द्विजदेव गोभ्यः॥

Date / /
Page No 152

अर्थ - ब्राह्मणो की क्रोधाग्नि आज ही मेरे राज्य, सेना, और भरे-पूरे खजाने को जलाकर खाक कर दे - जिससे फिर कभी मुझ दुष्ट की ब्राह्मण, देवता और गौओ के प्रति ऐसी पापबुद्धि न हो।

⇒ सूत जी शौनकादि मुनियो से कहते परीक्षित जी इस प्रकार चिन्ता कर ही रहे थे कि उन्हे शमीक मुनि के गौरमुख नाम के शिष्य ने बताया कि आपको श्रृंगी ऋषि ने श्राप दिया है कि आज से सातवे दिन आपकी तक्षक नाग के डसने से मृत्यु हो जायेगी। इसलिए इन सात दिनो मे आप अपनी मुक्ति का जो उपाय कर सकते है वो करे।

⇒ बन्धुओ परीक्षित जी को तो अपनी मुक्ती के लिए सात दिन मिले। हमारे पास तो आधा घण्टा भी नही होता। हमे तो यह ज्ञात नही कि कब हमारी मृत्यु होने वाली है, हम अभी अच्छी प्रकार से बैठे है, किन्तु हमको यह ज्ञात नही कि थोड़ी देर मे हमारी मृत्यु हो जायेगी परीक्षित जी को ज्ञात हो गया गया कि आज से सातवे दिन हमारी मृत्यु होगी तो वो तो अपनी मुक्ति का उपाय कर लेगे किन्तु हमको यह ज्ञात नही कि कब हमारी मृत्यु होगी। इसलिए भइया हमे तो पहले से ही अपनी मुक्ति के लिए साधन करना चाहिए।

Date / /
Page No. 153

⇒ परीक्षित जी ने जैसे ही श्राप की बात सुनी उन्होंने तुरन्त अपने पुत्र जनमेजय को राज सिंहासन पर बैठाकर अभिषेक कर दिया।

⇒ अपने सभी वस्त्र आभूषण त्याग कर परीक्षित जी साधारण वस्त्र पहन कर अपने घर का त्याग करके निकल पड़े।

ः भजन ः

श्री कृष्ण कथा रस पीने को
हम राज पाठ सब छोड़ चले

(1) रानियो न अब तुम सब रोना-2
जनमेजय मत धीरज खोना-2

अपनी मस्ती मे जीने को
हम राज पाठ सब छोड़ चले-2

श्री कृष्ण कथा — — — — — —

(2) घरवालो अब मुझे रोको न-2
श्री कृष्ण भजन मे टोको न

हम दर्द छिपाए सीने मे
सब राज पाठ को छोड़ चले

श्री कृष्ण कथा — — — — —

Date / /
Page No 154

→ बन्धुओ जब परीक्षित जी अपने घर से चले तो गंगा तट हरिद्वार की ओर जा रहे थे किन्तु गोविन्द की तो कुछ और ही इच्छा थी उन्होंने परीक्षित जी को हरिद्वार से पहले ही शुकताल की ओर मोड़ दिया।

⇒ बन्धुओ यह शुकताल उत्तरप्रदेश के मुजफ्फर नगर से प्रायः तीस किलोमीटर दूर सड़क मार्ग पर गंगा के तट पर अवास्थित तीर्थ है। जहां पहली बार शुकदेव जी ने परीक्षित को भागवत कथा का श्रवण पान कराया।

⇒ गंगा तट पर आकर श्रीकृष्ण की सेवा को सर्वोपरि मानकर आमरण अनशनव्रत लेकर वे गंगातट पर बैठ गए। और श्री कृष्ण के चरणों का ध्यान करने लगे।

⇒ जब ऋषि मुनियो को पता लगा कि महाराज परीक्षित को श्राप लगा है। उनकी मृत्यु हो जायेगी। तो बड़े-2 ऋषि मुनि वहां पधारे।

श्लोक- मेधातिथिर्देवल आर्ष्टिषेणो
भारद्वाजो गौतमः पिप्पलादः।
मैत्रेय और्वः कवषः कुम्भयोनिर्
द्वैपायनो भगवान्नारदश्च ॥

अर्थ- मेधातिथि, देवल, आर्ष्टिषेण, भारद्वाज गौतम, पिप्पलाद, मैत्रेय, और्व, कवष

155

अगस्त्य, भगवान् व्यास, नारद तथा इनके अतिरिक्त और भी कई श्रेष्ठ ऋषि मुनि पधारे।

⇒ महाराज परीक्षित ने सबकी वन्दना की सत्कार किया।

⇒ और सभी से एक ही प्रश्न किया म्रियमाण (जल्दी मरने वाले) जिसकी मृत्यु निकट हो उसको क्या करना चाहिए।

⇒ सूत जी शौनकादि मुनियों से कहते परीक्षित जी इस प्रकार कह ही रहे थे, तभी वहां श्री शुकदेव जी का आगमन हो गया।

श्लोक- तत्राभवद्भगवान् व्यासपुत्रो
यदृच्छया गामटमानोऽनपेक्षः।
अलक्ष्यलिङ्गो निजलाभतुष्टो
वृतश्च बालैरवधूतवेषः ॥

अर्थ- जिस समय परीक्षित जी के प्रश्न का उत्तर कोई नहीं दे पा रहा था। तभी पृथ्वी पर विचरण करते हुए (यदृच्छया) यत्-इच्छया - अर्थात स्वेच्छा से (अपनी इच्छा से) किसी की कोई अपेक्षा न रखने वाले व्यासनन्दन भगवान श्री शुकदेव जी महाराज वहां प्रकट हो गए

= बन्धुओ जरा विचार करिए कि जितने भी ऋषि मुनि गंगा के तट पर पधारे वे